04 - खुद को दोहराने को तैयार इतिहास

05 - जमानत नियम और जेल अपवाद का आदर्श उदाहरण

A Daily News Magazine

इंदौर

सोमवार, 19 अगस्त, 2024

06 - 'हत्यारों को फांसी दो' के नारों के साथ डॉक्टरों ने निकाली विशाल कैंडल...

07- देवदूत जैसे उदार घुम्मकड़

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 9 अंक 295, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्याः MP/IDC/1529/2016-2018)

पहली बात

'एडवांटेज' भाजपा : चार में से सिर्फ दो राज्यों में चुनाव के मायने

उमेश त्रिवेदी
संपादक

9893032101

भारत में सभी प्रमुख पार्टियों का गौरतलब पहलू यह है कि विरोधाभास और अतिरंजनाएं या अतिरेक उनके सियासी चरित्र और चाल-चलन का स्थायी भाव बन चुके हैं। सियासी पार्टियों पर सत्ता-भाव इस कदर हावी है कि सत्ता की खातिर वो टुकड़ों-टुकड़ों में सियासत करते हैं। इस वजह से देश टुकड़ों में बंटता महसूस होता है। विडम्बना यह है कि विरोधाभासों और अतिरंजनाओं में लिपटी अपनी कारगुजारियों के लिए वो खुद को जनता के प्रति जवाबदेह नहीं भी नहीं मानते हैं। विरोधाभासों और अतिरंजनाओं के ये करतब आम लोगों को आए दिन देखने को मिलते रहते हैं।

ताजा उदाहरण मुख्य चुनाव आयुक्त का वह फैसला है जिसके अंतर्गत इस साल के अंत में होने वाले महाराष्ट्र, झारखंड, हरियाणा और जम्मू-कश्मीर के विधानसभा के चुनाव दो चरणों में सम्पन्न होंगे। आयोग ने चारों विधानसभा चुनावों के कार्यक्रम को दो हिस्सों में बांटकर लोगों को चौंका दिया है। वायनाड लोकसभा के साथ ही देश के विभिन्न हिस्सों में होने 46 विधानसभा उपचुनावों को भी आयोग ने हाशिए पर डाल दिया है। इसके पहले सभी अवसरों पर विधानसभा चुनाव एक साथ होते रहने की परम्परा रही है।

पर्यवेक्षकों ने चुनाव आयोग के इस फैसले को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के स्वतंत्रता दिवस के उद्बोधन से जोड़ कर सवाल पूछना शुरु कर दिये हैं। चुनाव कार्यक्रम की घोषणा से एक दिन पहले याने स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले से राष्ट्र को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने देश की जनता से 'वन नेशन-वन इलेक्शन' के सिद्धांत को लागू करने का आव्हान किया था।

राजनीतिक पर्यवेक्षकों सहित विपक्ष ने यह सवाल खड़ा करना शुरू कर दिया है कि 'एक देश, एक चुनाव' की बात करने वाली केन्द्र-सरकार का चुनाव आयोग चार राज्यों के एक छोटे से चुनाव को दो हिस्सों में क्यों बांट दिया है? आयोग का फैसला सरकार की कथनी और करनी मे फर्क को रेखांकित करता है। दो हिस्सों में चुनाव करवाने के फैसलों को भाजपा की रणनीतिक पहल निरूपित करते हुए आयोग के फैसले पर सबसे पहले एनसीपी (शरद) के प्रमुख शरद पवार ने प्रधानमंत्री मोदी पर हमला किया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की 'वन-नेशन,वन-इलेक्शन' की बहु-प्रचारित राजनीतिक अवधारणा पर कटाक्ष करते हुए शरद पवार ने सवाल किया है कि इस परिप्रेक्ष्य में केन्द्र सरकार पूरे देश मे एक साथ कैसे चुनाव करा पाएगी? शरद पवार ने कहा है कि लगता है कि चुनाव आयोग के पास चुनाव-मशीनरी की कमी है, जो वो एक साथ चुनाव करवाने में खुद को असमर्थ महसूस कर रहे हैं। गौरतलब पहलू यह है कि चार में से तीन राज्यों में विधानसभा सीटों का आंकड़ा सौ को भी पार नहीं करता है। सिर्फ महाराष्ट्र ही एक मात्र ऐसा राज्य हैं, जहां विधानसभा सीटों की संख्या 288 है। इसके अलावा हरियाणा और जम्मू-कश्मीर में 90-90 विधानसभा सीटें हैं। झारखंड में विधान सभा सीटों की संख्या मात्र 81 है।

सियासी गलियारों में यह कानाफूसी भी होने लगी है कि अलग-अलग चुनाव कार्यक्रम घोषित करके चुनाव आयोग ने भाजपा की रणनीतिक पहल को अंजाम दिया है। लोकसभा चुनाव के बाद बढ़ते प्रतिरोध और प्रतिवाद के चलते भाजपा शायद हर राज्य के लिए अलग अलग रणनीति के साथ मैदान में उतरने की तैयारी में है। मौजूदा राजनीतिक परिस्थितियों के मद्देनजर महाराष्ट्र और झारखंड में भी अलग-अलग चुनाव कराने की संभावनाओं से इंकार नही किया जा सकता है। वजह यह है कि मोदी-सरकार चारों राज्यों में हर हाल में सरकार बनाना चाहती है।

अलग-अलग तिथियों पर चुनाव होने की परिस्थितियों में केन्द्र सरकार और भाजपा अपने संसाधन और तंत्र का भरपूर रणनीतिक उपयोग एक ही राज्य में करने की सुविधा मिल सकेगी। लेकिन अलग-अलग चुनाव का लाभ सिर्फ भाजपा को मिलेगा, यह कहना भी मुनासिब नहीं है, क्योंकि इस कार्यक्रम की बदौलत जो लाभ भाजपा को मिलने वाले हैं, वो कांग्रेस सहित अन्य दलों को भी मिल सकते हैं। फर्क इतना है कि भाजपा केन्द्र में भी सरकार में है और उसका संगठनात्मक ढांचा सबसे बेहतर और सुगठित है। इसलिए मैदानी 'एडवांटेज' उसके खाते में ज्यादा महसूस होता है।

गौरतलब है कि महाराष्ट्र, झारखंड, हरियाणा और जम्मू-कश्मीर की चारों विधानसभाओं का कार्यकाल अक्टुबर-नवम्बर,2024 में खत्म होने वाला है। आयोग ने अभी सिर्फ हरियाणा और जम्मू-कश्मीर के चुनावों का कार्यक्रम घोषित किया है। महाराष्ट्र और झारखंड के चुनाव टाल दिए हैं। हरियाणा और जम्मू-कश्मीर के नतीजे 4 अक्टूबर को आ जाएंगे।

हरियाणा सरकार का कार्यकाल 4 नवम्बर को पूरा हो रहा है। महाराष्ट्र का कार्यकाल 26 नवम्बर तक है। झारखंड विधानसभा का 5 जनवरी 2025 तक अस्तित्व में रह सकती है। सन् 2019 में हरियाणा और महाराष्ट्र के चुनाव एक साथ कराए गए थे। आयोग के वर्तमान फैसले में ये संकेत भी अंतर्निहित है कि महाराष्ट्र और झारखंड के विधानसभा चुनाव भी अलग-अलग कराए जा सकते हैं। महाराष्ट्र और झारखंड की विधान सभाओं की अवधि में काफी फर्क और गुंजाइश की चुनाव अलग-अलग हो सकें।

महाराष्ट्र के चुनाव अलग करने के पीछे आयोग की दलीलें दिलचस्प हैं। उसका तर्क है कि महाराष्ट्र में फिलवक्त मानसून की चपेट में है। उसके बाद त्यौहारी सीजन भी शुरू होने वाला है। सुरक्षा के मद्देनजर महाराष्ट्र को इस दौर में शरीक नहीं किया गया है। त्यौहारों का तर्क सहजता से गले उतरने वाला नहीं है। हरियाणा और जम्मू-कश्मीर के चुनाव-अभियान के दरम्यान याने सितम्बर में 15 प्रमुख व्रत और त्यौहार आने वाले हैं। इनमें गणेश चतुर्थी, अनंत चतुर्दशी, जन्माष्टमी, हरतालिका तीज और अमावस्या जैसे त्यौहार शरीक है। दस दिनों तक चलने वाला गणेशोत्सव भी इस दरम्यान आएगा। अक्टूबर-नवम्बर में नवरात्रि, दशहरा, धनतेरस, दीपावली, गोवर्धन पूजा, भाई दूज जैसे अनेक त्यौहारों का ब्यौरा पंचांगों में छपा है। पूरे हिन्दुस्तान में हिंदू त्यौहारों का पंचांग एक है। त्यौहार की पृष्ठभूमि में चुनाव टालने के तर्क ने आयोग की स्थिति को हास्यास्पद बन दिया है।

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

जिस रास्ते से हम जाते हैं
जरूरी नहीं कि वैसा ही मिले वह
वापसी के वक्त भी,
हस दिशा में हम जाते हैं
जरूरी नहीं वापसी भी हो
उसी दिशा से,
रास्ते सपाट हैं
या ऊबड़ खाबड़
यह भौतिक प्रश्न नहीं होता
यह तय होता है
उन आकांक्षाओं के भार से
अज्ञात में प्रवेश के भय से
जो लदे होते हैं हमारे कांधे पर,
जाते वक्त बहुत भारी होती हैं
इच्छाएं, उम्मीदें और भय
और वापसी के वक्त
तिरोहित हो जाती हैं ये सब,
किसी जगह से
किसी मुकाम से
किसी सुरम्य पर्वत से
किसी सपने से
वापसी भी बड़ा लक्ष्य होती है,
जीवन को चक्र इसीलिए तो कहते हैं
इसमें होता है प्रस्थान
वापसी के लिए
चक्र पूरा होता है
जाकर वापस आने पर,
वापसी के वक्त बचा रहता है
केवल एक ही भाव
वापसी का।

– सचिन कुमार जैन

रक्षाबंधन की शुभकामनाएं

रक्षाबंधन के पावन पर्व पर 'सुबह सवेरे' कार्यालय में अवकाश रहेगा। अखबार का अगला अंक 21 अगस्त को प्रकाशित होगा। 'सुबह सवेरे' के सभी पाठकों को रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं। सं.

बहना ने भाई की कलाई पे प्यार बांधा है...

भाई-बहन के प्रेम का त्योहार रक्षाबंधन आज

नई दिल्ली (एजेंसी)। भाई-बहन के अमर प्रेम का त्योहार रक्षाबंधन कल सोमवार को धूमधाम से मनाया जाएगा। कल रक्षाबंधन पर दोपहर 1.30 बजे तक भद्रा रहेगी। इस कारण राखी बांधने का मुहूर्त 1.30 बजे के बाद ही शुरू होगा। रक्षाबंधन पर भद्रा के अलावा मुहूर्त के लिए चौघड़िया, लग्न या किसी भी तरह का विशेष काल नहीं देखा जाता है। भद्रा खत्म होने के बाद से सूर्यास्त तक बहनें कभी भी अपने भाइयों को राखी बांध सकती हैं। वैसे तो रात में रक्षाबंधन करने का विधान किसी ग्रंथ में नहीं है, लेकिन किसी वजह से दिन में रक्षाबंधन नहीं मना पा रहे तो सूर्यास्त के बाद भी राखी बांधने की परंपरा है। पंचाग के अनुसार, भद्रा 18 अगस्त की अर्धरात्रि में 2 बजकर 21 मिनट से लग जाएगी। यह दूसरे दिन यानी 19 तारीख (रक्षाबंधन वाले दिन) को दोपहर 1 बजकर 24 मिनट तक रहेगी। उन्होंने बताया कि इस समयावधि के बाद ही राखी बांधना सर्वश्रेष्ठ रहेगा। सावन पूर्णिमा की शुरुआत 19 अगस्त को 3 बजकर 5 मिनट से होगी और रात 11 बजकर 56 मिनट पर समाप्त होगी। उदया तिथि को मानते हुए रक्षा बंधन का पर्व 19 अगस्त को पूरे देश में धूमधाम से मनाया जाएगा और पूर्णिमा तिथि का व्रत भी इसी दिन होगा। मकर राशि में चंद्रमा होने की वजह से भद्रा पाताल लोक में निवास करेगी, इसलिए रक्षा बंधन वाले दिन भद्रा दोष भी नहीं लगेगा। स्वर्ग लोक और पाताल लोक निवासरत भद्रा विशेष अशुभ नहीं होती है।

सुबह रहेगा भद्रा का साया, दोपहर बाद शुभ मुहूर्त

राखी बांधने का शुभ मुहूर्त

राखी बांधने का शुभ मुहूर्त दोपहर 1 बजकर 30 मिनट से 4 बजकर 3 मिनट तक रहेगा। इसके बाद शाम को प्रदोष काल में 6 बजकर 39 मिनट से 8 बजकर 52 मिनट तक समय भी शुभ है।

कोलकाता डॉक्टर रेप-मर्डर केस

सुप्रीम कोर्ट ने खुद लिया संज्ञान सीजेआई की बेंच करेगी सुनवाई

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने रविवार को कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज में एक महिला जूनियर डॉक्टर के साथ रेप और हत्या के मामले का स्वतः संज्ञान लिया। चीफ जस्टिस डी वाई चंद्रचूड़, जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस मनोज मिश्रा की पीठ

- **चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ की बेंच मंगलवार को करेगी केस की सुनवाई**
- **सीबीआई मामले में मेडिकल कॉलेज के पूर्व प्रिंसिपल से कर रही है पूछताछ**

मंगलवार (20 अगस्त) को इस मामले की सुनवाई करेगी। जानकारी के अनुसार यह केस मंगलवार को सुनवाई के लिए तय मुकदमों की सूची में 66वें स्थान पर है। हालांकि, इसमें विशेष उल्लेख है कि पीठ इस केस को प्राथमिकता के आधार पर सुनेगी। यह घटना के विरोध में भारतीय चिकित्सा संघ इंडियन मेडिकल एसोसिएशन की तरफ से 24 घंटे की राष्ट्रव्यापी हड़ताल के एक दिन बाद हुआ है। केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) जो ट्रेनी डॉक्टर के रेप और हत्या की जांच कर रही है। सीबीआई सरकारी अस्पतालत आरजी कर मेडिकल एंड कॉलेज और अस्पताल के पूर्व प्रिंसिपल डॉ संदीप घोष से लगातार तीसरे दिन पूछताछ कर रहा है। न्यूज एजेंसी ने एक अधिकारी के हवाले से कहा कि केंद्रीय एजेंसी ने उनसे घटना से पहले और बाद में किए गए कॉल की डिटेल देने के लिए भी कहा। रिपोर्ट में आगे कहा गया है कि सीबीआई घोष के कॉल रिकॉर्ड तक पहुंचने के लिए मोबाइल सर्विस प्रोवाइड से संपर्क करने पर विचार कर रही है। कहा जाता है कि घोष से शनिवार को लगभग 13 घंटे तक पूछताछ की गई। प्रिंसिपल से रविवार को भी पूछताछ जारी है। कोलकाता हाई कोर्ट 13 अगस्त को मामले को कोलकाता पुलिस से सीबीआई को ट्रांसफर किया गया था। अब तक यह पाया गया है कि डॉक्टर के साथ रेप और हत्या के आरोपी संजय रॉय की पत्नी ने खलीफाट पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराई थी।

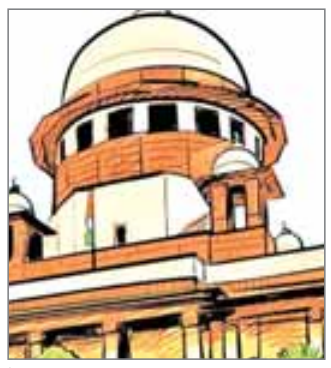

राज्यों को निर्देश,हर दो घंटे में भेजें स्थिति पर रिपोर्ट

कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज में एक महिला डॉक्टर के साथ रेप और हत्या के खिलाफ डॉक्टरों का विरोध प्रदर्शन जारी है। विरोध-प्रदर्शनों के मद्देनजर गृह मंत्रालय ने सभी राज्यों के पुलिस बलों को 'हर दो घंटे' में स्थिति रिपोर्ट देने का निर्देश दिया है। राज्य पुलिस बलों को भेजे गए संदेश में गृह मंत्रालय ने कहा कि प्रदर्शनों के मद्देनजर सभी राज्यों की कानून-व्यवस्था की स्थिति पर नजर रखी जानी चाहिए। इसके अलावा केंद्र सरकार ने स्वास्थ्यकर्मियों की सुरक्षा के लिए एक समिति बनाने का भी ऐलान किया है। केंद्र सरकार ने इस घटना को गंभीरता से लेते हुए सभी राज्यों की पुलिस को हर दो घंटे पर हालात की रिपोर्ट भेजने का निर्देश दिया है। पुलिस बलों को शुक्रवार को भेजे गए संदेश में कहा गया, कृपया इस संबंध में कानून और व्यवस्था की स्थिति की हर दो घंटे की रिपोर्ट आज चार बजे से फैक्स/ ईमेल/ व्हाट्सऐप द्वारा गृह मंत्रालय नियंत्रण कक्ष (नई दिल्ली) को भेजी जाए।

डॉक्टर रेप-मर्डर केस में मानव अंग तस्करी का शक

- **सूत्रों का दावा-घटना साधारण लगे इसलिए किया रेप**

नई दिल्ली/कोलकाता (एजेंसी)। कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज में 9 अगस्त को ट्रेनी डॉक्टर से रेप और हत्या के मामले में चौंकाने वाली जानकारी सामने आ रही है। सीबीआई को अब तक की जांच और डॉक्टर के बैचमेट्स के बयानों से पता चला है कि मानव अंगों के अवैध कारोबार से पर्दा उठाने की कोशिशें रोकने के लिए ट्रेनी डॉक्टर को रास्ते से हटाया गया। एजेंसी ने शनिवार को 13 लोगों से पूछताछ की। दो दिन में वह 19 लोगों से पूछताछ कर चुकी है। इसमें आधे से अधिक लोगों ने अस्पताल से मानव अंगों की तस्करी के रैकेट को लेकर जानकारी दी है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव उज्जैन के अवंतिका महाविद्यालय में लाड़ली बहना रक्षाबंधन कार्यक्रम में हुए शामिल

बहनों के आशीर्वाद से प्रदेश में विकास के रचेंगे नए-नए कीर्तिमान : डॉ. यादव

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि बहनों के आशीर्वाद से प्रदेश में विकास के नए-नए कीर्तिमान रचेंगे। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत विश्व की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर तेजी से अग्रसर है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने बहनों को मान-सम्मान दिलाने का काम किया हैं। पंचायत एवं स्थानीय निकायों के निर्वाचन में महिलाओं के लिए 50 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान जारी रहेगा, जिससे बहनों का सशक्त नेतृत्व प्रदेश को मिलता रहेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि उज्जैन के विकास में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव उज्जैन के ग्राम लेकोडा में लाडली बहना रक्षाबंधन कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में बहनों ने मुख्यमंत्री डॉ. यादव की कलाई पर रक्षा सूत्र बांधे। मुख्यमंत्री ने भी बहनों को स्नेहपूर्वक झूला झुलाया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव को बहनों ने विशाल राखी भेंट कर आशीर्वाद दिया। मुख्यमंत्री ने उपस्थित सभी बहनों को उपहार भेंट किये। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कन्या-पूजन और दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि बहनों के जीवन में खुशहाली लाने के लिए मध्यप्रदेश सरकार कृत संकल्पित है। लाड़ली बहनों के खाते में प्रतिमाह डाले जाने वाली 1250 रुपए की राशि के अतिरिक्त रक्षाबंधन के पर्व के अवसर पर शगुन के रूप में 250 रुपए की अलग से राशि अंतरित की गई है। उपस्थित सभी बहनों ने अपने हाथ खड़ा कर अपने खाते में राशि आने की सहमति जताई। लाड़ली बहनों ने कार्यक्रम में 'मेरे प्यारे भैया लिखी' तख्तियां दिखाकर स्नेह जताया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सच्चे अर्थों में हमारे गांव संबंधों के महत्व को प्रदर्शित कर रहे हैं।

बहनों के आशीर्वाद से प्रदेश को देश का नम्बर वन राज्य बनायेंगे : मुख्यमंत्री

बहनों को झुलाया झूला और पुष्प-वर्षा कर किया स्वागत

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि बहनों के अशीर्वाद से मध्यप्रदेश को देश का नम्बर वन राज्य बनायेंगे। रक्षाबंधन पर बहनों का स्नेह ही सबसे बड़ा आशीर्वाद है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव आज उज्जैन के

रघुनन्दन गार्डन पंवासा, सुमन गार्डन एवं शिवांजली गार्डन में आयोजित लाड़ली बहना रक्षाबंधन कार्यक्रम में उपस्थित बहनों से संवाद कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत का परचम पूरी दुनिया में लहरा रहा है। दुनिया भारत देश एवं भारतीय संस्कृति की ओर देख रही है। उन्होंने कहा कि मेरा मानना है कि सरकार का समाज के साथ सरोकार होना चाहिये। सरकार को समाज के साथ कदम से कदम मिलाकर चलना चाहिये।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 36.3 °c | न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ सोमवार, 19 अगस्त 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

बुलंदशहर में भयानक सड़क हादसा, 10 की मौत

रक्षाबंधन में घर जा रहे लोगों की गाड़ी बस से टकराकर पलटी

बुलंदशहर (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर में रविवार को बड़ी सड़क दुर्घटना हो गई, जिसमें 10 लोगों की मौत हुई है। यहां बुलंदशहर के सलेमपुर थाना क्षेत्र में यात्रियों से भरी बस और मैक्स गाड़ी की आमने-सामने की टक्कर में यह हादसा हुआ है। बताया जा रहा है कि गाजियाबाद की कंपनी में कार्यरत लोग रक्षाबंधन पर्व पर घर की तरफ जा रहे थे, जब गाड़ी का हादसा हो गया। टक्कर इतनी जोरदार थी कि पिकअप उछलकर बगल में खेत में जा गिरी। हादसे की सूचना पर डीएम और एसएसपी सहित प्रशासनिक अधिकारी मौके पर पहुंच गए। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार गाजियाबाद की एक कंपनी से मैक्स वाहन सभी लोग अपने घर अलीगढ़ रक्षाबंधन का त्यौहार मनाने के लिए जा रहे थे। इससे पहले कि वे लोग घर पहुंचते, उससे पहले ही बुलंदशहर के सलेमपुर थाना क्षेत्र में रोडवेज बस और मैक्स वाहन की भिड़ंत हो गई। इस हादसे में 9 लोगों की मौत बताई जा रही है। मृतकों की संख्या और भी बढ़ सकती है। इस मामले में जिलाधिकारी चंद्र प्रकाश सिंह ने 10 लोगों के मौत की पुष्टि की है। पुलिस ने ग्रामीणों की मदद से घायलों को जिला अस्पताल के लिए रवाना किया है। मृतक लोगों के शवों को कब्जे में लेकर पुलिस ने पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है। दर्दनाक हादसे के बाद गुस्साए लोगों ने रास्ते में ही चक्काजाम कर दिया है। जानकारी के अनुसार पिकअप वाहन में करीब 20-22 यात्री सवार थे। वहीं शिकारपुर की तरफ से एक प्राइवेट बस तेज रफ्तार से बुलंदशहर की तरफ आ रही थी। मेरठ-बदायूं हाइवे पर सलेमपुर थाना क्षेत्र में गांव सलेमपुर के सामने एक वाहन को ओवरटेक करने के दौरान प्राइवेट बस की टक्कर पिकअप वाहन से हो गई। पिकअप अनियंत्रित होकर खेत में पलट गया। हादसे में सवार सभी लोग घायल हो गए। हादसे की सूचना पर पुलिस ऐक्टिव हुई।

कुआंरा बताकर तलाकशुदा से रेप किया

दिल्ली ले जाकर कहा मैं पहले से शादीशुदा, चार बच्चे भी; हिंदूवादी ने पकड़कर पुलिस को सौंपा

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के बाणगंगा में तलाक शुदा महिला से रेप और धोखा देने का केस दर्ज किया है। आरोपी ने महिला से खुद को कुंवारा बताकर दोस्ती की और फिर इंदौर आकर रेप किया। शादी का झांसा देकर एक सप्ताह पहले आरोपी अपने साथ दिल्ली ले गया और यहां बताया कि वह पहले से शादीशुदा है। उसके चार बच्चे हैं। वह शादी नहीं कर पाएगा। पुलिस ने इस मामले में आरोपी पर केस दर्ज किया है।

बाणगंगा पुलिस के मुताबिक पीड़िता की शिकायत पर मोहम्मद अकील पुत्र शाकिर मास्टर निवासी नोएडा दिल्ली के खिलाफ रेप का का मामला दर्ज किया है। आरोपी मूल रूप से हजरत नगर नोएडा का रहने वाला है।

पीड़िता ने पुलिस को बताया कि उसकी पहली शादी 2011 में हुई। उसका 12 साल का एक बेटा है। 2016 में पति से तलाक हो गया। करीब 2 साल पहले इंस्टाग्राम पर अकील से दोस्ती हुई। पीड़िता 2 माह पहले केदारनाथ गई तब लौटते समय वह दिल्ली में अकील से मिली।

पीड़िता ने कहा कि 11 अगस्त को अकील फिर इंदौर आया और उसने जबरदस्ती संबंध बनाए। अकील ने उसे दिल्ली जाकर शादी करने की बात कही। 13 अगस्त को दोनों दिल्ली चले गए। वहां जाकर भी अकील ने उससे संबंध बनाए। फिर कहा कि वह पहले से शादीशुदा है। पत्नी नुसरत उत्तर प्रदेश में रहती है। यहां उसके चार बच्चे भी है।

पीड़िता ने इंदौर आकर हिंदूवादियों को घटनाक्रम बताया। उन्होंने अकील को पकड़कर पुलिस के सुपुर्द कर दिया। पुलिस ने मामले में गंभीर धाराओं में केस दर्ज किया है।

इंदौर में दिन और रात का तापमान बढ़ा

राखी पर भी मौसम रहेगा साफ, अगस्त में अब तक सिर्फ 3 इंच ही बारिश

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में पिछले 24 घंटे से मौसम तरह साफ है। मौसम खुला होने के साथ दिन और रात का तापमान भी बढ़ा है और अभी औसत से ज्यादा है। अगस्त का आधा माह बीत चुका है और सिर्फ तीन इंच ही बारिश हुई है। सीजन की बारिश 17 इंच से ज्यादा हुई है। रविवार सुबह से भी मौसम खुला हुआ था। मौसम वैज्ञानिकों ने आज और कल भी मौसम साफ रहने का अनुमान जताया है। शुक्रवार को दिन का तापमान 29.4 (+1) और रात का तापमान 23.6 (+1) डिग्री सेल्सियस था। इस दौरान 24 घंटों में 10.2 मिमी बारिश रिकॉर्ड की गई थी। शनिवार को दिन का तापमान 2 डिग्री बढ़कर 31.6 (+3) डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया। इसी तरह रात के तापमान में भी 1 डिग्री की बढोतरी हुई है। तापमान 23.6 (+2) डिग्री सेल्सियस रहा। इस दौरान बारिश नहीं हुई।अभी दिन का तापमान औसत से 3 डिग्री और रात का तापमान 2 डिग्री ज्यादा बना हुआ है।

नए भाजपा अध्यक्ष के चुनाव की तैयारी शुरू

10 करोड़ सदस्यों को जोड़ेगी सत्ताधारी पार्टी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने अपने सदस्यता अभियान के तहत कम से कम 10 करोड़ नए सदस्य बनाने का लक्ष्य रखा है। यह अभियान 1 सितंबर से चुनावी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को छोड़कर सभी राज्यों में शुरू होने वाला है।

शनिवार को पार्टी के राष्ट्रीय और राज्य पदाधिकारियों की बैठक में यह निर्णय लिया गया। सदस्यता अभियान के तहत नए पार्टी प्रमुख के चुनाव की भी तैयारी की जा रही है। बैठक में पार्टी अध्यक्ष और केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, जम्मू-कश्मीर, हरियाणा, महाराष्ट्र और झारखंड जैसे चुनावी राज्यों को छोड़कर सभी राज्यों के अध्यक्ष और पदाधिकारी और पार्टी के वरिष्ठ नेता शामिल हुए। बैठक के बाद भाजपा प्रवक्ता संबित पात्रा ने बताया कि इस सदस्यता प्रक्रिया की देखरेख राष्ट्रीय महासचिव विनोद तावड़े करेंगे। सांसद और पार्टी प्रवक्ता संबित पात्रा ने कहा कि सदस्यता अभियान 1 सितंबर से 10 नवंबर तक कई चरणों में चलाया जाएगा और इसमें लोग मिस्ड कॉल, पार्टी की वेबसाइट और अन्य डिजिटल प्लेटफॉर्म के जरिए सदस्यता ले सकेंगे। यह अभियान चुनाव वाले राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में चुनाव के बाद चलाया जाएगा और कुल संख्या में और वृद्धि होने की उम्मीद है। पात्रा ने कहा कि 2014 में करीब 11 करोड़ लोगों ने पार्टी के सदस्य के रूप में पंजीकरण कराया और 2019 में करीब 7 करोड़ लोगों ने कुछ समय के लिए खोले गए सदस्यता अभियान के दौरान पंजीकरण कराया था। उन्होंने कहा,2014 से 2019 के बीच लगभग 18 करोड़ सदस्यों ने सदस्यता ली। सदस्यता अभियान शुरू होना था, लेकिन महामारी के कारण हम आगे नहीं बढ़ सके। भाजपा 18 करोड़ सदस्यों के साथ विश्व में सबसे बड़ी राजनीतिक इकाई होने का दावा करती है। इसकी स्थापना 6 अप्रैल 1980 को हुई थी।

सुनीता विलियम्स के सामने अंतरिक्ष में नई मुसीबत

- **आंखों पर मंडरा रहा खतरा, नासा बना रहा वापसी का प्लान**

वॉशिंगटन (एजेंसी)। करीब ढाई महीने से अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन में फंसी नासा की अंतरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स को स्वास्थ्य संबंधी मुश्किल का सामना करना पड़ रहा है। नासा की एस्ट्रोनॉट यात्री सुनीता विलियम्स अपने सहयोगी कमांडर बैरी विल्मोर के साथ जून की शुरुआत में बोइंग के स्टारलाइनर से अंतरिक्ष में गई थी। दोनों को एक सप्ताह बिताकर धरती पर वापस आना था लेकिन बोइंग के स्टारलाइनर में खराबी के चलते उनकी वापसी में देरी हो रही है। नासा ने हाल ही में बताया था कि वापसी में 2025 तक देरी हो सकती है। इस बीच नई रिपोर्ट बताती है कि सुनीता विलियम्स को आईएसएस पर आंखों में समस्या हो रही है। इस समस्या के पीछे कथित पर माइक्रोग्रैविटी के लंबे समय तक संपर्क में रहने को वजह बताया गया है। सुनीता विलियम्स की समस्या को स्पेसफ्लाइट एसोसिएटेड न्यूरो-ऑकुलर सिंड्रोम के रूप में जाना जाता है।

बीजेपी में शामिल हो सकते हैं पूर्व सीएम चंपाई सोरेन

दिल्ली में डाला डेरा, घर से हटाया जेएमएम का झंडा

रांची (एजेंसी)। झारखंड के पूर्व सीएम चंपाई सोरेन के कई विधायकों के साथ बीजेपी में शामिल होने की अटकलें हैं। उन्होंने सोशल मीडिया साइट एक्स के बायो से जेएमएम लीडर और मंत्री हटा लिया है। पूर्व सीएम के घर सरायकेला-खरसावां जिले के गांव जिलिंगगोड़ा से जेएमएम का झंडा हट गया है। चंपाई के साथ कई विधायकों के बीजेपी में शामिल होने की अटकलें हैं।

इनमें खरसावां से जेएमएम विधायक दशरथ गागराई ने बीजेपी में शामिल होने की खबरों का खंडन किया है। उन्होंने एक शपथ पत्र जारी किया है जिसमें लिखा है कि हम आधी रोटी खा लेंगे मगर गुरु जी (शिबू सोरेन) के मान सम्मान को नीचे नहीं होने देंगे। जेएमएम इस राज्य की माटी की पार्टी है और मुझे गर्व है कि मैं इस पार्टी का सिपाही हूं। इधर, आज दोपहर करीब 1 बजे चंपाई सोरेन दिल्ली पहुंचे। बीजेपी में शामिल होने के सवाल पर उन्होंने कहा कि अभी मैं जहां पर हूं वहीं पर हूं। यहां मेरे बच्चे रहते हैं। मैं उनसे मिलने आता रहता हूं। मैं निजी काम से दिल्ली आया हूं।

प्राइवेट मेडिकल कॉलेजों की फीस पर अब लगेगी लगाम

हाईकोर्ट ने दिया ऐसा आदेश,बढ़ जाएगी संस्थानों की टेंशन

लखनऊ (एजेंसी)। इलाहाबाद हाई कोर्ट की लखनऊ बेंच ने गैर सहायता प्राप्त निजी मेडिकल कॉलेजों की फीस को लेकर बड़ा आदेश जारी किया है। लखनऊ बेंच ने प्राइवेट मेडिकल कॉलेजों में चलने वाले विभिन्न मेडिकल कोर्सों के लिए 2024-25 सत्र के लिए फीस निर्धारण का आदेश दिया है। कोर्ट ने शुल्क निर्धारण समिति को आदेश दिया है कि शुल्क निर्धारण की कार्रवाई 21 सितंबर तक पूरी कर ली जाए। इसी के साथ कोर्ट ने चीफ सेक्रेटी को उन अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई का भी आदेश दिया है, जिन्होंने शुल्क निर्धारण समिति का गठन करने में विलंब किया है। इलाहाबाद हाई कोर्ट लखनऊ बेंच के जस्टिस आलोक माथुर की

सिंगल बेंच ने यूपी अन-एडेड मेडिकल एंड अलॉयड साइंसेज कॉलेज वेलफेअर असोसिएशन और अन्य की ओर से दाखिल याचिका को मंजूर करते हुए यह आदेश दिया। पीठ ने अपने आदेश में स्पष्ट किया कि उसका फैसला कोर्ट आए गैर सहायता प्राप्त निजी मेडिकल कॉलेजों पर ही लागू होगा। कोर्ट ने अपने इस निर्णय में राज्य सरकार के 11 जुलाई 2024 के उस शासनादेश को भी निरस्त कर दिया जिसके तहत इन कॉलेजों के लिए सत्र 2023-24 में निर्धारित शुल्क 2024-25 के लिए बढ़ा दिया गया था। याचियों की ओर से दलील थी कि राज्य सरकार को संबंधित प्रावधान के तहत शुल्क निर्धारण का अधिकार नहीं है। आदेश में कहा गया कि शुल्क निर्धारण समिति ही विचार के उपरांत शुल्क का निर्धारण कर सकती है। सरकार की ओर से याचिका का विरोध किया गया। कोर्ट ने दोनों पक्षों की बहस सुनने के उपरांत पारित अपने निर्णय में शुल्क निर्धारण समिति को याची संस्थानों की सत्र 2024-25 के लिए शुल्क निर्धारण प्रक्रिया शुरू करने का आदेश दिया। साथ ही संस्थानों को एक सप्ताह में शुल्क वृद्धि के संबंध में आवश्यक दस्तावेज समिति के समक्ष पेश करने को कहा है। कोर्ट ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट के आदेश के अनुपालन में छह माह पूर्व ही शुल्क का निर्धारण हो जाना चाहिए था, बावजूद इसके निर्धारण समिति का गठन ही नहीं किया गया।

जम्मू-कश्मीर चुनाव

डल झील में बनाए जाएंगे तैरते हुए मतदान केंद्र

- **एलओसी को लेकर भी इलेक्शन कमीशन की खास तैयारी**

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव में कोई मतदाता नहीं छूट जाए, चुनाव आयोग यह सुनिश्चित करना चाहता है। इसके लिए ईसी ने डल झील में 3 तैरते मतदान केंद्र बनाने का फैसला लिया है। साथ ही नियंत्रण रेखा पर भी एक मतदान केंद्र स्थापित करेगा जोकि अपने आप में बेहद खास होगा। एलओसी पर बनाया जाने वाला पोलिंग बूथ विशेष रूप से अनुसूचित जनजाति के लिए है, क्योंकि यहां 100 प्रतिशत आबादी अनुसूचित जनजाति की है। जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव के तारीखों की घोषणा हो चुकी है। मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार ने कहा कि इन अनूठे मतदान केंद्रों की स्थापना का उद्देश्य गैर पहुंच वाले इलाकों तक संपर्क सुनिश्चित करना है। डल झील में बने तीन तैरते मतदान केंद्रों तक मतदान दल को नावों और शिकारों से ले जाया जाता है। कुमार ने बताया कि तीनों मतदान केंद्रों में से एक केंद्र खार मोहल्ला आबी करपोरा में केवल 3 मतदाता हैं।

राजस्थान के अस्पतालों को बम से उड़ाने की धमकी

मेल में लिखा-सभी मारे जाएंगे, अफरा-तफरी का माहौल

जयपुर (एजेंसी)। राजस्थान की राजधानी जयपुर के मोनी लेके हॉस्पिटल को बम से उड़ाने की धमकी से अफरा-तफरी का माहौल है। पुलिस मौके पर पहुंची है। मरीज घबराए हुए है। डाग स्क्वायड और बम निरोधक दस्ता मौके पर पहुंचा है। मोनी लेके हॉस्पिटल को धमकी भरा ईमेल भेजा गया है। जयपुर के जवाहर नगर में स्थित निजी हॉस्पिटल के बम से उड़ाने की धमकी से दहशत का माहौल है। बम निरोधक दस्ता और एटीएस की टीम मौके पर पहुंची है। अस्पताल में सुरक्षा एजेंसियां सर्च कर रही है। मेल में लिखा- हॉस्पिटल के बेड के नीचे और बाथरूम के अंदर बम है। मेल में लिखा- अस्पताल में सभी लोग मारे जाएंगे। बता दें इस तरह की धमकियां मिली थी, लेकिन गलत साबित हुई। जयपुर के जवाहर नगर में स्थित निजी हॉस्पिटल के बम से उड़ाने की धमकी से दहशत का माहौल है। बम निरोधक दस्ता और एटीएस की टीम मौके पर पहुंची है। अस्पताल में सुरक्षा एजेंसियां सर्च कर रही है। जयपुर के मोनिलेक और सीके बिरला समेत राजस्थान के 100 से ज्यादा हॉस्पिटल को बम से उड़ाने की धमकी दी गई है।

साबरमती एक्सप्रेस ट्रेन हादसे में आतंकी साजिश

- **आईबी के बाद अब एटीएस भी पहुंची, हादसे की शुरू कर दी जांच**

कानपुर (एजेंसी)। कानपुर में साबरमती एक्सप्रेस (19168) हादसे में आतंकी साजिश एंगल पर जांच शुरू हो गई है। इंटेलीजेंस ब्यूरो (आईबी) के बाद अब एंट्री टेररिस्ट स्कवॉयड (एटीएस) की टीम भी कानपुर पहुंच गई है। रेलवे ने पनकी थाने में हादसे की एफआईआर दर्ज कराई है। इसमें हादसे के पीछे साजिश की आशंका जताई है। रेलवे ने कहा- रेलवे ट्रैक पर पटरी का टुकड़ा रखा गया था। इसकी टक्कर के बाद ट्रेन पटरी से उतरी। रेलवे अफसरों का कहना है कि साजिश का शक इसलिए भी है कि साबरमती एक्सप्रेस से 1 घंटा 20 मिनट पहले इसी ट्रैक से पटना एक्सप्रेस गुजरी थी।

पहाड़ों से लेकर मैदान तक फिर से होगी 'झमाझम'

तीन राज्यों में ऑरेंज अलर्ट,दिल्ली में भी बरसेंगे बादल

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश के कई राज्यों में इन दिनों मॉनसून का प्रकोप जारी है। मैदानी इलाकों से लेकर पहाड़ों तक बारिश जारी है। कई राज्यों में मौसम विभाग ने अलर्ट जारी किया है। आईएमडी ने पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु और केरल में आज भारी बारिश का ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। वहीं दिल्ली-एनसीआर में भी सुबह से बादल सूरज के साथ लुकाछिपी खेल रहे हैं। दिल्ली-एनसीआर के कुछ इलाकों में भी आज हल्की बारिश के आसार हैं। मौसम विभाग के अनुसार, केरल के पथनमथिट्टा, कोट्टायम, इडुक्की और एर्नाकुलम जिलों में 11 सेमी से 20 सेमी तक भारी बारिश हो सकती है। कोट्टायम, इडुक्की और कोझीकोड में रविवार और सोमवार तक ऑरेंज अलर्ट जारी रहेगा। पथनमथिट्टा और एर्नाकुलम के लिए भी ऐसा ही अलर्ट जारी किया गया है। कोट्टायम में मणिमाला नदी के लिए भी ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है। यहां पानी का स्तर खतरे के निशान से ऊपर है। प्रशासन ने नदी के पास रहने वाले लोगों को सुरक्षित स्थानों पर जाने की सलाह दी है। तटीय इलाकों में समुद्र का पानी घुसने की भी आशंका है। लोगों से अपील की गई है कि वे ऊंचाई वाले इलाकों में रात में यात्रा न करें। भारी बारिश के दौरान नदी में न जाएं।

गुलाम नबी आजाद को फिर साथ लाना चाहती है कांग्रेस

- **जम्मू-कश्मीर चुनाव में नेशनल कॉन्फ्रेंस-पीडीपी से गठबंधन की कोशिश, कहा- भाजपा को हराना मकसद**

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव का बिगुल बजते ही कांग्रेस राज्य में ऐक्टिव हो गई है। पार्टी से जुड़े सूत्रों का कहना है कि गांधी परिवार चाहता है कि पूर्व सीएम गुलाम नबी आजाद की पार्टी में वापसी हो। इसके लिए सीनियर नेताओं को उनसे बात करने के लिए कहा गया है। हालांकि, डेमोक्रेटिक प्रोग्रेसिव आजाद पार्टी के प्रवक्ता ने सलमान निजामी ने कहा- पिछले 2 हफ्ते से आजाद की कांग्रेस जॉइन करने की गलत खबरें चल रही है। न उन्होंने गांधी परिवार को और न ही गांधी परिवार ने उनको कॉनटेक्ट किया है। ये कोशिशें पार्टी को तोड़ने के लिए हो रही है। इधर, पार्टी नेशनल कॉन्फ्रेंस और पीडीपी से गठबंधन बनाने की कोशिश में है। पार्टी ने कहा- गठबंधन बनाने का उद्देश्य भाजपा को हराना है। इसके लिए समान विचारधारा वाली पार्टियों को साथ आना होगा।

जम्मू-कश्मीर में अपने दम पर सरकार बनाएगी बीजेपी

भगवा झंडा थामकर बोले जेकेएपी के नेता जुल्फिकार अली

जम्मू (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर अपनी पार्टी (जेकेएपी) के नेता और पूर्व मंत्री चौधरी जुल्फिकार अली रविवार को बीजेपी नेता डॉ जितेंद्र सिंह, जी किशन रेड्डी, तरुण चुघ और रविंदर रैना की मौजूदगी में बीजेपी में शामिल हुए। चौधरी जुल्फिकार अली ने कहा कि मैं भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की योजनाओं से प्रभावित हुआ हूं। इसलिए आज मैं बीजेपी में शामिल हुआ हूं। सरकार की जो योजनाएं हैं, वह अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक पहुंचती हैं और अब तक सभी योजनाएं केवल चुनिंदा व्यक्तियों तक ही पहुंचती थी। आज प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत हर योजना हर घर तक पहुंच रही है। पूर्व मंत्री चौधरी जुल्फिकार अली ने कहा कि अगर आप आज गांवों में जाएंगे तो पाएंगे कि जहां कच्चे घर हुआ करते थे, वहां अब पक्के घर हैं। इन सभी योजनाओं ने हमें प्रभावित किया है और हमें

स्लोगन की राजनीति से हटकर वास्तविक राजनीति की ओर बढ़ने की जरूरत है। मुझे उम्मीद है कि भारतीय जनता पार्टी अपने बल पर जम्मू-कश्मीर में सरकार बनाएगी। दरअसल जम्मू कश्मीर में विधानसभा चुनाव का ऐलान चुनाव आयोग ने कर दिया है।

खुलेआम एसटी, एससी और ओबीसी वर्ग का आरक्षण छीना जा रहा

- **राहुल गांधी बोले-देश में टॉप ब्यूरोक्रेसी में वंचितों का प्रतिनिधित्व नहीं**

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने आरक्षण को लेकर एक बार फिर से मोदी सरकार पर निशाना साधा है। राहुल गांधी ने कहा कि खुलेआम एससी, एसटी और ओबीसी वर्ग का आरक्षण छीना जा रहा है। टॉप ब्यूरोक्रेसी समेत देश के सभी शीर्ष पदों पर वंचितों का प्रतिनिधित्व नहीं है। राहुल गांधी ने रविवार सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में कहा कि नरेंद्र मोदी संघ लोक सेवा आयोग की जगह 'राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ' के जरिए लोकसेवकों की भर्ती कर संविधान पर हमला कर रहे हैं।

इंदौर में थाना प्रभारी और पुलिस स्टाफ को बांधी राखी

टीआई हमारा भाई अभियान के तहत जुलूस के रूप में रक्षाबंधन मनाने पहुंची महिलाएं

इंदौर (एजेंसी)। मिशन शक्ति की थीम नारी स्वावलंबन, नारी सम्मान एवं नारी सुरक्षा के क्षेत्र में संयोगितागंज थाना प्रभारी सतीश पटेल ने अत्यंत प्रेरणास्पद कार्य किया है। इसी के साथ 17 अगस्त को बड़ी संख्या में महिलाएं संयोगितागंज थाने पहुंची और टीआई पटेल के साथ ही पुलिसकर्मियों को राखी बांधी।

उल्लेखनीय है कि नारी सुरक्षा एवं बहनों को पुलिस से जोड़ने के लिए थाना प्रभारी सतीश पटेल ने टीआई हमारे भाई की शुरुआत साल 2016 में की थी। लगातार 8 साल से जिस भी थाने में रहे वहां राखी के दिन बड़ी संख्या में रक्षाबंधन का त्यौहार समाज की बड़ी संख्या में बहनो के साथ मनाते आए है। कल दिनांक 17 अगस्त को वन स्टॉप सेंटर और थाने में भी राखी से पहले यह आयोजन था। टीआई सतीश पटेल बताते हैं कि बेहतर पुलिसिंग के लिए समाज से जुड़ना जरूरी है। समाज से जुड़ने के बाद तमाम

मामलों में पुलिस को मदद मिलती है। पुलिस के प्रति आमजन का रवैया भी सुधरता है। ऐसे में साल 2016 में बहनों को जोड़ने के लिए पुलिस हमारे भाई अभियान की शुरुआत की थी, जिसमें राखी से पहले बहनें पुलिस को राखी बांधती है। वन स्टॉप सेंटर थाना संयोगितागंज क्षेत्र में आता है और मिशन शक्ति के अंतर्गत वन स्टॉप सेंटर में हिंसा पीड़ित महिलाओं को सहायता प्रदान की जाती है, जिसमें एक प्रमुख सहायता पुलिस सहायता है। प्रशासक डॉ. वंचना सिंह परिहार ने बताया कि महिला सुरक्षा की बात आती है तो पुलिस के बिना ये सुरक्षा की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। साथ ही साथ महिला सुरक्षा हेतु समाज को भी जागरूक होना जरूरी होता है इसीलिए थाना संयोगितागंज, वन स्टॉप सेंटर ने संयुक्त रूप से गैर सरकारी संगठन और उच्च शिक्षा विभाग के साथ मिलकर रक्षाबंधन पर्व पर टीआई हमारा भाई (पुलिस हमारी भाई) अभियान के तहत कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें 300 से ज्यादा बहनों ने टीआई एवं पुलिस स्टॉफ को राखी बांधी।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार बहनों का उत्साह देखते बनता था। कार्यक्रम के प्रारंभ में वन स्टॉप सेंटर में प्रशासक और स्टाफ द्वारा टीआई पटेल को राखी बांधी गई। फिर सभी बहनों द्वारा राखी बांधने की रस्म निभाई गई। टीआई सतीश पटेल ने सभी बहनों को थाने आमंत्रित किया और सैकड़ों बहनें हाथ में कुमकुम , राखी, दीपक की थाली लेकर थाना संयोगितागंज तक रैली के रूप में पहुंचीं, जहां पुलिस भाइयों द्वारा बहनों स्वागत किया गया और सभी बहनों के साथ थाने में रखी का पर्व मनाया गया। अनेक सामाजिक संस्थाओं से भी प्रतिनिधि उपस्थित रहे जिन्होंने थाने के समस्त पुलिस स्टॉफ को राखी बांधी। इसके बदले उन्हें भेंट स्वरूप पौधा दिया गया और नारी सुरक्षा के साथ साथ पर्यावरण सुरक्षा का वचन लिया गया। यह अभियान पिछले 8 साल से जारी है। सामुदायिक सहभागिता पुलिस और प्रशासन के लिए सदैव से उपयोगी सिद्ध होता रहा है। इससे समाज में पुलिस के प्रति सकारात्मकता आती है। एनसीसी की कैडेट्स की भी कार्यक्रम में सक्रिय सहभागिता रही। प्रशासक वन स्टॉप सेंटर डॉ. वंचना सिंह परिहार और थाना प्रभारी सतीश पटेल द्वारा सभी को रक्षाबंधन के पवन पर्व की शुभकामनाएं दी गई।

7 साल के बच्चे पर ईंट से हमला

● पुलिस ने आरोपी को पकड़ने के लिए उसके पिता को थाने में बैठाया, फिर केस दर्ज किया

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के एरोड्रम इलाके में नशेड़ी ने 7 साल के बच्चे पर ईट से हमला कर दिया। हमले के बाद वह भाग गया। पीड़ित बच्चे के परिजन उसे लेकर थाने पहुंचे। पुलिस ने आरोपी के पिता को थाने में बैठा लिया। इसके बाद भी आरोपी थाने नहीं आया तो पुलिस ने शनिवार शाम केस दर्ज कर लिया।मामला एरोड्रम इलाके का है। यहां इशांक यादव निवासी महावीर कृपा एवेन्यू कॉलोनी की शिकायत पर सन्नी पुत्र बलराज पर एफआईआर दर्ज की कई है। सन्नी ने साइकिल चला रहे 7 साल के बच्चे ग्रंथ यादव पर ईट से हमला कर दिया। इससे ग्रंथ के हाथ में गंभीर चोट आई है। वीडियो 15 अगस्त का है, लेकिन शनिवार शाम केस दर्ज करने के बाद वीडियो वायरल हुआ है। ग्रंथ दोस्तों के साथ 15 अगस्त की शाम साइकिल चला रहा था। तभी सन्नी बारिया वहां पहुंचा और ईंट से हमला कर भाग गया। बच्चा रोते हुए अपने पिता शशांक के पास पहुंचा और पूरी घटना बताई। वे तत्काल मौके पर पहुंचे लेकिन तब तक सन्नी भाग गया था।

पिता शशांक ने अस्पताल में उपचार कराने के बाद 16 अगस्त को पुलिस से शिकायत की। पुलिस ने सन्नी के पिता को थाने बुलाया और वहीं बैठा लिया। इसके बाद भी सन्नी नहीं आया तो केस दर्ज कर लिया। स्थानीय लोगो के मुताबिक सन्नी खुलेआम नशा करते हुए घूमता है। पुलिस उस पर कार्रवाई नहीं करती। एरोड्रम पुलिस पूर्व में भी कई मामलो में एफआईआर दर्ज करने के मामले में लापरवाही बरत चुकी है।

महाकाल से ओंकारेश्वर के दर्शन कर कार लेकर हुए फरार

● नेमावर ब्रिज में रुकवाई थी गाड़ी, संदिग्धों के फुटेज से जांच में जुटी पुलिस

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के तेजाजी नगर इलाके में तीन कार सवार युवक किराए की टैक्सी लेकर फरार हो गए। मामले में टैक्सी ड्राइवर ने पहले गाड़ी मालिक को सूचना दी। इसके बाद पुलिस में जाकर केस दर्ज कराया है। शिकायत के बाद पुलिस बायपास के आसपास मिले फुटेज से आरोपियों की तलाश में जुट गई है। तेजाजी नगर पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक बनेसिंह केवट ने बताया कि वह मोतीनगर उज्जैन का रहने वाला है। वह कार से 15 अगस्त के दिन सवारी को उज्जैन से ओंकारेश्वर लेकर गया। पहले उन्होंने काल भैरव फिर मंगलनाथ के दर्शन किये थे। रात को जब ओंकारेश्वर से वापस लौट वक्त उन्होनें नेमावर ब्रिज पर बाथरूम जाने को कह गाड़ी रुकवाई। कार में चाबी लगाकर मैं बाहर निकला। इस दौरान कार में बैठे एक युवक ने वहां से कार भगा ली। मामले में ड्राइवर बनेसिंह ने रात में थाने जाकर शिकायत की। पुलिस ने संदिग्ध लोगो की जानकारी निकाली। इसके दो दिन बाद केस दर्ज किया है।

महिला का पर्स ले भागे एक्टिवा सवार बदमाश – जूनी इंदौर में एक्टिवा सवार बदमाशों ने महिला का पर्स लूट लिया। पर्स में मोबाइल और 5 हजार रूपए रखे हुए थे। पुलिस आरोपियों की तलाश में जुट गई है। पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक ममता पति सुंदर परानी निवासी बैराठी कॉलोनी ने बताया कि वह शनिवार रात को सिंधी कॉलोनी से मार्केट कर वापस आ रही थी। जब वह गली नंबर 1 में पहुंची तो यहां एक्टिवा सवार दो बदमाश पीछे से आए। एक बदमाश ने हाथ पर झपट्टा मारा और पर्स लेकर फरार हो गए। उसमें मोबाइल और नकदी रखे हुए थे। पुलिस आसपास के फुटेज से आरोपियों की तलाश कर रही है।

इंदौर से 4 शहरों का फ्लाइट किराया ट्रेन से सस्ता

● फेस्टिवल सीजन में ऑफर लाई विमान कम्पनी

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के देवी अहिल्या बाई होल्कर एयरपोर्ट से 25 शहरों के लिए रोजाना 40 से ज्यादा सीधी फ्लाइट का संचालन होता है। जिससे रोजाना 10 हजार से ज्यादा यात्री इंदौर एयरपोर्ट से सफर करते हैं। इंदौर से 4 शहरों के लिए ऐसी सीधी फ्लाइट भी है जिनका किराया ट्रेन से भी सस्ता है। इंदौर से सूरत, नागपुर, उदयपुर और अहमदाबाद फ्लाइट का किराया इंदौर रेलवे स्टेशन से चलने वाली ट्रेनों के फर्स्ट एसी से भी सस्ता है। वहीं नागपुर की फ्लाइट का किराया तो इंदौर-नागपुर वंदे भारत से लगभग 700 रुपए कम है।

इंदौर में अफसरों पर फायरिंग करने वाले का मकान ढहाया

सुबह 5 बजे 7 जेसीबी और 3 पोकलेन मशीन के साथ पहुंची टीम

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में कब्जा हटाने गए तहसीलदार और पटवारी पर फायरिंग करने वाले आरोपी का घर पुलिस ने ढहा दिया है। रविवार सुबह 5 बजे से कार्रवाई शुरू हुई। कलेक्टर आशीष सिंह ने बताया कि फायरिंग करने वाले आरोपी सुरेश पटेल व अन्य के खिलाफ रासुका (राष्ट्रीय सुरक्षा कानून) की कार्रवाई की जा रही है। ऐसी घटना कतई बर्दाश्त नहीं की जाएगी। आरोपी सुरेश पटेल की कोठी को ढहाने में 7 जेसीबी और 3 पोकलेन मशीन लगाई गई थीं। करीब तीन घंटे में उसे ध्वस्त कर दिया गया। दरअसल, 14 अगस्त बुधवार को अरबिंदो हॉस्पिटल की जमीन से कब्जा हटाने गए तहसीलदार और पटवारी पर वहां मौजूद गार्ड ने फायरिंग कर दी थी। दोपहर करीब डेढ़ बजे जैसे ही कब्जे पर बुलडोजर चला तो सिक्योरिटी गार्ड ने 12 बोर बंदूक से गोलियां चलानी शुरू कर दी। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि गार्ड ने करीब 25 से 30 राउंड गोलियां चलाईं। जानकारी के मुताबिक जिस जमीन से कब्जा हटाया जा रहा था वह श्रेष्ठ में अटैच है। गार्ड को पकड़ लिया गया था। बताया जा रहा है कि घटना के दौरान सुरेश पटेल भी मौजूद था।

निगम ने दिए थे कब्जा हटाने का नोटिस – नगर निगम ने शनिवार दोपहर को सुरेश पटेल के परिवार को नोटिस दिया था। इसमें बताया था कि निगम ने 14 और 16 अगस्त को सरकारी जमीन से अवैध कब्जा हटाने का नोटिस दिया था। इसका पालन नहीं किया गया। निगम 17 अगस्त को सुबह 8 से शाम 5 बजे तक यह अवैध निर्माण हटाएगा। आप मौके पर उपस्थित रहे। अगर अनुपस्थिति रही तो भी रिमूवल की कार्रवाई की जाएगी।

परिवार बोला– हाईकोर्ट में सुनवाई से पहले ही कार्रवाई

परिवार के आकाश जाटव ने बताया निगम के नोटिस को लेकर शनिवार को ही हाई कोर्ट में एक याचिका लगाई थी। इसमें रविवार को सुनवाई होनी थी। सुबह 8 बजे के पहले ही रिमूवल टीम आ गई और कोठी ध्वस्त कर दी।

हाईकोर्ट ने जताई नाराजगी

सुरेश पटेल के एडवोकेट विकास राठी और आकाश राठी ने बताया कि रविवार सुबह हाई कोर्ट की स्पेशल बेंच में सुनवाई हुई। इसमें कोर्ट को वस्तुस्थिति से अवगत कराया। बताया गया कि सुनवाई और समय से पहले ही निगम ने निर्माण ध्वस्त कर दिया। इस पर कोर्ट ने नाराजगी जताने के साथ यथास्थिति का आदेश दिया है।

गोली कांड से जोड़कर देख रहे वीआरएस आवेदन

इस गोली कांड की जानकारी प्रदेश सरकार तक पहुंच गई है। इस बीच मल्हारगंज क्षेत्र के नायब तहसीलदार जितेंद्र वर्मा ने रिटायरमेंट के लिए आवेदन दिया है। उनके इस कदम को घटना से जोड़कर देखा जा रहा है। क्योंकि तहसीलदार शैवाल सिंह और टीम के साथ नायब तहसीलदार जितेंद्र वर्मा भी कब्जा हटाने पहुंचे थे। उनके साथ पटवारी प्रदीप चौहान और मयंक चतुर्वेदी भी थे।

चैकअप कराने गए ऑटो ड्राइवर को डॉक्टर के सामने अटैक

सीपीआर दी पर नहीं बची जान, डॉक्टर ने ढूंढकर परिजनों को सूचना दी

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के परदेशीपुरा में रहने वाले एक ऑटो ड्राइवर की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। वह डॉक्टर के पास चैकअप कराने पहुंचा था। डॉक्टर की जांच पूरी होते ही वह चक्कर खाकर गिर गया। डॉक्टर ने पुलिस को घटना की जानकारी दी तो पुलिसकर्मी विवाद करने लगा। तब

डॉक्टर ने ही ऑटो ड्राइवर के पास मिले आधार कार्ड से उसके घर का पता निकाला और वहां जाकर परिवार को सूचना दी। परिवार के लोग अस्पताल पहुंचे और उसे सीएचएल अस्पताल ले गए। यहां उपचार के दौरान उसकी मौत हो गई। परदेशीपुरा पुलिस के मुताबिक मृतक का नाम सोनू पुत्र देवीदास मतकर निवासी शिवाजी नगर है। सोनू सुभाष नगर इलाके से ऑटो चलाकर भाग्यश्री अस्पताल पहुंचे। डॉक्टर से कहा कि घबराहट हो रही है। डॉक्टर चैकअप करने लगे तभी सोनू को कार्डियक अरेस्ट हो गया। डॉक्टर और अस्पताल का स्टाफ यह देखकर घबरा गया। उन्होंने किसी परिजन के साथ नहीं होने के कारण टीआई पकंज द्विवेदी को कॉल किया। उन्होंने फोन नहीं उठाया तो थाने पर कॉल किया। यहां पर एएसआई शोभाराम अटेरिया ने डॉक्टर से बहस की। इसके बाद डॉक्टर अपने साथी के साथ सोनू के साथ पास मिले आधार कार्ड से उसके घर का पता ढूंढने पहुंचे। करीब आधे घंटे तक परेशान होने के बाद युवक के परिजन मिले। उन्हें अस्पताल लेकर आया गया। यहां से परिजन उसे सीएचएल अस्पताल ले गए। डॉक्टरो ने कुछ देर बाद उसे मृत घोषित कर दिया।

सीपीआर दी थी, एक घंटे बाद पहुंची पुलिस – भाग्यश्री नर्सिंग होम के ड्यूटी डॉक्टर सुयश ठाकुर ने बताया कि रात में युवक अंदर आया तो वह चेकअप ही कर रहे थे। अचानक वह गिरा तो उसे संभाला। पानी छींटा, सीपीआर भी दिया। परिजन नहीं थे इसलिए उपचार शुरू नहीं किया। हमारे पास इलाज के साधन नहीं थे। इसलिए हमने कोई उपचार भी शुरू नहीं किया। इसलिए पुलिस को सूचना दी। लेकिन वे हमें ही डांटने लगे। इसलिए हमने ही शनिवार रात को परिजनों को ढूंढा। करीब एक घंटे बाद तीन पुलिसकर्मी क्लिनिक पर पहुंचे।

पुलिस पहुंच जाती तो बच सकती थी जान – डॉ. ठाकुर के मुताबिक उसके क्लिनिक से ले जाने तक उसकी पल्स चल रही थी। नर्सिग होम से सीधे सीएचएल अस्पताल ले गए। यदि पुलिस तत्काल मौके पर पहुंच जाती तो सोनू की जांन बच सकती थी। हालांकि पुलिस ने इस मामले में मर्ग कायम किया है।

इंदौर एमजीएम केस बना आधार, ग्वालियर मेडिकल कॉलेज लौटाएगा डॉक्यूमेंट

हाईकोर्ट ने प्रमुख सचिव, डीएमई-कॉलेज डीन को 30 लाख की डिमांड पर जारी किया नोटिस

इंदौर (एजेंसी)। पोस्ट ग्रेजुएशन की सीट छोड़ने पर मेडिकल स्टूडेंट के ओरिजिनल डॉक्यूमेंट कॉलेज ने रख लिए। डॉक्यूमेंट के लिए उसने मेडिकल कॉलेज के चक्कर लगाए लेकिन उससे पेनल्टी के रूप में 30 लाख रुपए की डिमांड की गई। इसके चलते वो डिप्रेशन का शिकार हो गया। मामले में ग्वालियर हाईकोर्ट में याचिका लगाई गई। हाईकोर्ट ने प्रमुख सचिव, डीएमई और जीआर मेडिकल कॉलेज डीन को नोटिस जारी कर 4 हफ्ते में जवाब मांगा है। कॉलेज को बिना रुपए लिए डॉक्यूमेंट लौटाने के डायरेक्शन दिए हैं । गजराराजा मेडिकल कॉलेज ग्वालियर के स्टूडेंट ने हाईकोर्ट में याचिका लगाई थी। एक स्टूडेंट की तरफ से ग्वालियर हाईकोर्ट में याचिका लगाई थी। उसे भी ओरिजिनल डॉक्यूमेंट नहीं दिए जा रहे थे। जिस वजह से वो डिप्रेशन का शिकार हो गया था। 16 अगस्त को ग्वालियर हाईकोर्ट में डबल बेंच के समक्ष आर्ग्युमेंट हुए। गजराराजा मेडिकल कॉलेज ग्वालियर को हाईकोर्ट ने डायरेक्शन दिया है कि स्टूडेंट को तुरंत बिना 30 लाख रुपए लिए ओरिजिनल डॉक्यूमेंट वापस किए जाए। साथ ही डायरेक्टर मेडिकल एजुकेशन, मप्र राज्य के प्रमुख सचिव, डीन मेडिकल कॉलेज को नोटिस जारी कर 4 हफ्ते में हाईकोर्ट ने जवाब मांगा है। स्टूडेंट के ओरिजिनल डॉक्यूमेंट रोक लिए जाते हैं। जिस वजह से स्टूडेंट आगे की पढ़ाई नहीं कर पाते हैं। इसके कारण स्टूडेंट इतना डिप्रेशन में आ जाता है कि वो सुसाइड की तरफ चला जाता है।

डॉक्यूमेंट स्टूडेंट की पसीने की कमाई, 30 लाख की डिमांड गैर कानूनी – एडवोकेट आदित्य संघी ने बताया कि मध्यप्रदेश के लिए ये गंभीर मामला है। पढ़ने में आता है कि मेडिकल हॉस्टल में कई बार स्टूडेंट्स सुसाइड कर लेते हैं। ये मामला उसकी जड़ तक जाता है। 9 फरवरी 2024 को इस मामले पर पार्लियामेंट में भी डिस्कशन हुआ था। पार्लियामेंट के प्रश्नोत्तर काल के बाद नेशनल मेडिकल कमीशन को डायरेक्शन दिया गया कि मध्यप्रदेश के मेडिकल कॉलेजों में पीजी की सीट छोड़ने पर सरकार 30 लाख रुपए की पेनल्टी लगाती है। स्टूडेंट के ओरिजिनल डॉक्यूमेंट रोक लिए जाते हैं, जो एडमिशन के समय उसने जमा किए थे। जिस वजह से स्टूडेंट आगे की पढ़ाई नहीं कर पाते है।

कैटरिंग कर्मचारी का तीन दिन पुराना शव मिला

बदबू आई तो पड़ोसियों ने पुलिस को बुलाया, मिस्त्री ने किया सुसाइड

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के चंदन नगर इलाके में एक कैटरिंग कर्मचारी ने सुसाइड कर लिया। तीन दिन तक उसका शव फंदे पर ही लटका था। आसपास के लोगों को बदबू आई तो पुलिस को जानकारी दी। चंदन नगर पुलिस के मुताबिक राजू (35) पुत्र मंशाराम सवनेरा निवासी डी तासी परिसर ने अपने घर में फांसी लगाकर जान दे दी। वह कैटरिंग का काम करता था। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है।

मिस्त्री ने किया सुसाइड

वहीं खजराना में रहने वाले कैलाश (35) पुत्र मखराम राठौर निवासी सरस्वती नगर ने अपने घर में फांसी लगाकर जान दे दी। परिवार के लोगों ने बताया कि कैलाश की 12 साल की बेटी रविवार सुबह उठी तो उसके पिता फंदे पर लटके थे। कैलाश पेशे से मिस्त्री थे।

बाद में उसने मां को उठाया और फिर परिवार को जानकारी दी। परिवार के लोग घर पहुंचे और वहां से पुलिस को जानकारी देकर शव को एमवाय लेकर आए। कैलाश के परिवार में उनका एक बेटा है। परिवार मूल रूप से खरगोन का रहने वाला है। पुलिस के मुताबिक आत्महत्या के कारणों का खुलासा नहीं हो पाया है।

रेलवे में पदस्थ महिला कर्मचारी के यहां चोरी

इंदौर से राखी पर मायके जा रही महिला के आभूषण भी ले गए बदमाश

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के कनाड़िया में एक महिला के यहां चोरी हो गई। वह दो दिनों के लिए मुंबई गई थी। कनाड़िया पुलिस के मुताबिक मीनाक्षी राव पति श्रीकांत देशमुख निवासी सी 61 कैलिफोर्निया सिटी कनाड़िया रोड की शिकायत पर अज्ञात चोरों पर केस दर्ज किया है।

मीनाक्षी ने बताया कि वह वेस्टर्न रेलवे उज्जैन में पदस्थ हैं। वे 15 अगस्त को मुंबई गई थी। शनिवार शाम 5 बजे घर लौटी तो घर के ताले टूटे पड़े थे। आरोपी सोने के दो मंगलसूत्र, सोने के टॉप्स, एक अंगूठी, चांदी की चेन, घड़ियां और अन्य सामान चुराकर ले गए। इसके बाद उन्होंने पुलिस को सूचना की।

वहीं आजाद नगर थाने में भी आरती पति सुनील जैसवाल ने शिकायत की है। वह सागर कुटी की रहने वाली है। शनिवार को पीथमपुर से अपने मायके हाट पिपलिया जा रही थी। तीन ईमली चौराहे पर उतरकर बस बदलने के लिए बस का इंतजार कर रही थी। उनके हाथ में रखे पर्स में हार, चांदी का झूमर, बिछिया और नगदी रखे थे। उसे भीड़ में बदमाश ने चुरा ले गए।आरती ने घटनाक्रम की जानकारी पुलिस को दी है।

वॉशरूम के कमोड में निकले तीन कोबरा

● पकड़ने के लिए जिंदा मछली रखी ● 8 महीने की बच्ची को लेकर 5 दिन खौफ में रहे दंपती

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के गांधीनगर इलाके में एक घर में तीन कोबरा सांप निकले। तीनों सांप वॉशरूम के कमोड में थे। दो का रेस्क्यू हो चुका है, लेकिन तीसरे का अभी तक कुछ पता नहीं है। 17 अगस्त शनिवार को परिवार ने घर में पूजा-पाठ कराने के साथ ही चेंबर का काम कराया है। गांधीनगर अरिहंत नगर एक्सटेंशन में महेश क्षत्रिय, पत्नी कुसुम और 8 महीने की बेटी के साथ रहते हैं। 12 अगस्त की रात करीब 10.30 बजे कुसुम वॉश रूम गई, यहां कमोड से सांप को लिपटा देख चौंक गई। तुरंत पति महेश को बताया। महेश ने स्नेक कैचर को कॉल किया। रात में ही सांप का रेस्क्यू कर लिया गया। सांप करीब 5 फीट लंबा था। महेश समझ गए थे कि सांप कमोड में से ही आया है, इसलिए उन्होंने ढक्कन बंद कर उस पर वजन रख दिया। अगले दो दिन तक वॉशरूम को सिर्फ नहाने के लिए उपयोग किया।

तीन दिन बाद दो कोबरा और निकले – महेश ने 15 अगस्त की सुबह कमोड का ढक्कन हटाया तो वहां फिर से दो कोबरा देख वह सिहर उठे। ढक्कन बंद किया और उसी सांप पकड़ने वाले तो दोबारा बुलाया। इस बीच दोनों कोबरा कमोड के अंदर चले गए। स्नेक कैचर वॉशरूम में जिंदा मछली रखने के लिए कहा। ताकि कोबरा बाहर आ सके। महेश ने मछली लाकर वॉशरूम के टब में छोड़ दी और निगरानी

करने लगे। दोपहर में एक कोबरा बाहर आया। महेश ने उसका वीडियो बना लिया और डंडे से कमोड का ढक्कन लगा दिया। जब स्नेक कैचर को कॉल किया तो वह आनाकानी करने लगा। इस बीच दूसरा सांप कमोड से बाहर आने की कोशिश करने लगा, लेकिन नहीं आ पाया। जो सांप बाहर था, वह भी अंदर चला गया। इसके बाद महेश ने दूसरे स्नेक कैचर महेंद्र श्रीवास्तव को बुलाया, लेकिन दोनों कोबरा बाहर नहीं निकले।16 अगस्त को महेश परिवार के साथ कई घंटे घर से बाहर बैठे रहे। इस बीच फिर एक कोबरा कमोड के बाहर आया। महेश ने तुरंत डंडे से ढक्कन बंद कर दिया। सूचना पर स्नेक कैचर महेंद्र पहुंचे और सांप को रेस्क्यू कर लिया। दूसरे कोबरा को पकड़ने के लिए आधे घंटे तक कमोड में पानी डाला, लेकिन वो बाहर नहीं आया। उसका अभी तक कुछ पता नहीं चला है।

रात को बार-बार दरवाजा देखती रही पत्नी –महेश की पत्नी कुसुम ने बताया कि पहली बार उन्होंने इतने बड़े सांप देखे। 8 माह की बेटी साथ है, इसलिए हर समय डर लगा रहता है। तीन रात तक सो नहीं पाई। रात में बार-बार दरवाजे को देखती कि कहीं सांप कमरे में न आ जाए। हालांकि छुट्टी के चलते पति दिनभर घर में ही थे, इसलिए हिम्मत बंधी रही।

लोगों ने बोला एसिड डाल दो, लेकिन दिल नहीं माना– महेश ने बताया कि जब सांप का पता चला तो कई लोगों ने कहा कि गर्म पानी डाल दो, एसिड डाल दो। मगर हम सांपों को कोई नुकसान नहीं पहुंचाना चाहते थे। इसलिए हमने इंतजार किया और उन्हें सुरक्षित पकड़वाकर छुड़वा दिया। जिस मछली को लेकर आए थे, उसे भी चौकीदार को देकर तालाब में छोड़ने का कहा।

सांपों के यहां से आने की है संभावना – महेश ने बताया कि उनके घर के आसपास खेत है। तीन साल पहले ही यहां रहने आए हैं। लेकिन ये पहली बार है जब घर में सांप निकले हैं। संभवत- खेत से ही सांप चेंबर के रास्ते कमोड तक पहुंचे होंगे। उनके यहां ओवरफ्लो की लाइन और टैंक बना हुआ है। इसके बाद लाइन चेंबर में जुड़ी है।

इधर, स्नेक रेस्क्यू करने वाले महेंद्र श्रीवास्तव ने बताया कि ओवरफ्लो के लिए जो चेंबर बनाया गया है, उससे संभावना है कि सांप वहां से कमोड तक पहुंचे होंगे। फिलहाल दो सांपों का रेस्क्यू हो चुका है, तीसरे सांप का पता नहीं चल पाया है।

संपादकीय

असली परीक्षा जम्मू - कश्मीर में है

चुनाव आयोग ने शनिवार को जिस तरह चार में से सिर्फ दो राज्यों में विधानसभा चुनाव कराने का ऐलान कर कई सवालों को हवा दे दी है, वहीं इसमें जम्मू कश्मीर विधानसभा चुनाव के नतीजे कश्मीर को लेकर मोदी सरकार की नीति नीयत और वहां 370 खत्म करने के नतीजों को रेखांकित करने वाले होंगे। क्योंकि आंतकवादग्रस्त इस राज्य में दस साल बाद विधानसभा चुनाव हो रहे हैं। पिछली बार 2015 में विधानसभा चुनाव हुए थे, जिसमें किसी भी पार्टी को बहुमत नहीं मिला था। उसके बाद दिल्ली में सत्तारूढ़ भाजपा ने राज्य में पीडीपी के साथ मिलकर सरकार बनाई थी, जो विपरीत विचारधाराओं की पार्टी का सत्ता के लिए समझौता था। पहले मुफ्ती मोहम्मद सईद को सीएम बनाया गया। उनके निधन के बाद उनकी बेटी महबूबा मुफ्ती को मुख्यमंत्री बनाया गया। भाजपा के निर्मलसिंह उपमुख्यमंत्री बने। यह पहला मौका था, जब भाजपा इस राज्य में सरकार में शामिल हुई। मुफ्ती सरकार कैसी चली, यह अलग मुद्दा है, लेकिन सरकार में शामिल होने से भाजपा को सरकार की कई खामियां पता चल गईं। आंतकवादियों के साथ पीडीपी व अन्य स्थानीय दलों के कैसे रिश्ते हैं, यह पता चला। आतंकियों की मदद करने वाले अलगाववादियों के कार्यशैली पता चली। भाजपा ने एक तयशुदा रणनीति के तहत 2018 में मुफ्ती सरकार गिरा दी और राष्ट्रपति शासन लागू कर दिया। जब 2019 में भाजपा भारी बहुमत से सत्ता में लौटी तो मोदी सरकार ने भाजपा और संघ के बहुप्रतीक्षित एजेंडे को पूरा करते हुए कश्मीर से धारा 370 को खत्म कर उसका विशेष राज्य का दर्जा समाप्त कर दिया। जम्मू कश्मीर का पूर्ण राज्य का दर्जा समाप्त कर उसे केन्द्र शासित प्रदेश बना दिया गया। लद्दाख को अलगकर नया केन्द्रित शासित प्रदेश बनाया गया। कश्मीर घाटी में कर्फ्यू लगा दिया और अलगाववादियों के पूरे नेटवर्क को सख्ती से तोड़ा गया। आंतकवादियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई के लिए सेना और जम्मू कश्मीर पुलिस को खुली छूट दी गई। इसका नतीजा धीरे धीरे दिखने लगा। कश्मीर घाटी में पत्थरबाजी पूरी तरह बंद हो गई। स्थानीय लोगों द्वारा आतंकियों को समर्थन देने की मात्रा में बहुत कमी आई। आंतकी हमलों की संख्या भी घट गई। कश्मीर में पर्यटन बहुत बढ़ गया। स्थानीय लोगों के जीवन में शांति और खुशहाली नजर आने लगी। राज्य में विधानसभा सीटों का नए सिरे से परिसीमन हुआ। इसके बाद सीटों की संख्या 87 से बढ़कर 90 हो गई। साथ ही विस में 5 सीटें मनोनीत होंगी। इसके अलावा राज्य में पहली बार अनुसूचित जाति और जनजाति के लिए आरक्षण लागू किया गया। जम्मू कश्मीर में 'अलग' होने की भावना काफी कमजोर पड़ी। भले ही राजनीतिक तौर पर स्थानीय कश्मीरी भले संतुष्ट न हों, लेकिन घाटी में अमन से उनकी जिंदगी में सुकून बढ़ा। लेकिन जम्मू कश्मीर के लोग राज्य में चुनी हुई सरकार चाहते थे और उनकी यह मांग भी है कि उन्हें जम्मू कश्मीर को पहले की तरह पूर्ण राज्य का दर्जा मिले। यह मामला सुप्रीम कोर्ट भी गया, जहां सर्वोच्च अदालत ने केन्द्र सरकार को निर्देश दिया कि हर हाल में सितंबर के पहले राज्य में चुनाव कराए जाएं। उसके बाद चुनाव आयोग ने राज्य में तीन चरणों में विस चुनाव की घोषणा की। इसके पूर्व 2024 के लोकसभा चुनाव में कश्मीरियों ने आतंकी धमकियों के आगे न झुकते हुए बंपर मतदान किया। इससे भी सरकार पर दबाव बना कि वह जल्द से जल्द राज्य में विस चुनाव कराएं। अब चुनाव होने जा रहे हैं। लेकिन इसमें मतदाता का रूख क्या होगा, क्या वो राज्य में धारा 370 की समाप्ति पर अपनी मोहर लगाएगा या नहीं, यह देखने की बात है।

नजरिया

रघु ठाकुर

लेखक समाजवादी चिंतक हैं।

खुद को दोहराने को तैयार इतिहास

2024 के लोकसभा चुनाव परिणाम आने के बाद भारतीय जनता पार्टी में आंतरिक तनाव बढ़े हैं। जिन राज्यों में उन्हें विधानसभा के चुनाव में भारी बहुमत मिला था और उन राज्यों में भी जिनमें मुख्यमंत्री को श्री नरेंद्र मोदी ने सीधे पर्ची से नाम जद किया था उसको लेकर भी आम स्वीकार्यता नहीं थी। यद्यपि विधानसभा के चुनाव के समय केंद्र के चुनाव नहीं हुए थे इसलिए भाजपा का नेतृत्व और विशेषतः राज्यों के मुख्यमंत्रीपद के दावेदार प्रधानमंत्री की ताकत व प्रचारित लोकप्रियता से भयभीत थे।

एक आम राय यह थी कि भाजपा को विशाल बहुमत मिलेगा और अयोध्या में रामलला के मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा के बाद श्री नरेंद्र मोदी और भाजपा ने अबकी बार 400 के पार के नारा का उद्घोष किया था इससे भी दल के भीतर व बाहर के लोग भयभीत थे। और विशेषता उनकी पार्टी के अंदरूनी उनके प्रतिद्वंदी लोग। परंतु उस समय वे बोलने का साहस नहीं कर सकते थे। इस बार 2024 के लोकसभा चुनाव के बाद जब भाजपा घटकर 240 पर रह गई और मोदी मिथ टूट गया तो अब अंदर के विरोधियों ने भी कुछ बोलने का साहस दिखाना शुरू किया है। भारतीय जनता पार्टी को राजस्थान और उत्तर प्रदेश से विशेष आघात लगा है। कोई भी भाजपा का नेता या आम जानकार व्यक्ति यह मानने को तैयार नहीं था की उत्तर प्रदेश में भाजपा को 60 से कम सीट मिलेंगी और इसी प्रकार राजस्थान में भी लगभग अधिकांश सीटों के पाने की उम्मीद थी, जैसा कि पिछली बार हुआ था। परंतु इन दोनों राज्यों ने न केवल श्री नरेंद्र मोदी जी को निराश किया है, बल्कि उनके थोथे नारे 400 के पार की पोल खोल दी है।

यद्यपि श्री नरेंद्र मोदी तीसरी बार प्रधानमंत्री बन गए हैं परंतु यह जोड़-तोड़ की लंगड़ी सरकार है जिसमें दो सहयोगी दलों की संख्या महत्वपूर्ण है और इस परिस्थिति में उनके अंदर का कोई भी व्यक्ति प्रधानमंत्री के पद की जवाबदारी लेने को तैयार नहीं था। ऐसा बताया जाता है कि श्री नरेंद्र मोदी ने कहा था-मैं नहीं बनना चाहता परंतु उन्हें उनके पार्टी और सहयोगी दलों ने बाध्य किया। श्री मोहन भागवत का एक बयान अवश्य मैंने पढ़ा था, जिसमें उन्होंने कहा था कि सभी लोग पूरी ताकत से श्री नरेंद्र मोदी को प्रधानमंत्री बनाने में सहयोग करें। उनका यह बयान वास्तविक था या समय की लाचारी का बयान था यह कहना कठिन है। एक घटना तो यह महत्वपूर्ण हुई है कि राजस्थान, उत्तर प्रदेश, गुजरात और अन्य कई प्रदेशों में राजपूत समाज ने श्री मोदी के खिलाफ वोट दिया है जो अभी तक आम तौर पर भाजपा व संघ का समर्थक था। चुनाव के पहले से ही एक अभियान शुरू हो गया था। इसकी शुरुआत पहले गुजरात से हुई थी और वह श्री पुरुषोत्तम रुपाला के बयान के आधार पर हुई थी। हालांकि श्री रूपाला ने दो बार सार्वजनिक रूप से माफी मांगी परंतु राजपूत समाज ने ना उन्हें माफकिया और ना ही मोदी को माफकिया तथा भाजपा के खिलाफ भी वोट दिया।

उत्तर प्रदेश में भी बताया जाता है की राजपूत समाज ने आम तौर पर भाजपा के खिलाफ ही वोट दिया और कहा जाता है कि श्री योगी आदित्यनाथ की भी इच्छा यही थी कि उत्तर प्रदेश में भाजपा ज्यादा सीटें हारे। क्योंकि उन्हें यह खतरा हो गया था कि, अगर भाजपा को विशाल बहुमत मिलता है तो उन्हें हटा दिया जाएगा। इसके भी कुछ छुट पुट प्रमाण भी मिले हैं परंतु किसी बाहरी व्यक्ति का ज्यादा कहना संभव नहीं है। हालांकि जो घटनाक्रम हुआ है उससे यही निष्कर्ष निकलता है। चुनाव के परिणाम आने के बाद भाजपा की सांसदों की संख्या भी कम हुई और श्री नरेंद्र मोदी भी हारते-हारते बचे। वस्तुतः उनकी जीत मात्र 1 लाख के वोटों से हुई है जबकि उनके लोगों का दावा 6 लाख वोटों से जीतने का था। आरंभ के चार-पांच राउंड में भी वह पीछे थे और यह एक प्रकार से उनकी गणितीय हार तो नहीं थी परंतु नैतिक हार तो है। इन घटनाओं के बाद उत्तर प्रदेश भाजपा में तनाव बढ़ रहा है और ऐसा लगता है कि इसके पीछे कहीं ना कहीं केंद्र का हाथ है। एक तो भाजपा में हार के कारणों पर चर्चा शुरू हुई तो यह कहा गया की लोकसभा के टिकट वितरण में श्री अमित शाह ने मनमानी की। जिन 12 लोगों को टिकट देने की सिफारिश श्री योगी ने की थी उन्हें टिकट नहीं दिए गए। इससे भी श्री योगी के मन में यह खतरा पैदा हुआ की यह उन्हें हटाने की तैयारी है और हो सकता है कि योगी ने अपनी ताकत अप्रत्यक्ष रूप से उन दोनों व्यक्तियों को कमजोर करने में लगाई हो जो उन्हें हटाने के के लिए षड्यंत्र कर रहे थे।

अभी भी ऐसा लगता है कि भाजपा में कुछ ठीक-ठाक नहीं है, विशेषतः उत्तर प्रदेश में। झारखंड के गुमला में श्री मोहन भागवत ने बयान दिया है कि कुछ लोग भगवान बनना चाहते हैं और वह अपनी असलियत भूल जाते हैं। भगवान बनने को क्या करना पड़ता है यह भूल जाते हैं। लोगों ने उनके इस बयान को श्री मोदी के चुनाव के पूर्व दिए गए बयान से जोड़कर देखा है जिस पर उन्होंने कहा था कि मैं भगवान के द्वारा भेजा गया हूं यद्यपि जैविक रूप से नहीं यानी वह अपने आप को एक प्रकार का अवतार जैसा सिद्ध कर रहे थे।

दूसरी घटना हुई है कि श्री योगी मुख्यमंत्री जी ने जो बैठक बुलाई थी उसमें दोनों उपमुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य और श्री बृजेश पाठक शामिल नहीं हुए परंतु दिल्ली में भाजपा मुख्यमंत्री परिषद की जो बैठक उनके केन्द्रीय कार्यालय में हुई जिसमें श्री नरेंद्र मोदी, श्री अमित शाह, श्री राजनाथ सिंह आदि भाजपा आला कमान शामिल हुए थे उसमें मुख्यमंत्री श्री योगी के साथ दोनों उपमुख्यमंत्री भी शामिल हुए। जबकि मध्य प्रदेश राजस्थान में भी दो दो उपमुख्यमंत्री हैं, छत्तीसगढ़ में भी दो उप मुख्यमंत्री हैं परंतु इन राज्यों के उपमुख्यमंत्री इस बैठक में शामिल नहीं हुए और शायद उन्हें बुलाया भी नहीं गया हो। अकेले उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्रियों को बुलाने का मतलब यही संकेत देता है कि भाजपा का केंद्रीय नेतृत्व और विशेषतः प्रधानमंत्री और उनकी जमात अब श्री योगी को गिराने की तैयारी कर रहे हैं। कुछ दिनों के बाद 10 विधानसभाओं के उप चुनाव उत्तर प्रदेश में होना है और तब तक शायद कोई परिवर्तन या बदलाव की बात ना हो परंतु अगर इन उपचुनाव में योगी के विपरीत परिणाम आते हैं तो यह उनके खिलाफ मुहिम के लिए एक ताकतवर तर्क होगा कि श्री योगी आदित्यनाथ लोकसभा भी नहीं जीता पाए ना उपचुनाव जिता पाए और भविष्य में भी होने वाले चुनावों को भी वह नहीं जिता पाएंगे।

ऐसा लगता है कि भाजपा का इतिहास दोहराया जा रहा है। वैसे भी कहावत है कि इतिहास अपने आप को कुछ समय के बाद दोहराता है। स्व. अटल बिहारी वाजपेई जब प्रधानमंत्री बने थे और लखनऊ से लोकसभा का चुनाव लड़े थे तो उस समय श्री लालकृष्ण आडवाणी जो भीतर से प्रधानमंत्री पद के इच्छुक थे। बताया जाता है कि उनके इशारे पर स्वर्गीय कल्याण सिंह ने स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेई को हराने का प्रयास किया था। जो उनकी बिरादरी के मतदान केंद्र थे उनमें अधिकांश से स्व अटल बिहारी वाजपेई हारे थे। यह तो उन्होंने अपनी केंद्रीय सरकार के अधिकारों का इस्तेमाल कर स्व जगमोहन जो उस समय नगरीय विकास मंत्री थे के माध्यम से दिल्ली के शिया नेताओं के साथ एक समझौता किया। ओखला के व जामिया मिलिया पास की मस्जिद जिसके कब्जे मे बहुत सी सरकारी जमीन थी और डीडीए ने मस्जिद के बाहर ताला लगा दिया था वह खुलवाकर उसकी चाबी मस्जिद के इमाम साहब को सौंप दी थी। परिणाम स्वरूप लखनऊ के उनके समर्थकों ने पूरी ताकत से स्व अटल बिहारी वाजपेई को वोट दिया और वह इसी प्रकार हारते-हारते बचे थे जिस प्रकार 2024 में बनारस से श्री नरेंद्र मोदी। अटल जी उस हार के खतरे को और उस षड्यंत्र को पचा नहीं पाए थे और जब प्रधानमंत्री बने तो उन्होंने भाजपा नेतृत्व के ऊपर दवाब डाला कि स्व कल्याण सिंह को हटाया जाए।

श्री आडवाणी तत्कालीन अध्यक्ष स्व कुशाभाऊ ठाकरे और उनका समूह उन्हें हटाने के पक्ष में नहीं था। तथा पहले पार्लियामेंट्री बोर्ड की बैठक में जब अटल जी की ओर से यह प्रस्ताव आया तो उनके समकक्ष केंद्रीय नेतृत्व के सदस्यों ने कहा कि एक निर्वाचित मुख्यमंत्री को कैसे हटाया जाए। पर इसका उत्तर बाद में श्री अटल बिहारी वाजपेई ने दिया और अगली बैठक में कहा श्कोई बात नहीं कि अगर आप मुख्यमंत्री को नहीं हटा सकते तो न हटाएं परंतु प्रधानमंत्री को तो हटा सकते हैं।्य यह बात मुझे स्व कुशाभाऊ ठाकरे ने खुद बताई थी। और फिर स्व अटल बिहारी वाजपेई के संदेश को समझ कर बीजेपी पार्लियामेंट्री बोर्ड ने श्री कल्याण सिंह को हटाने का फैसला किया। हालाकि उसके बाद उत्तर प्रदेश में अस्थिरता का दौर शुरू हुआ और आगामी चुनाव में स्व मुलायम सिंह की वापसी हुई। संभव है कि श्री मोदी की पहल पर भाजपा भी इसी प्रकार का निर्णय देर सबेर करें और अपने स्थायित्व की स्वत विरोधी बनने का काम करें। यह स्थिति दिल्ली में भी देखी जा चुकी है जहां पर पहले मुख्यमंत्री भाजपा के स्व मदनलाल खुराना बने थे, क्योंकि वह स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेई के समर्थक माने जाते थे अतरू आडवाणी कैंप की ओर से उन्हें हटाया गया और फिर बाद में श्री साहिब सिंह वर्मा तदउपरांत श्रीमती सुषमा स्वराज मुख्यमंत्री बनी परंतु फिर भाजपा की सरकार नहीं बनी। शायद इतिहास अपने आप को दोहराने के लिए तैयार है। देखना है कि भाजपा नेतृत्व, संघ का नेतृत्व और नरेंद्र मोदी और उनका समूह क्या चुनता है? वैसे भी उप्र में अब सरकारी तंत्र का दबदबा कम हो रहा है। मंत्रीमंडल भीतर से दो हिस्सों में विभाजित है। मोदी शाह की जोड़ी ने पिछले दस वर्षों में विरोधियों की सरकारें जिस प्रकार षड्यंत्रों या अन्य असंवैधानिक तरीकों से गिराई हैं उसने उनकी छवि और जन समर्थन को कम किया है तथा अब अगर भाजपा सरकारें गिरेंगी तो एक बड़ा जन समूह प्रति हिंसात्मक खुशी मनाएगा। भाजपा का हिंदू कार्ड भी अब लगभग बेअसर हो रहा है। और हिंदू समाज का एक बड़ा हिस्सा भी यह मानने लगा है कि यह भाजपा का राजनैतिक प्रचार मात्र है। कुल मिलाकर उप्र में भाजपा अब कठिन दौर में है और उप्र जाने का मतलब देश से विदाई होती है, जिसकी शुरुआत इस लोक सभा से हो चुकी है।

डेक्कन-डायरी

डॉ. सुधीर सक्सेना

लेखक स्तंभकार हैं।

तमिलनाडु में तिरंगे पर तकरार

धुर दक्खिनी प्रदेश तमिलनाडु अर्से से शांत है। कोई बड़ा धरना-प्रदर्शन नहीं। कोई बड़ा बखेड़ा नहीं। मुख्यमंत्री स्टालिन के नेतृत्व में द्रमुक सरकार ने कामयाबी के झंडे गाड़ रखे हैं। हाल के लोकसभा चुनाव में शत-प्रतिशत सफलता से उसके हौसले बुलंद है। विधानसभा के उपचुनाव में भी उसे कामयाबी मिली है। द्रमुक सरकार की इस बेहतरीन उपलब्धि में उसके सामाजिक सरोकारों की महत्वपूर्ण भूमिका है। मुख्यमंत्री स्टालिन तो अपनी सरकार को वैकल्पिक मॉडेल तक की संज्ञा देते हैं। केन्द्र की सरकार से उनके रिश्ते तल्ख हैं और वह उस पर तंज का कोई मौका नहीं छोड़ते। उनके पास ढेरों शिकायतें हैं और ये शिकायतें निस्सार नहीं हैं। इनमें सबसे बड़ी शिकायत है सौतेले बर्ताव की। यूं भी गैरभाजपा और विपक्षी दलों का मानना है कि मोदी सरकार सिर्फ डबल इंजन सरकारों के प्रति सदय है, अन्यथा वह औरों की मुश्कें कसने और उनके लिए मुसीबतें खड़ी करने की फिराक में रहती है। केन्द्र के रवैये से त्रस्त राज्यों की सूची तमिलनाडु, केरल, तेलंगाना और कर्नाटक तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें पश्चिम बंगाल, पंजाब, दिल्ली और झारखंड भी जुड़ गये हैं। इनमें से अनेक राज्यों को अपने 'ड्यूज' के लिए सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाना पड़ा है। तमिलनाडु की ही बात करें तो उसे सुप्रीम कोर्ट के दखल के बाद केन्द्र सरकार ने आपदा प्रबंधन के लिए जो रकम मुहैया की है, वह ऊंट के मुंह में जीरे की मानिंद है। दूसरे इन राज्यों के मुख्यमंत्रियों और राज्यपालों के दरम्यां हद दर्जे की खटास है। इन राज्यों के मुख्यमंत्रियों का दो टूक कहना है कि मोदी सरकार इन राज्यों में राज्यपालों के जरिये सियासी गेम खेल रही है और उसका मकसद उन्हें अस्थिर करना है।

भारतीय जनता पार्टी को इस बार पूरी उम्मीद थी कि उसे इस दफा तमिलनाडु में पांव टिकाने का ठौर मिलेगा। केरल में तो सौभाग्य से उसकी मंशा पूरी हुई, लेकिन तमिलनाडु में बातें बनी नहीं। बीजेपी को कोयंबटूर में अपने युवा कमांडर अन्नामलै की जीत की खासा उम्मीद थी, लेकिन स्टालिन की व्यूह रचना से वह पार नहीं पा सके। उन्हें मात का सामना करना पड़ा। इसके लिए स्तालिन की सराहना करनी होगी कि उन्होंने अपने राजनीतिक कुनबे को बिखरने नहीं दिया और सीटों के बंटवारे मे भी उदार-व्यावहारिकता का परिचय दिया। कांग्रेस के साथ उनकी बेमिसाल जुगलबंदी का ही नतीजा है कि केन्द्र-शासित पड़ोसी राज्य पुदुच्चेरि ने लोकसभा के लिए कांग्रेस प्रत्याशी को अपना प्रतिनिधि चुना। वहीं डबल इंजन सरकार का होना बीजेपी को फला नहीं। गौरतलब है कि पुदुच्चेरि में स्टालिन के राजनीतिक उत्तराधिकारी और बेटे उदयनिधि ने रोड-शो और जमकर प्रचार किया था। उदयनिधि संप्रति स्टालिन सरकार में युवक कल्याण और खेलमंत्री हैं। गत दिनों उदयनिधि को डिप्टी सीएम बनाने की जोरदार मांग उठी। अंततः स्टालिन ने इस तुमुल नाद को यह कह कर शांत कर दिया कि उदय को अभी और 'तजुर्बे' की जरूरत है।

जाहिर है कि पिता या पुत्र, कोई भी उतावला नहीं है। टाइम फैक्टर उनके पक्ष में है। पार्टी मजबूत रही और सरकार कायम तो कोई ताज्जुब नहीं कि उदयनिधि को पिता स्टालिन के जीते-जी चीफ मिनिस्टर बनने का सौभाग्य मिले। यदि ऐसा है तो वह एक ही परिवार की तीसरी पीढ़ी के निर्वाचित मुख्यमंत्री होंगे। उदयनिधि की मनोदशा और आत्मविश्वास का आभास इससे मिलता है कि जब पत्रकारों ने उन्हें घेरा तो उन्होंने कहा कि उन्हें अपना विभाग प्राणों से भी प्रिय है।

निश्चित ही द्रमुक की युवा ईकाई के अध्यक्ष रह चुके उदयनिधि के लिए इस महकमे के मंत्री के तौर पर काम करने की खूब गुंजाइश है। वह जानते हैं कि बतौर मंत्री अनुभव की पूंजी लंबे राजनीतिक सफर में आगे काम आयेगी। उदय ने एक मार्के की बात यह कही कि तमिलनाडु के सारे मंत्री मुख्यमंत्री स्टालिन के 'डिप्टी' हैं। बहरहाल, डीएमके सरकार के लिए यह भी खुशी का सबब है कि बीजेपी और अन्नाद्रमुक के बीच 'विच्छेद' की स्थिति है। अन्नाद्रमुक असेंबली-चुनाव अकेले लड़ना चाहेगी। बीजेपी के लिए यह स्थिति यकीनन घाटे का सौदा होगी।

बीजेपी के लिए बैठे ठाले एक और मुसीबत यह खड़ी हो गयी है कि पड़ोसी राज्य पुदुच्चेरि में मुख्यमंत्री एन. रंगास्वामी ने पुदुच्चेरि को पूर्ण राज्य का दर्जा देने की मांग की है। पुदुच्चेरि में यूं तो डबल इंजन की सरकार है, अलबत्ता रंगास्वामी ने दिल्ली में नीति आयोग की बैठक में भी भाग नहीं लिया। उन्होंने इसके पीछे किसी राजनीतिक कारण से इंकार किया, किंतु इसकी अलग-अलग राजनीतिक व्याख्याओं से वह बच नहीं सके।

ऐसे माहौल में बीजेपी को बमुश्किल एक मुद्दा स्वाधीनता दिवस की पूर्ववेला में हाथ लगा और उसने उसे उठाने में कोई कोताही नहीं बरती। तमिलनाडु बीजेपी के अध्यक्ष के. अन्नामलै ने 11 अगस्त को राज्य सरकार पर आरोप लगाया कि उसने उनकी पार्टी को तिरंगा यात्राएं निकालने की अनुमति नहीं दी है। उन्होंने कहा कि पीएम नरेन्द्र मोदी की 'हर घर तिरंगा' की अपील के अनुरूप पार्टी प्रदेश में तिरंगे से सुसज्ज मोटरसाइकिल यात्राएं निकालना चाहती थी, लेकिन उसे अनुमति नहीं मिली। पुलिस से इजाजत की मनाही पर अचरज जताते हुए उन्होंने कि ऐसा सिर्फ तमिलनाडु में ही मुमकिन है। डीएमके को राष्ट्रध्वज से दिक्कत है। वे राष्ट्रध्वज को पसंद नहीं करते। बीजेपी को वाहन रैली की अनुमति न देकर उन्होंने अपने गुस्से का इजहार किया है। राष्ट्रध्वज लेकर निकलना कानून व्यवस्था के लिये समस्या कैसे हो सकता है?

अन्नामलै के बयान देने की देर थी कि तमिलनाडु कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष के सेल्वापेरुंथगै ने उन्हें यह कहकर आड़े हाथों लिया कि बीजेपी तिरंगे का राजनीतिक इस्तेमाल करना चाहती है। तिरंगा यात्रा भाजपा की रवायत नहीं है और इसका ताल्लुक मोदी की अपील से है। उन्होंने कहा कि बीजेपी समेत कोई भी ताकत कांग्रेस और तिरंगे के रिश्तों को खंडित नहीं कर सकती। हर किसी को तिरंगा फहराने का हक है और कांग्रेस हर जिले में मोटरसाइकिलों पर तिरंगा यात्रा निकालेगी और गावों और तालुकों में तिरंगा लेकर पदयात्राएं निकलेंगी। 15 अगस्त, 47 और 26 जनवरी, 50 को छोड़ दें तो आरएसएस मुख्यालय पर 52 सालों तक तिरंगा नहीं फहराया गया। वहां 26 जनवरी, 2001 को राष्ट्रध्वज फहराया गया। आरएसएस ने तिरंगे का बायकाट और अपमान किया और अब षड्यंत्र के तहत इसका इस्तेमाल करना चाहती है।

ऐसा ही हुआ और भारतीय जनता पार्टी तिरंगा यात्रा नहीं निकाल सकी। और तो और वह इसे मुद्दा बनाने में भी विफल रही। इसके विपरीत मुख्यमंत्री स्टालिन ने नयी स्कीमें शुरू कर सुर्खियां बटोरीं और 'द्रविड़ मॉडेल' का गुणगान किया।

राज्य में गवर्नर और सीएम के दरम्यां रिश्तों में खटास से सब वाकिफ हैं। इसके बावजूद वह अपने पुत्र और मंत्रिमंडलीय सहयोगियों के साथ राज्यपाल आरएन रवि द्वारा स्वाधीनता दिवस पर राजभवन में आयोजित 'ऐट होम' में शरीक हुए जबकि अन्नाद्रमुक, कांग्रेस, एमएमके, एमडीएमके, वीसीके, सीपीआई और सीपीआई (एम) ने आयोजन का बहिष्कार किया। कांग्रेस नेता सेल्वापेरून्थगै ने कहा कि लोकतांत्रिक सरकार के कामों में गवर्नर के गैरजरूरी दखल के विरोधस्वरूप उनकी पार्टी राजभवन में आयोजन का बायकाट कर रही है। बहरहाल स्तालिन, स्पीकर अप्पाबू, मंत्रिगण दुरई मुरुगन, उदयनिधि, पेरियास्वामी, पोनमुडू, ईवी वेलू, पन्नीरसेल्वम, केकेएसएसआर रामचंद्रन और थायमथेंगारसू ने आयोजन में उपस्थिति दर्ज की। बीजेपी की तमिलनाडु ईकाई के मुखिया अन्नामलै स्वाभाविक तौर पर राजभवन में आयोजित महामहिम के इस उपक्रम में नजर आये।

मेहमान आ रहे हैं !

व्यंग्य

पूरन सरमा

मैंने अपने एक मित्र को फोन किया-'क्यों भाई क्या कर रहे हो ?' मित्र ने बहुत अनमने मन से उत्तर दिया-'अरे यार, रेलवे स्टेशन जा रहा हूँ, मेहमान आ रहे हैं।' मैंने हंसकर कहा-'क्यों मजाक कर रहे हैं, यह नयी सदी में मेहमनों का क्या लफड़ा है ? अब कौन मेहमान बनना पसंद करता है और मेजबान भी नहीं रहे।' मित्र ने जवाब दिया-'मजाक नहीं कर रहा, आज वाकई मेहमान आ रहे हैं और वह भी तीन दिनों के लिए।' मैंने उससे पूछा-'अब क्या करोगे तुम ?' मित्र एक पल चुप्पी साध गये और फिर बोले-'अब जो भी होगा, हो जायेगा। मेहमान भी बहुत नजदीक के हैं। टाला भी नहीं जा सकता।'

'लेकिन यार, यह तीन दिनों का टाइम कैसे निकाल लाये। अब तो मेहमान एक टाइम का होता है। यह तीन दिन तक उनकी सेवा में लगे रहना तो बड़ा मुश्किल है। यह तो बताओ उनकी संख्या कितनी है।' मैंने पूछा तो वे बोले-'पूरे परिवार सहित चारों सदस्य आ रहे हैं।'

मैंने कहा-'ठण्ड का वक्त है। रजाइयाँ तो है न घर में स्पेयर ?' मित्र बोले-'नहीं हैं यार, लेकिन टैंट हाऊस से ले आया हूँ।' 'और राशन पानी ?' मैंने पूछा।

वे बोले-'वह तो चिंता की बात नहीं है। सैलेरी परसों ही मिली है। पत्नी ने नाश्ते, लंच और डिनर का तीनों दिन का मैनू बना लिया है।'

मैंने कहा-'भैया ध्यान रखना, अपने शहर में पर्यटन स्थल कई हैं। कहीं वे अपना प्रोग्राम न बदल दें। मेरा मतलब ठहरने की अवधि पांच दिनों में न बदल जाये।'

मित्र ने बताया-'नहीं-नहीं, वह मैं दो दिनों में ही सलटा दूंगा ताकि तीसरे दिन तो वे खिसक ही लें। अच्छा मैं बाद में बात करूंगा। गाड़ी का टाइम हो गया है, अभी थ्री व्हीलर लेकर निकलता हूँ।' मैंने कहा-'आमीन, भगवान तुम्हारा हौंसला बनाये रखे।' यह कहकर फोन काट दिया।

फोन तो काट दिया, लेकिन मैं डर गया। मैंने पत्नी से कहा-'जल्दी एक कप चाय बनाओ। थोड़ा मन डिप्रेस सा हो गया है।' पलक झपकते पत्नी चाय बनाकर ले आई। मैंने कहा-'बैठो, सुनो वर्मा जी के मेहमान आ रहे हैं।' मेरी बात पर वह हंसी और बोली-'आने दो न। उनके तो आने भी चाहिए, बड़े इतराते फिरते हैं। अब पता चलेगा कि तीन दिन तक कैसे पराये आदमी को भुगतना पड़ता है। लेकिन आप डिप्रेस क्यों हो रहे हैं। यह तो खुशी की बात है कि मेहमान वर्मा जी के आ रहे हैं। हमारे तो आने से रहे।'

मैंने कहा-'वह तुम्हारे भाई-भाभी तो कह रहे थे अगले मंथ बैंगलौर से आने की।'

पत्नी के चेहरे की रंगत एक पल को बदली और वह बोली-'आरे वह तो घर के आदमी हैं। आ जायें तो क्या फर्क पड़ता है और फिर वे अगले मंथ आयेंगे। छोड़ो व्यर्थ की चिंता। चाय ठण्डी हो रही है।'

'चाय क्या, मैं तो अभी से ठण्डा हो रहा हूँ। वर्मा जी ने

बिस्तर टैंट हाऊस से मंगवाये हैं, अपने कैसे क्या रहेगा, क्योंकि सर्दी तो अगले मंथ में भी रहेगी और उन्हें सुलाना कहाँ है ? मेरा मतलब अपने पास किराये के कुल दो कमरे हैं। मेहमानों को सुलाना तो पड़ेगा न।' मैंने कहा।

पत्नी बोली-'आप, मैं और बच्चे एक जगह सो जायेंगे, उन्हें अपना वाला बैडरूम दे देंगे। आप क्यों फिक्र करते हैं। मैं सब मैनेज कर लूंगी।' मैंने कहा-'लेकिन भागवान वे बीस को आयेंगे। बीस तक तो सैलेरी तार-तार हो जाती है। मैं पी.एफ से लोन एप्लाई कर देता हूँ।' इस बार पत्नी के कान चौकन्ने हुये, बोली-'यह आपकी व्यवस्था है, जो भी करना हो, करलो। पैसा तो खर्च होगा ही।'

'लेकिन तुम एक वार कन्फर्म तो कर लो, कहीं उन्होंने प्रोग्राम कैंसिल कर दिया हो तो, अपन क्यों करेशान हों।' पत्नी ने झट से फोन लगाया-फोन उसकी भाभी ने उठाया था। बातचीत में उसने सारी जानकारी कर ली और फोन का चोगा रखकर मुझसे बोली-'सुनो, मेहमान आ ही रहे हैं।' मैंने लिहाफ तान लिया और गुस्से से तिलमिलाता रहा। पत्नी उठकर चली गई थी।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि., राउखेड़ी, देवास रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईं कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.) - गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक - अजय बोकिल
स्थानीय संपादक - हेमंत पाल
प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

शांतिलाल जैन

लेखक व्यंग्यकार हैं।

अवगुन उनके, तो चित्त धरने का तो सवाल ही नहीं है

आप सिर्फ इतना करें श्रीमान कि तूती को सीटी से रिप्लेस कर दें। नक्कारखाने में गुम यह भी, वह भी। व्हीसिल ब्लोअर ने तो बजा दी मगर जिन्हें सुनना था उन्होंने कानों में कपास के फाहे लगा लिए। सीटी से निकली आवाज़ का जिन्हें शिद्दत से संज्ञान लेना था, सरकारी रिकार्ड से मिलान करना था, नियमों की कसौटी पर परखना था, ईमान की तराजू में तौलना था, नैतिकता के मानदंडों पर लिटमस टेस्ट लगाना था, सही पाए जाने पर मुकदमा करना था, सजा दिलानी थी उनका ईशारा पाकर नौबत बजानेवालों ने वॉल्यूम इस कदर बढ़ाया कि सीटी की आवाज़ नक्कारखाने में गुम हो कर रह गई। ये आला पदों पर बैठे जननायकों की जिम्मेदारी थी कि नक्कारखाने का शोर रुकवाकर सीटी की आवाज़ सुनते, गुनते, मगर उन्होंने तो सीटी के मुकाबिल नौबत बजानेवालों को ही थोक के भाव में मैदान में उतार दिया।

बहरहाल, आर्यावर्त के नक्कारखाने में भले व्हीसिल सुनाई दी हो, न दी हो, अंकल सैम के देश में एक शॉर्ट्सेलर ने जरूर सुन ली। जिनकी अपनी जिम्मेदारी थी दलाल स्ट्रीट में सीटी बजाने की, शॉर्ट्सेलर ने उनके लिए सीटी बजा दी। और कुछ इस तरह बजाई कि मद्धम ही सही नक्कारखाने में भी सुनाई तो पड़ गई।

कुछ सिरफिरे हैं आर्यावर्त में, व्हीसिल सुनी और नीति नियंताओं से कहा- प्रभु, संज्ञान लीजिए, इसे सुनिए तो, जाँचिये तो, कुछ न निकले तो कोई बात नहीं, निकले तब तो कुछ करिएगा। प्रभु ने खारिज़ कर दिया। अवगुन उनके हैं तो चित्त धरने का तो सवाल ही नहीं है।

आदेश जारी हुआ- 'नौबत और तेज़ बजाई जाए।'

'प्रभु इतनी तेज़ बजाएँगे तो छोटे निवेशक बहरे हो जाएँगे।'

'सो व्हाट ! वे सीटी सुनने का गुनाह कर भी तो रहे हैं।'

'सीटी सुनना कब से गुनाह हो गया प्रभु। वह तो हमेशा ही सावधान करने के लिए बजाई जाती रही है।'

'देशविरोधियों की सीटी सुनना भी देशविरोध ही कहाएगा। बजानेवाला अंकल सैम के देश से है।'

'प्रभु, दाग इस बार पहरेदार के दामन पर ही निकल आए हैं। सीटी बजैया ने जिन तथ्यों और दस्तावेजों को मुहैया करवाया है पहरेदार ने उनसे इंकार नहीं किया है। गलत हैं, जाली हैं, फर्जी हैं - नहीं कहा। कहा कि ये चरित्र हनन का प्रयास है। सीटी से सच के स्वर निकल भी रहे हैं तो क्या, बजानेवाले की नीयत में खोट जो है। पहरेदार ने अपने बचाव में आरोपों को झुठलाया नहीं है बल्कि उसे पूँजी बाज़ार से होते हुए देशप्रेम से जोड़ दिया है। वित्तीय अनियमितताएँ ढँक कर रखना देशप्रेम है, सीटी बजाकर पक्षकारों को सावधान करना राष्ट्रद्रोह है!!'

प्रभु बोले - 'सीटी बजानेवाले टूलकिट के हिस्सा हैं। रही बात दाग की तो वो हम देख लेंगे। जो सीटी से निकल रहा है वो हमें पहले ही पता है। हमने ही उन्हें पहरेदार बनाया है। बनाए रखेंगे भी।'

'सीज़र की वाईफ को सस्पिशन के अबूव होना चाहिए, प्रभु।'

'जिसकी वाईफ है उसकी मर्ज़ी। वो सस्पिशन के बिलो रखे, एट-पार रखे, अबूव रखे, मोर अबूव रखे, लेस अबूव रखे, दी अबूवेस्ट रखे, दी बिलोएस्ट रखे - आप कौन? खामोखाँ। ये हसबंड वाईफ के बीच का मामला है, नो सीटी बजाओ झोन। चलिए धरिए अपनी सीटी अपनी ज़ेब में और निकलिए वरना एक दिन तुम्हारी ये फूँकनी तुम्हारे ही फेफड़े फूँक डालेगी।

वही हुआ, जिद्दी व्हिसिल ब्लोअर्स। सीटी बजाते रहे, हाँफते रहे, बजाते रहे। हाँफ-हाँफ कर बजाते रहे, बजा-बजा कर हाँफते रहे। शीऽऽऽऽऽऽऽ जिनकी जाँच करनी थी उन्हीं की कंपनी में पैसा लगा है, शीऽऽऽऽऽऽऽ टैक्स हेवन कंट्री में बेनामी फण्ड में लगा है, शीऽऽऽऽऽऽऽ अपनी ही रीट को प्रमोट किया है, शीऽऽऽऽऽऽऽ आला कुर्सी पर विराज कर भी कंपनी में कमाई करती रहीं, शीऽऽऽऽऽऽऽ - जैसी तमाम आवाजें व्हिसिल से निकलती रहीं और नक्कारखाने में गुम होती रहीं, गुम की जाती रहीं। हांफते हांफते सीटी और सिटी बजैया दम तोड़ देने की पोजीशन में आ गए हैं। एक दो रोज़ में खामोश भी हो ही जाएँगे। वे खामोश न हों तो भी आपके हमारे लिए आर्यावर्त में बहरे होकर जीना ही सर्वश्रेष्ठ उपाय है।

और वाचडॉग ? उसे लैपडॉग में बदलते हुए देखते रहिए श्रीमान।

कानून और न्याय

विनय झैलावत

(पूर्व असिस्टेंट सॉलिसिटर जनरल एवं वरिष्ठ अधिवक्ता)

मनीष सिसोदिया मामला

जमानत नियम और जेल अपवाद का आदर्श उदाहरण

प्रवर्तन निदेशालय के इस मामले में मनीष सिसोदिया को जमानत देने का निर्णय व्यक्तिगत स्वतंत्रता के सिद्धांतों, बेगुनाही की धारणा और निष्पक्ष सुनवाई के अधिकार को बनाए रखने के लिए न्यायपालिका की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है। हालांकि भ्रष्टाचार और धन शोधन के आरोप गंभीर है।

यह मामला दिल्ली के पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया द्वारा भ्रष्टाचार, मनी लॉन्ड्रिंग और नीतिगत हेरफेर के आरोपों के इर्द-गिर्द घूमता है। विवाद वर्ष 2021-22 के लिए दिल्ली आबकारी नीति से उभरा। इसे दिल्ली सरकार ने आम आदमी पार्टी के नेतृत्व में पेश किया था। इस नीति का उद्देश्य दिल्ली में शराब के व्यवसाय में सुधार करना था। लेकिन यह जल्द ही जांच और जांच का विषय बन गया। 20 जुलाई, 2022 को दिल्ली के तत्कालीन उप राज्यपाल विनय कुमार सक्सेना ने दिल्ली आबकारी नीति के निर्माण और कार्यान्वयन में अनियमितताओं का आरोप लगाते हुए एक पत्र लिखा। गृह मंत्रालय ने 22 जुलाई, 2022 को मामले की जांच का निर्देश दिया। आरोप यह था कि नीति वित्तीय रिश्वत के बदले में कुछ निजी संस्थाओं का पक्ष लेती है।

26 फरवरी, 2023 को मनीष सिसोदिया को केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) द्वारा एक जांच में कथित रूप से भ्रष्टाचार घोटाले में उनकी संलिप्तता का खुलासा होने के बाद गिरफ्तार किया गया था। 25 अप्रैल, 2023 को सीबीआई ने आईपीसी के तहत कई अपराधों के साथ-साथ भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988 के विभिन्न प्रावधानों के तहत अपराधों का हवाला देते हुए आरोपी के खिलाफ आरोप पत्र दायर किया। अभियुक्तों द्वारा प्रारंभिक जमानत याचिकाओं को दिल्ली उच्च न्यायालय द्वारा खारिज कर दिया गया था। इसके अलावा, सर्वोच्च न्यायालय ने भी 30 अक्टूबर, 2023 के एक सामान्य आदेष में भी उनकी जमानत याचिकाओं को खारिज कर दिया। लेकिन उन टिप्पणियों की अनुमति दी जो भविष्य की कार्यवाही के लिए प्रासंगिक हो सकती है।

उच्चतम न्यायालय के फैसले के बाद, अभियुक्त ने 27 जनवरी, 2024 को निचली अदालत के समक्ष दूसरी जमानत याचिका दायर की। अधीनस्थ न्यायालय ने 30 अप्रैल, 2024 को परिस्थितियों में कोई बदलाव नहीं होने का हवाला देते हुए जमानत याचिका को खारिज कर दिया। 2 मई, 2024 को अभियुक्त ने उच्च न्यायालय के समक्ष दूसरी जमानत याचिका दायर की। इसे 21 मई, 2024 को खारिज कर दिया गया। इसके बाद आरोपी ने विशेष अनुमति याचिका के माध्यम से उच्चतम न्यायालय का दरवाजा खटखटाया। सर्वोच्च न्यायालय ने 4 जून, 2024 को मामले की सुनवाई की और सॉलिसिटर जनरल का आश्वासन दर्ज किया कि जांच पूरी हो जाएगी और 3 जुलाई, 2024 तक अंतिम आरोप पत्र दायर किया जाएगा।

अंतिम आरोप पत्र दायर होने के बाद, सिसोदिया ने जुलाई 2024 में एक बार फिर सर्वोच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया। इसके कारण ईडी और सीबीआई द्वारा उनकी अपीलों का विरोध करते हुए नोटिस जारी किए गए और जवाबी हलफनामे दायर किए गए। इस मामले में प्राथमिकी कानूनी मुद्दा विधिक प्रश्न से संबंधित था। विधिक प्रश्न यह था कि क्या भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988, भारतीय दंड संहिता, 1860, धन शोधन निवारण अधिनियम, 2002 के अधीन अभियुक्त को जमानत दी जानी चाहिए, जबकि अपीलार्थी को पहले ही लंबे समय तक कारावास का सामना करना पड़ा है?

सर्वोच्च न्यायालय ने अभी हाल ही में 9 अगस्त, 2024 को दिल्ली के पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया को जमानत दी है। सिसोदिया को 26 फरवरी, 2023 को केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) और फिर 9 मार्च, 2023 को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा गिरफ्तार किया गया था। सर्वोच्च न्यायालय मई, 2024 में दिल्ली उच्च न्यायालय द्वारा उन्हें जमानत देने से इंकार करने के खिलाफ अपील पर सुनवाई कर रहा था। यह निर्णय तीन कारणों से उल्लेखनीय है। एक तो यह कि यह देश की सभी अदालतों को सदियों पुराने सिद्धांत की पुष्टि और याद दिलाता है कि जमानत नियम है और जेल अपवाद है। दूसरा त्वरित सुनवाई के अधिकार का सम्मान किया जाना चाहिए। तीसरा मुकदमे की प्रतीक्षा करते हुए किसी अभियुक्त को असीमित अवधि के लिए सलाखों के पीछे रखना संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत उसके जीवन के अधिकार का उल्लंघन करता है। अंत में, लंबी अवधि के लिए कारावास के साथ-साथ देरी के मामलों में जमानत के अधिकार को दंड प्रक्रिया संहिता, 1972 (सीआरपीसी) और धन शोधन निवारण अधिनियम, 2002 के जमानत प्रावधानों में पढ़ा जाना चाहिए।

ईडी और सीबीआई ने तर्क दिया कि सिसोदिया के खिलाफ आरोप गंभीर थे, जिसमें बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार और परिष्कृत धन शोधन योजनाएं शामिल थीं। उन्होंने तर्क दिया कि व्यक्तिगत लाभ के लिए सार्वजनिक नीति में हेरफेर करने पर कड़ी कार्रवाई की आवश्यकता है। सबूतों के साथ छेड़छाड़ पर अभियोजन पक्ष ने चिंता व्यक्त की। कहा गया कि अगर जमानत दी जाती है, तो सिसोदिया अपने राजनीतिक प्रभाव के कारण सबूतों के साथ संभावित रूप से छेड़छाड़ कर सकते हैं या गवाहों को प्रभावित कर सकते हैं। बचाव पक्ष ने तर्क दिया कि सिसोदिया के खिलाफ आरोप राजनीति से प्रेरित थे, जो उनकी और उनके राजनीतिक दल की छवि को धूमिल करने के लिए बनाए गए थे। उन्होंने तर्क दिया कि यह

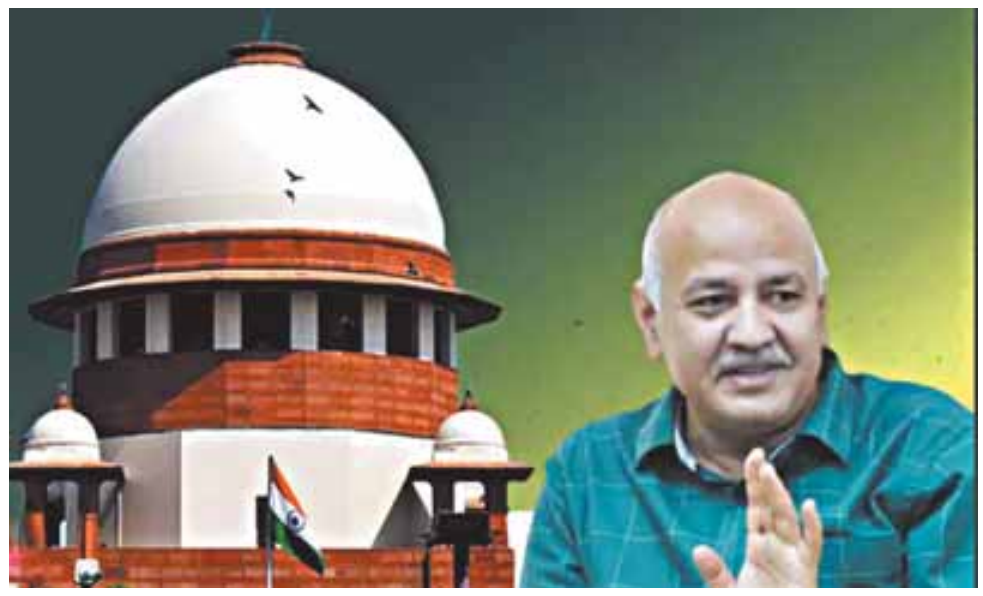

मामला राजनीतिक उद्देश्यों के लिए केंद्रीय जांच एजेंसियों का उपयोग करने के एक व्यापक पैटर्न का हिस्सा था। पर्याप्त साक्ष्य की कमी बचाव पक्ष ने साक्ष्य की वास्तविक प्रकृति पर सवाल उठाते हुए तर्क दिया कि सिसोदिया को कथित अपराधों से जोड़ने का कोई प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं है। उन्होंने मुकदमे में पर्याप्त प्रगति के बिना मुकदमे से पहले हिरासत की लंबी प्रकृति पर भी प्रकाश डाला। जमानत का अधिकार प्राकृतिक न्याय और मानवाधिकारों के सिद्धांतों का हवाला देते हुए, बचाव पक्ष ने इस बात पर जोर दिया कि जमानत नियम है और जेल अपवाद है, खासकर जब मुकदमा लंबे समय तक चलने की संभावना हो।

उच्चतम न्यायालय ने सभी प्रासंगिक तथ्यों पर विचार किया था और जमानत देने में एक स्पष्ट निष्कर्ष निकाला। सर्वोच्च न्यायालय ने जमानत देते समय सिसोदिया द्वारा हिरासत में बिताए गए समय, अब तक प्रस्तुत किए गए साक्ष्य और जमानत के संबंध में पिछले ऐतिहासिक मामलों में स्थापित सिद्धांतों पर विचार किया। पी.चिदंबरम बनाम प्रवर्तन निदेशालय (2019) के मामले में एक हाई-प्रोफाइल राजनीतिक व्यक्ति के खिलाफ भ्रष्टाचार और धन शोधन के इसी तरह के आरोप लगाए गए थे। सर्वोच्च न्यायालय के फैसले ने न्याय की आवश्यकताओं के साथ अभियुक्तों के अधिकारों को संतुलित करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। विशेष रूप से राजनीतिक हस्तियों से जुड़े मामलों में। राजस्थान बनाम बालचंद (1977) के मामले में यह सिद्धांत स्थापित किया गया था कि जमानत आदर्श है और जेल अपवाद है। यह भारत के संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत व्यक्तिगत स्वतंत्रता और स्वतंत्र रूप से जीने के अधिकार के महत्व पर जोर देता है। इसके अतिरिक्त, संजय चंद्र बनाम सीबीआई (2011) के मामले में उच्चतम न्यायालय ने एक हाई-प्रोफाइल भ्रष्टाचार के मामले में जमानत प्रदान की थी।

इसके अलावा वर्तमान मामले में, अदालत ने मुकदमे की प्रगति और इस तथ्य पर भी विचार किया। अंतिम आरोप पत्र दाखिल करने के साथ जांच पूरी होने वाली है, जिससे सबूतों के साथ छेड़छाड़ का खतरा कम हो गया। इसके अलावा, न्यायालय का यह भी मानना था कि मामला काफी हद तक दस्तावेजी साक्ष्य पर निर्भर करता है। इसे अभियोजन पक्ष पहले ही जब्त कर चुका है। इसलिए सबूतों के साथ छेड़छाड़ की संभावना नहीं है। सर्वोच्च न्यायालय का यह आदेश आरोपों की गंभीरता और न्याय के सिद्धांतों के बीच संतुलन को भी दर्शाता है। आरोपों की गंभीरता को स्वीकार करते हुए, सर्वोच्च न्यायालय ने मुकदमे से पहले हिरासत की अवधि, जांच के चरण और प्रस्तुत साक्ष्य पर भी विचार किया है।

प्रवर्तन निदेशालय के इस मामले में मनीष सिसोदिया को जमानत देने का निर्णय व्यक्तिगत स्वतंत्रता के सिद्धांतों, बेगुनाही की धारणा और निष्पक्ष सुनवाई के अधिकार को बनाए रखने के लिए न्यायपालिका की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है। हालांकि भ्रष्टाचार और धन शोधन के आरोप गंभीर है। ऐसा प्रतीत होता है कि सर्वोच्च न्यायालय ने मुकदमे से पहले हिरासत को सजा का एक रूप बनने से बचने की आवश्यकता के खिलाफ सिद्धांत को संतुलित किया है। जमानत देकर सर्वोच्च न्यायालय ने इस सिद्धांत को मजबूत किया है कि जमानत आदर्श है और जेल अपवाद है, आपराधिक न्यायशास्त्र की आधारशिला है। इसलिए मनीष सिसोदिया बनाम प्रवर्तन निदेशालय का न्यायदृष्टांत गंभीर आर्थिक अपराधों से जुड़े मामलों में व्यक्ति के अधिकारों और न्याय की मांगों के बीच नाजुक संतुलन का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है, जो भविष्य में मील का पत्थर साबित होगा।

रक्षाबंधन

डॉ. ज्योति सिडाना

रक्षा के सूत्र को चुनौती

भारत में सभी समुदायों के बीच एकता और भाईचारे के प्रतीक के रूप में रक्षा बंधन की अवधारणा की शुरुआत हुई थी। रक्षाबंधन न केवल भाई-बहनों के बीच बल्कि विभिन्न धर्मों, वर्गों और जातियों के लोगों के बीच सुरक्षा के बंधन का प्रतीक माना जाता रहा है। कुछ प्रसिद्ध फिल्मी गानों की लाइने याद कीजिए जिसमे एक बहन अपने भाई को संबोधित करते हुए गाती है 'भैया मेरे राखी के बंधन को निभाना' या फिर एक भाई द्वारा बहन के लिए यह कहना 'देख सकता हूँ मैं कुछ भी होते हुए, नहीं मै नहीं देख सकता तुझे रोते हुए' भाई-बहन के प्यार और विश्वास को व्यक्त करते नजर आते थे या फिर 'भैया मेरे राखी के बंधन को निभाना'। परन्तु आज के दौर में ऐसा कोई गाना प्रचलित नहीं है संभवतः क्योंकि अब भाई-बहन के रिश्ते ही नहीं अधिकांश रिश्ते अपना अर्थ खो चुके हैं या खोते जा रहे हैं। भाई-बहन, माता-पिता, मित्र, दादा-दादी, मामा-चाचा ऐसा कोई रिश्ता नहीं दिखाई देता जिस पर आज के समय में लोग विश्वास कर सके। आये दिन समाचार पत्रों में प्रकाशित खबरों से इन रिश्तों पर संकट के बादल मंडराने लगे हैं जिन्हें हम विश्वास का संकट कह सकते हैं।

ऐसा कहा जाता है कि किसी भी त्योहार को मनाने के पीछे कोई न कोई इतिहास या कारण जरुर होता है और भारत को त्योहारों का देश कहा जाये तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। इतिहासकर कहते हैं कि मेवाड़ की रानी कर्णावती को गुजरात के सुल्तान बहादुरशाह द्वारा मेवाड़ पर हमला करने की पूर्व सूचना मिली। रानी लड़ने में असमर्थ थी। अतः उन्होंने मुगल बादशाह हुमायूं को राखी भेज कर मेवाड़ की रक्षा करने का आग्रह किया। हुमायूं ने बहादुरशाह के विरूद्ध मेवाड़ की ओर से लड़ते हुए प्रदेश की रक्षा की। क्या आज किसी भी त्योहार को उसी जज्बे से मनाया जाता है, जिस जज्बे से हमारे पूर्वज मनाते थे, संभवतः नहीं। ऐसा ही एक त्योहार है रक्षा बंधन जिसमें भाई-बहन की, बच्चे अपने वृद्ध माता-पिता की और गुरु-शिष्य की रक्षा का वचन देता है, पर आज के इस अनिश्चितता के दौर में यह त्योहार भी बेमानी लगने लगा है। पहले एक कच्चे धागे को किसी व्यक्ति की कलाई पर बांध देने से भाई-बहन का रिश्ता बन जाता था और खून का रिश्ता न होते हुए भी वे परस्पर उस रिश्ते को गंभीरता से निभाते थे। और आज एक दौर ऐसा आया है जब सगे भाई-बहन भी इस रिश्ते को निभाने से कतराते हैं। अब रिश्ते में सम्मान इस बात पर निर्भर करता है कि बहन की राखी की कीमत कितनी है या उसके दिए हुए उपहार कितने मूल्यवान है उसी के आधार पर उन्हें सम्मान और प्यार मिलता है। बहनों के घर आने के साथ ही पूछ लिया जाता है कि कितने दिन रहोगी या कब जाओगी। कितने अजीब रिश्ते है यहाँ पे, दो पल मिलते हैं साथ-साथ चलते हैं, जब मोड़ आये तो बच के निकलते हैं।

समाचारपत्र आये दिन ऐसी ख़बरों से पटे रहते हैं, पिता द्वारा अपनी पुत्री का, भाई द्वारा अपनी बहन का, पति द्वारा पत्नी का, गुरु के द्वारा शिष्या का और एक दोस्त द्वारा अपनी महिला मित्र का बलात्कार किया गया। इन खबरों को पढ़कर संभवतः अब हमारे रोंगटे भी नहीं खड़े होते क्योंकि अब यह रोजमर्रा की बात हो गई है। हर रिश्ते पर विश्वास का संकट मंडराता नजर आने लगा है, अधिकांश व्यक्ति सिर्फ अपने लिए जीने की राह पर हैं न पति, न पत्नी, न माँ, न बाप, न भाई, न बहन, और न ही बच्चों के लिए, सिर्फ अपने लिए ही जीते हैं। भाई-भाई से और भाई-बहन से अपना हाल नहीं बाँटते, कभी उन्हें फ़ोन करके उनकी खैरियत नहीं पूछते, ऐसे में रक्षाबंधन का भावनात्मक त्योहार एक औपचारिकता ग्रहण करता नजर आता है? माँ-बाप को केवल संपत्ति के लिए ही पूछा जाने लगा है जहाँ संपत्ति का बँटवारा हुआ माँ-बाप पहुँच जाते हैं वृद्धाश्रम या फिर घर में ही उपेक्षित की जिन्दगी जीने के लिए विवश होते हैं। अब परिवार का मतलब पति-पत्नी और उनके बच्चों से लिया जाता है जिसमें और किसी रिश्ते की कोई जगह नहीं होती। टीवी धारावाहिकों की तरह ही परिवार का हर सदस्य दूसरे के प्रति षड्यंत्र करता नजर आने लगा है, क्या इसी तरह के समाज की कल्पना हमारे पूर्वजों ने की थी और परिवार संस्था की नींव रखी थी? जहाँ न भावनात्मकता है, न विश्वास और न एक दूसरे की फिक्र, सिर्फ स्वार्थ है।

परिवार जिसे बच्चे की प्रथम पाठशाला या प्राथमिक समूह कहा जाता है जहाँ उसके अस्तित्व को एक पहचान मिलती है, जीवन जीने के लिए तैयार किया जाता है, संघर्षों से लड़ने की शिक्षा दी जाती है और एक अच्छा इंसान बनाने का प्रयास किया जाता है, वही परिवार एक समय के बाद उसे अपने विकास और तरक्की में बाधक लगने लगता है, जो भाई-बहन हर मुश्किल में उसकी ढाल बनते थे वो अब दुश्मन नजर आने लगते हैं? कितना हास्यास्पद है न? आज हसरत जयपुरी की यह पंक्तियाँ बहुत ही प्रासंगिक लगने लगी हैं, दुनिया बनाने वाले क्या तेरे मन में समायी, काहे को दुनिया बनायीं। आज के इस भौतिकतावादी समाज में परिवार, विवाह, नातेदारी, धर्म, विश्वास, समाज और यहाँ तक कि राज्य भी सब किसी न किसी प्रकार के जोखिम का सामना कर रहे हैं। ऐसे में एक आदर्श समाज या सभ्य समाज की स्थापना के लिए गहन चिंतन करना जरुरी हो गया है यदि अभी भी समाज नहीं चेता तो बहुत देर हो जाएगी। भारत देश तो त्योहारों का देश रहा है जहाँ हर दिन एक त्यौहार मनाया जाता है, जहाँ नदियों, वृक्षों, पशु-पक्षियों यहाँ तक मूर्तियों की भी पूजा होती है फिर वहां इंसान कैसे उपेक्षित होता जा रहा है? खास तौर पर वर्तमान युवा और किशोर पीढ़ी जो तेजी से विकसित होती टेक्नोलॉजी में इतनी खो गयी है कि उसे जीवित इंसान या भावनात्मक रिश्ते दिखाई नहीं देते। टेक्नोलॉजी ने इस पीढ़ी को मशीन/रोबोट में बदल दिया है, जिसके पास भावनाए नहीं हैं जो अत्यंत व्यक्तिवादी होता जा रहा है। ज़िमरमैन ने परिवार में होने वाले परिवर्तनों के चक्र को तीन चरणों में प्रस्तुत किया हैः ट्रस्टी परिवार, घरेलू परिवार और परमाणु परिवार । ट्रस्टी परिवार उस स्थिति को व्यक्त करता है जहाँ परिवार राज्य-जैसे कार्य करता है जो परिवार के सदस्यों को नियंत्रित करने और उनकी देखरेख करने के लिए अपनी शक्ति का प्रयोग करता है। इसके अलावा घरेलू परिवार राज्य और समाज के बीच संतुलन स्थापित करता है। राज्य और परिवार एक दूसरे के बीच प्रभाव साझा करते हैं जबकि राज्य पहले से ही परिवार के सदस्यों पर नियंत्रण प्राप्त कर चुका होता है। जबकि परमाणु परिवार में एक ओर परिवार के नियंत्रण में कमी और समाज के भीतर राज्य की मजबूत स्थिति और दूसरी ओर समाज के भीतर व्यक्तिगत विचार के प्रसार के कारण राज्य के पास असीमित शक्ति होती है। परमाणु परिवार में भी पति, पत्नी और बच्चे शामिल हो सकते हैं हालाँकि, उनके बीच के संबंध अब परिवार का अर्थ स्पष्ट नहीं करते हैं जैसा कि पहले था।

इस नयी मीडिया संस्कृति ने युवा पीढ़ी में ऐसा भ्रम पैदा किया है कि वे इंटरनेट को अपनी तमाम समस्याओं का समाधान कर्त्ता मानने लगे हैं, इसलिए अब उन्हें परिवार या अन्य रिश्तों की आवश्यकता नहीं। अतः आवश्यक है कि समय रहते शिक्षक, बुद्धिजीवी वर्ग, राज्य और विषय विशेषज्ञ अपनी सक्रिय सहभागिता द्वारा इस समाज को एक बार पुनः बर्बर समाज की तरफ जाने से रोक लें, जहाँ मनुष्य और पशु के बीच का अंतर समाप्त हो जाता है। अन्यथा सभ्य समाज एक इतिहास बनकर रह जायेगा और भावी पीढ़ी इसे केवल किताबों के पन्नों में देखेगी।

सावन विशेष

प्रो. कन्हैया त्रिपाठी

लेखक भारत के राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी रह चुके हैं। केंद्रीय विश्वविद्यालय पंजाब में चेयर प्रोफेसर हैं।

शिवत्व ही है सार्वभौमिक अहिंसक संकल्पना

सावन के अंतिम सोमवार का अपना महत्व है। यह सोमवार तो रक्षाबंधन के दिन पड़ रहा है। यह बहुत ही शुभ है इसलिए भी। शास्त्रोक्त सूत्र पढ़ते हुए हमें मिलता है-

रुद्रहृदयोपनिषद् में यह रूद्र मंत्र है, इसका पाठ हर व्यक्ति को करना चाहिए। उसके पाठ के साथ उसे जीवन में उतारना भी चाहिए। यथा कहा गया है-

सर्वदेवात्मको रुद्रः सर्वे देवाः शिवात्मकाः।
रुद्रात्प्रवर्तते बीजं बीजयोनिर्जनार्दनः।।
यो रुद्रः स स्वयं ब्रह्मा यो ब्रह्मा स हुताशनः।
ब्रह्मविष्णुमयो रुद्र अग्नीषोमात्मकं जगत्।।

अर्थात् भगवान रूद्र ही जग सृष्टिकर्ता ब्रह्मा तथा जग पालन पोषण करता विष्णु हैं और सभी देवता रुद्र के ही अंश हैं। इस सम्पूर्ण चराचर जगत में सभी कुछ रुद्र से ही जन्मा हुआ है। इससे यह सिद्ध होता है कि रूद्र ही ब्रह्म हैं और वही स्वयंभू भी हैं।

सावन के महीने में शिव की पूजा अर्चना की जा रही है. सभी शिवमय होकर अपने आराध्य देव भगवान भोले की आराधना कर रहे हैं। कहते हैं शिव की यदि कृपा हो जाए तो सभी मनोवांछित फल मिल जाते हैं. लेकिन शिव से जो सभी को मिलता है उसको लोग संभवतः नहीं जानते। वह है शिव से शिवत्व की प्राप्ति।

शिव के बारे में हम सभी जानते हैं कि उनके आसपास एक जो समूह विराजित होता है, वह अद्भुत है। नंदी, सर्प, मूसक, व्याघ्र इन्हें सब देख सकते हैं. शिव की जब कल्पना की जाती है तो ये सब दिखाई देते हैं। ये सभी एक दूसरे को प्रकृति में अपना आहार बनाते हुए मिलते हैं लेकिन शिव के पास तो यह सभी उन्मुक्त होकर, निर्विकार होकर, निर्भय होकर रहते हैं। सह-अस्तित्व का एक अद्भुत रूपक जो शिव के पास से मिलता है वह कहीं नहीं मिलता। भारतीय धर्म शास्त्र एक ऐसे देवता की कल्पना करते हैं, एक ऐसे ईश्वर की जो विद्यमान है और शाश्वत है लेकिन अहिंसक सभ्यता का सचमुच निर्माता है, ऐसा प्रतीत होता है।

भगवान श्रीराम ने भी शिव की आराधना की। शास्त्र बताते हैं कि शिव ने पार्वती माता को त्रेता के श्रीराम की पूर्ण कथा सुनाई थी। यह जो परमब्रह्म भगवान् श्रीराम हैं वह भगवान् शिव के मुखारविंद से विभूषित आराध्य हैं जिन्हें भगवान विष्णु का अवतार माना जाता है। ऐसे शिव के स्त्रोत की पूजा से निर्विघ्न कार्य संपन्न होते हैं और पर्याप्त उस ऊर्जा का संचार होता है, जिससे जीव अपने अभीष्ट की प्राप्ति करता है। रामचरित मानस के अयोध्याकांड में तुलसीदास ने ये चौपाइयां उस प्रसंग में लिखी हैं जिसमें राम के राज्याभिषेक के बजाय वन जाने की बात से दुखी राजा दशरथ पुत्र राम को देखकर भगवान शिव की स्तुति करते हैं। 'सुमिरि महेसहि कहई निहोरी, बिनती सुनहु सदाशिव मोरी'। 'आशुतोष तुम औघड़ दानी, आरति हरहु दीन जनु जानी।।' जिसकी पूजा इस स्तर पर की जाती हो, जहाँ श्रीराम स्वयं परम ब्रह्म हैं और शिव असीम, उस विराटता को समझा जा सकता है।

शिव ही सत्य, शिव अनादि, शिव अंनत, ऐसे महनीय कल्पना के अस्तित्व में अहिंसा प्रतिष्ठित है। सत्य ही तो अहिंसा का एक नाम है. उस अहिंसा रूपी असीम सत्ता के आसपास फिर कैसे अहिंसा न होगी चाहे हमें प्रकृति में वैरी प्राणी भले देखने को मिलते हों, वे उस सत्ता के आसपास जायेंगे तो निश्चय ही अपने अस्तिव् के समाप्ति के साथ उस असीम शक्ति में विलीन होते हुए मिलेंगे।

मनुष्य के भीतर विवेक है। वह सर्वोत्तम सोच वाली ईश्वर की कृति माना गया है। प्राणियों के भीतर यदि उस असीम शिव में समाहित हो जाने की अकल्पनीय संवेदना है, तो यह मनुष्य जो लड़ता रहता है, वह क्यों शिव की साधना के साथ पाया जाने वाला प्राणी, हिंसा करता है, यह प्रश्न है। इसी महत्वपूर्ण जिज्ञासा की शांति यदि कर ली जाए तो यह कहा जा सकता है कि जिस शांतिप्रिय, सह-अस्तित्वशील, व निर्भीक प्रकृति वाले समाज की हम कल्पना कर रहे हैं, वह प्रत्यक्ष दिखे भी। शिव का साधक तो अनुशासन व संयम से आबद्ध होता है फिर वह आपस में लड़ता क्यों है? इसका तो अर्थ यही हुआ कि जो भोर में शिव की साधना करने व्यक्ति जा रहा है, वह शांत है, वह उसी समय शांत है उसके बाद वह जानवर है। यदि ऐसा नहीं होता तो शिव के आसपास रहने वाले जंगल में जब होते हैं तो वे एक दूसरे के भक्षक होते हैं और उनके सामने शांत हैं तो, प्रवृत्ति तो एक सी ही हुई। इस पर से एक प्रश्न यह है कि क्या मनुष्य जो शिवत्व को प्राप्त करने का स्वांग रचता है वह अंततः एक मनुष्य के जंगल का जीव है? तब तो वह भी तो वही हुआ न, क्योंकि उसकी भी प्रवृत्ति तो

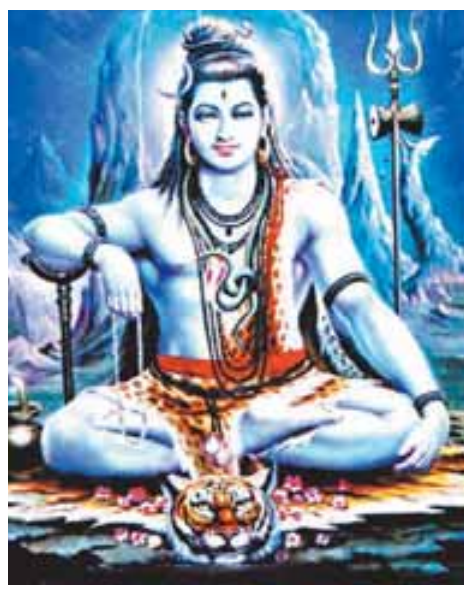

लड़ने, डंसने और लील जाने की हुई। वह अतिक्रमण करके ही यदि जीवन जी रहा है तो कैसा शिवत्व प्राप्तकर्ता है?

सत्य का अन्वेषण और सत्य का सहभागी भी मनुष्य स्वयं को कहता है। वह यह दावा करता है कि उसने शिव को सिद्ध कर लिया है लेकिन मिथ्यालाप व प्रपंच से बाज नहीं आता। वह झूठ बोलता है। राजनीति करने वाला व्यक्ति हो, वकील हो, डॉक्टर हो या पुलिस, किसी कामकाजी व्यक्ति का उदहारण ले लें वह अपने अपने पेशे में कितना नैतिक है और कितना एक दूसरे का भंजक, यह आंकलन ही सिद्ध कर देगा की शिवत्व का दावा करने वाला व्यक्ति कितना शिवत्व को अपने जीवन का हिस्सा बनाया है। इस मनुष्य के जंगल में ऋषि व संत भी हैं, उनका माना जा सकता है की वे शिवत्व को पाने में कामयाब हुए हैं। उनका इसलिए माना जा सकता है क्योंकि उन्हें किसी भी चीज की इच्छा नहीं है, कामना नहीं है, वे त्याग करके सर्वहित में अपने पुण्य को विखरने के लिए जी रहे हैं।

उन्मुक्त होकर विमुक्त भाव से त्याग में तल्लीन जीवात्माएं शिवत्व की असली भागीदार होती हैं। भोले बाबा के बारे में कहा जाता है की वह बहुत जल्दी खुश होते हैं और बहुत जल्दी ही बहुत कुछ अपने भक्तों को दे देते हैं। शायद किसी ने यह नहीं ईश्वर से माँगा की उन्हें उनके मनोवांछित उपलब्धियों के साथ शिव की अहिंसा साधना भी दी जाये ताकि वे एक उदाहरण इस प्रकार का प्रस्तुत कर सकें कि सत्य का वरण करते हुए एक अहिंसक औरा कैसे स्थापित किया जा सकता है जहाँ सभी आकर भयमुक्त हों, सभी स्वयं को भूलकर उस असीमता को धारण करें जिसमें हिंसा की कोई जगह नहीं हो।

अहिंसा में शांति सम्मिलित होती है लेकिन शांति के लिए अहिंसा ज़रूरी है। भगवान् भोलेनाथ ने अपने संपूर्ण उपस्थिति में यह व्यक्त कर रहे हैं की व्यक्ति अव्यक्त में कैसे व्यक्त हो सकता है और व्यक्त में कैसे अव्यक्त हो सकता है। उन्होंने सबको समान और समष्टिगत जीवनशैली का वातावरण प्रदान करने की अभिव्यंजना की है जो कि उनके आसपास के जीवों की उपस्थिति से पता चलता है। मनुष्य समाज को इससे यह सीखने की आवश्यकता है कि वह कौन सी अवस्था है जिस पर एक दूसरे पर टूट पड़ने वाले जीव एक साथ हो चुके होते हैं और वे एक दूसरे को अपना शिकार नहीं बनाते। उस अवस्था को मनुष्य कब प्राप्त कर सकेगा। जब ऐसी अवस्था की समझ मनुष्य के भीतर आ जाये तो ही तो शिवत्व है।

शिव स्त्रोत को ही लें तो शिव तांडव का अपना महात्म्य बताया गया है। इसके 16वें श्लोक में कहा गया है-

इमं हि नित्यमेव मुक्तमुक्तमोत्तम स्तवं पठन्स्मरन्?
ब्रुवन्नरो विशुद्धमेति संततम्।
हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथागतिं विमोहनं हि
देहिनां सुशंकरस्य चिंतनम् ॥16॥

अर्थात् इस स्तोत्र को, जो भी पढ़ता है, याद करता है और सुनाता है, वह सदैव के लिए पवित्र हो जाता है और महान गुरु शिव की भक्ति पाता है। इस भक्ति के लिए कोई दूसरा मार्ग या उपाय नहीं है। बस शिव का विचार ही भ्रम को दूर कर देता है।

इस स्त्रोत के इस श्लोक में ही शिवत्व की संपूर्ण बात कह दी गयी है। यह मनुष्य ही है जो इस अर्थ को करते हुए भी भ्रम में जी लेने का आदी बन चुका है। इस योग्यता तक न पहुँचने के भी उसने तर्क ढूँढ़ लिए हैं और वह स्वयं को शिवत्व प्राप्ति का दावा भी करते नहीं थकता।

मनुष्य की इस प्रवृत्ति को नष्ट करना ज़रूरी है। अनुशासन व चिंतन से ही बहुत सी चीजें नहीं आतीं। प्रलाप से भी अभीष्ट सिद्ध नहीं होते। शिवत्व की मूल अवधारणा मनुष्य के जीवन का हिस्सा यदि नहीं बनतीं, तो अहिंसक समाज की रचना नहीं हो सकती क्योंकि मनुष्य जब मूल से ही हिंसक होगा तो वह अहिंसक मनुष्य ही नहीं बन सकता।

अहिंसा ही शिवत्व है और शिवत्व ही अहिंसा है, जब इस भेद को पाटकर मनुष्य का निर्माण होगा तो वह हिंसा के बारे में सोचेगा ही नहीं और सभी के अस्तित्व में विश्वास करेगा।

सबमें एक सी मैत्री होगी और सबमें सामान रूप से आत्मवत होने की चेष्ठा होगी। यह एक आदर्श स्थिति है। कदाचित यह कहा जा सकता है कि यह संसार ही संघर्ष और समाधान का एक स्वरूप है लेकिन यह एक अवस्था है जिसे मनुष्य समाज यदि पाना चाहे तो वह पा भी सकता है और इसे नैसर्गिक रूप से इस पूरी सृष्टि का हिस्सा भी बना सकता है। यह अवस्था चित के विकार रहित होने, त्याग करने और प्रेम की वास्तविक अवस्था को समझने से मिल सकती है। यह बहुत ही उत्तम अवस्था है मनुष्य की। मनुष्य के भीतर बैठे किसी भी प्रकार की ग्लानि से भी हिंसा ही जन्म लेती है और इसके कारन हिंसक समाज की भी रचना असंभव हो जाती है। ऐसे में शिवत्व जिस आदर्श अवस्था का नाम है वह उत्कृष्ट आत्मानुसासन से ही आएगी। भारत त्याग व साधना की तपोस्थली रही है यदि यहाँ से यह आदर्श स्थिति निर्मित हो तो निश्चय ही इसे एक ऐसा भी समय आ सकता है कि इसे पृथ्वी का हर व्यक्ति अपना ले।

‘हत्यारों को फांसी दो’ के नारों के साथ डॉक्टरों ने निकाली विशाल कैंडल रैली

संजय द्विवेदी, बैतूल। कोलकाता में एक लेडी डॉक्टर के साथ की गई दरिंदगी और जघन्य हत्या के विरोध में बैतूल जिला अस्पताल के डाक्टर्स और इंडियन मेडिकल एसोसिएशन (आई.एम.ए.) सहित दवा विक्रेता संघ बैतूल, पूर्व सैनिक संगठन बैतूल तथा शहर के समाजसेवियों द्वारा जिला अस्पताल परिसर से एक एक विशाल कैंडल रैली निकाली गई। यह रैली कारगिल चौक तक गई और वहां कैंडल प्रज्वलित कर दो मिनट का मौन धारण कर मृतक डॉक्टर की आत्मा की शांति हेतु और उनके परिजनों को इस घटना को सहन करने की शक्ति प्रदान करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई। इस दौरान आईएमए के सचिव एवं विधायक आमला डॉ. योगेश पंडाग्रे ने कोलकाता की घटना पर कड़ी निंदा करते हुए हत्यारों को कड़ी सजा दिए जाने की मांग करते हुए कहा कि इस आशय को लेकर देश के राष्ट्रपति के नाम डॉक्टरों ने बैतूल कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा है। गौरतलब है कि जिला चिकित्सालय में पदस्थ डॉक्टरों और निजी अस्पतालों के डॉक्टर और समस्त स्वास्थ्य कर्मियों ने जिला अस्पताल परिसर से रैली निकाली। जिसमें बड़ी संख्या में जिले भर के डॉक्टर, स्वास्थ्य सेवाओं में जुड़े समस्त कर्मचारीगण, समाजसेवी सहित अन्य संगठनों के लोग शामिल हुए। उक्त रैली शहर के कारगिल चौक पहुंची, जहां कैंडल प्रज्वलित कर मृत डॉक्टर की आत्मा को समर्पित की गई।

जन चर्चा के मुताबिक अब तक बैतूल शहर में जितने भी कैंडल रैलियां निकाली गई, उसमें सर्वाधिक भीड़ इस रैली में देखी गई। जिसमें बड़ी संख्या में छात्र छात्राएं भी शामिल हुए। शाम 6 बजे से निकली यह कैंडल रैली बरसते पानी के बीच 7.30 बजे के लगभग कारगिल चौक पहुंची। जहां पर विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे ने रैली को संबोधित किया। इस दौरान डॉक्टर पंडाग्रे ने खेद व्यक्त करते हुए कहा कि एक मानव सेवा से जुड़ी लेडी डॉक्टर की निर्मम हत्या की गई है और उसकी जांच पड़ताल में पश्चिम बंगाल सरकार लेटलतीफी करके कोताही बरत रही है। साथ ही कोलकाता पुलिस द्वारा भी हत्यारों पर कार्रवाई करने की बजाय घटना को आत्महत्या बताने की कोशिश की गई, जो कि बेहद निंदनीय है। उन्होंने कहा कि हत्यारों को कड़ी से कड़ी सजा दी जाना चाहिए, जिससे भविष्य में इस तरह की घटनाओं की पुनरावृत्ति कभी ना हो। रैली में मुख्य रूप से इंडियन मेडिकल एसोसिएशन (आई.एम.ए.) के अध्यक्ष डॉ ए.के. पांडे, सिविल सर्जन डॉ अशोक बारंगा, डॉ राहुल शर्मा, डॉ दीप साहू, डॉ मनोज अग्रवाल, डॉ ऋषभ शर्मा, डॉ. बसंत श्रीवास्तव, डॉ. अशोक बारंगा, डॉ रानू वर्मा, डॉ. श्याम सोनी, डॉ. अरुण जयसिंहपूरे, डॉ. आनंद मालवीय, डॉ. रंजीत राठौर, डॉ. राजेंद्र देशमुख सहित जिला अस्पताल एवं निजी अस्पतालों के डॉक्टरों और दवा विक्रेता संघ बैतूल के सदस्यगण शामिल थे।

बैतूलबाजार में छात्रा की क्रूरतापूर्ण हत्या पर जताया विरोध, रैली निकाल कर दिया ज्ञापन

बैतूल। कोलकाता की पीजीटी छात्रा की क्रूरतापूर्ण हत्या के विरोध में बैतूलबाजार एसबीएम अस्पताल के संचालक डॉ सुनील तारण सहित अन्य डॉक्टरों ने 17 अगस्त को ओपीडी सेवाएं बंद रखकर शांतिपूर्ण रैली निकाली और राष्ट्रपति के नाम बैतूलबाजार पुलिस थाने में ज्ञापन सौंपा। जिसमें दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई और चिकित्सा कर्मियों की सुरक्षा की मांग की गई। रैली में चिकित्सक और ग्रामवासियों ने भाग लिया, जो अस्पताल से शुरू होकर पुलिस चौकी तक पहुंची। रैली से पूर्व एक छोटा सा कार्यक्रम भी आयोजित किया गया, जिसमें चिकित्सकों और स्टाफ ने स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं और विशेष रूप से महिलाओं की सुरक्षा को लेकर अपने विचार रखे। एसबीएम अस्पताल की डा. सौर्या तारण ने कहा कि यह घटना सिर्फ एक छात्रा के साथ नहीं, बल्कि पूरे चिकित्सा समुदाय के साथ हुई है और इसने सभी को झकझोर कर रख दिया है। उन्होंने राष्ट्रपति से आग्रह किया कि वह इस मामले में खुद संज्ञान लें और दोषियों को सख्त से सख्त सजा दिलवाएं। ज्ञापन में यह भी कहा कि चिकित्सा कार्यों से जुड़े सभी कार्यकर्ताओं की सुरक्षा और सम्मान सुनिश्चित करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके साथ ही भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए सख्त कानून लागू करने की भी मांग की गई है।

पगारिया जनरल स्टोर ने निकाला लकी ड्रॉ

भाग्यशाली ग्राहकों को बांटे उपहार

बैतूल। पगारिया जनरल स्टोर बैतूल द्वारा शैक्षणिक सत्र में कम्पलीट पुस्तक-कॉपी खरीदने पर लकी कूपन ग्राहकों से भरवाये गये थे। इसमें सात उपहार रखे गये थे। इन सभी कूपन में से सात भाग्यशाली कूपन ग्राहकों के समक्ष ग्राहको से ही निकाले गये, जिसमें प्रथम उपहार आई-3 प्रोसेसर का ब्रांडेड लैपटॉप आरडी पब्लिक स्कूल की कक्षा-4 की छात्रा राजवी पिता संतोष डोंगरे को, द्वितीय उपहार आकर्षक पोर्टेबल ब्लूटूथ स्पीकर विथ-2 माइक लिटिल फ्लावर स्कूल के कक्षा-5 के छात्र रूद्र पिता कपिल राठौर एवं पांच एक-एक हजार रुपये के वाउचर उपहार लिटिल चैप पब्लिक स्कूल के कक्षा-7 के छात्र यश पिता राजेश पाल, आर

डी पब्लिक स्कूल की कक्षा-3 की छात्रा जिव्या मुकेश राठौर, केन्द्रीय विद्यालय के कक्षा-3 के छात्र अंश पिता भरत सिंह धुर्वे, मध्यांचल पोद्दार स्कूल के कक्षा-3 के छात्र धर्मेश पिता डीपी चौकीकर एवं ग्लोबल पब्लिक स्कूल के कक्षा-4 के छात्र आयुष पिता अनिल राठौर भाग्यशाली रहे। सभी भाग्यशालियों को पगारिया जनरल स्टोर के संस्थापक धनराज पगारिया एवं संचालक दिलीप पगारिया ने उपहार प्रदान किए। कार्यक्रम की संचालक श्रीमती खुशबु तिलक पगारिया ने बताया कि हमारी दुकान से पुस्तक-कापी खरीदने वाले बच्चों से एक उपहार कूपन भरवाया गया था, जिसमें बच्चों ने बहुत ही उत्साहपूर्वक भाग लिया था, जिसे पूरी पारदर्शिता के साथ बच्चों से कूपन निकलवाकर भाग्यशाली बच्चों को उपहार वितरण करवाया गया। संचालक तिलक पगारिया ने सभी बच्चों एवं अभिभावकों का आभार व्यक्त किया और बताया कि जिन्होंने बुक्स एवं नोटबुक्स के कम्पलीट सेट लिए थे उन सभी बच्चों को उपहारस्वरूप डिजिटल घड़ी पूर्व में सेट के साथ ही प्रदान की गई है।

‘एक पौधा शहीदों के नाम’

अनूठी पहल के साथ अटल सेना ने मनाया रक्षाबंधन पर्व

बैतूल। अटल सेना द्वारा रक्षाबंधन पर्व विगत 25 वर्षो से भव्य तरीके से और हर्षोल्लास से मनाया जाता है। जिसमें एक सामाजिक संदेश भी अवश्य दिया जाता है। इस बार रविवार को श्रीकृष्ण धर्मशाला गंज में सैकड़ों महिलाओं की उपस्थिति में यह पर्व मनाया गया। संगठन के प्रांताध्यक्ष राजेन्द्र सिंह चौहान (केंडू बाबा) ने बताया कि हर वर्ष रक्षाबंधन पर्व की थीम महिला सशक्तिकरण, महिलाओं की समस्या, रोजगार की समस्या, पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता, सुरक्षा की दृष्टि से यातायात, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

आदि को लेकर किया जाता रहा। श्री चौहान ने बताया कि इस बार यह रक्षाबंधन देश के शहीदों को समर्पित रहा जिसमें उपहार में भाई की ओर से बहनों को पौधे भेंट किए गए। अब बहने शहीदों की याद में उसे लगाकर रोज जल अर्पित करेंगी। केन्डु बाबा ने शहीद परिवारों से भी यह निवेदन है कि वे भी अपने शहीद पिता, पति, बेटा या भाई के नाम से भी पौधारोपण करें क्योंकि जब भी आप सुबह पौधे को जल चढ़ाएंगे यह उन अमर शहीद को अर्पण होगा जिससे मन को भी अनंत सुकून मिलेगा। केंडू बाबा ने बताया हर व्यक्ति अगर देश के वीर शहीदों हमारे रक्षकों के नाम से पौधारोपण करें जिससे पर्यावरण संरक्षण के साथ आत्मिक संतुष्टि मिलेगी भी मिलेगी।

यह थे मौजूद-इस कार्यक्रम में बहनों को उपहार में पौधों के साथ टेबल वॉच उपहार में दी गई। इस अवसर पर प्रमुख रूप से सरिता पाल, नर्मदा शेषकर पिंकी तलमपुरिया, सेवंती साहू, कृष्णा नामदेव, कीर्ति नामदेव, लक्ष्मी विश्वकर्मा, रानी पवार, प्रमिला साहू, दुर्गा अहीर, शोभा धुर्वे, कविता, आशा चंदेल, सीमा नागले, गीता आओरे, शाइस्ता खान, रुबीना खान, सुनीता राठौर, कंचन गोरिया, संगीता प्रजापति सहित बड़ी संख्या में महिलाएं मौजूद थी। बहनों को उपहार में पौधों के साथ टेबल वॉच और दिव्यांग को वाकिंग स्टिक उपहार में दी गई।

विद्यार्थी परिषद बैतूल ने कोलकाता घटना के विरोध में किया पुतला दहन

बैतूल। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के बैतूल नगर के कार्यकर्ताओं ने पश्चिम बंगाल के कोलकाता में एक ट्रेनी महिला डॉक्टर के साथ हुए दुष्कर्म

और हत्या की जघन्य घटना के विरोध में शुक्रवार को जोरदार प्रदर्शन किया। इस प्रदर्शन का नेतृत्व प्रांत सह मंत्री देवेंद्र धुर्वे ने किया। गुस्से में भरे कार्यकर्ताओं ने पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बैनर्जी का पुतला जलाकर विरोध प्रकट किया। इस अवसर पर प्रांत सह मंत्री देवेंद्र धुर्वे ने इस घटना की कड़ी निंदा करते हुए दोषियों को कठोरतम सजा देने की मांग की। उन्होंने कहा कि ऐसी घटनाएँ समाज के लिए एक गंभीर चुनौती हैं और सरकार को त्वरित और सख्त कार्रवाई करनी चाहिए। इस विरोध प्रदर्शन में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के प्रांत कार्यकारिणी सदस्य मानिक कुमरे, नगर मंत्री अनुराग, नगर सहमंत्री मयंक गोरले, देवेंद्र पांसे, लक्की, अंचल, हिमांशु राठौर, पीहू, शालोनी मालवीय, रोहित, अंकित, साहिल शेख, और सारांश समेत कई अन्य कार्यकर्ता प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

तापी परिक्षेत्र में तिरंगा रैली के साथ वृक्षों को बांधी 100 फीट की राखी, पर्यावरण संरक्षण का लिया संकल्प

बैतूल। दक्षिण बैतूल (सा.) वनमंडल के तापी परिक्षेत्र अंतर्गत ग्राम वन समिति सिमोरी ने 17 अगस्त को एक अनूठे कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें स्कूली बच्चों के साथ तिरंगा रैली निकालकर वृक्षों को 100 फीट लंबी राखी बांधकर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया गया। इस आयोजन का मार्गदर्शन वनमंडलाधिकारी दक्षिण (सा.) वनमंडल बैतूल विजयानन्थम टी.आर. (भावसे.) ने किया।

रैली के दौरान समिति सदस्यों और स्कूली बच्चों ने वृक्षों को

राखी बांधकर उन्हें संरक्षित रखने का संकल्प लिया। इसके साथ ही बच्चों को पौधे वितरित किए गए, जिससे वे भी इस मुहिम का हिस्सा बन सकें। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में वन परिक्षेत्र अधिकारी सुश्री श्यामलता मेरावी और वनरक्षक श्रीमती अनिता सलाम का विशेष योगदान रहा। समिति के सदस्यों ने पेड़-पौधों के महत्व पर जोर देते हुए कहा कि पेड़ हमारे जीवन के रक्षक हैं और पर्यावरण संतुलन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। युवाओं ने घर-घर जाकर लोगों को पेड़-पौधों की रक्षा का संकल्प लेने के लिए प्रेरित किया और उनके महत्व के बारे में जागरूकता फैलाई। इस आयोजन ने स्थानीय जनता को यह संदेश दिया कि पेड़-पौधे हमारे मित्र हैं और वे हमें प्राणवायु देकर हमारे जीवन को सुरक्षित बनाते हैं।

मंदिर में लग रही आंगनबाड़ी, मंदिर के शेड में बच्चे पढ़ने को हैं मजबूर

भवन स्वीकृति नहीं होने से स्कूल के जर्जर किचन कक्ष में रखी खाद्य सामग्री भी हो रही खराब

बैतूल। जिले में शिक्षा को लेकर रोजाना नए नए मामले सामने आ रहे है वैसे तो स्कूल और आंगनबाड़ी को शिक्षा का मंदिर कहा जाता है। लेकिन कई स्कूलों और आंगनबाड़ी के भवनों की हालत इतनी जर्जर हो गई है कि उसमें कक्षा संचालित करना खतरे से खाली नहीं है। वही कई स्कूलों और आंगनबाड़ी के पास स्वयं के भवन नहीं है। ताजा मामला शाहपुर तहसील से सामने आया है जहाँ ग्राम टांगनामाल में आंगनबाड़ी का भवन नहीं होने के कारण मंदिर में संचालित किया जा रहा है। बच्चे मंदिर के शेड में बैठकर पढ़ाई कर रहे है। वही मंदिर के शेड में ही भोजन करते है। ग्रामीणों ने कई बार प्रशासन और जनप्रतिनिधियों से आंगनबाड़ी के भवन निर्माण की मांग की। लेकिन उनकी मांग अब तक पुरी नही हो सकी।

जिले के आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र में आंगनबाड़ी भवन नही होने से आंगनबाड़ी में आने वाले बच्चों को तो परेशानी होती ही है साथ ही आंगनबाड़ी से संचालित होने वाले अन्य कार्यक्रम भी प्रभावित होते हैं। आलम यह है आंगनबाड़ी या तो किराए के भवनों में संचालित हो रही हैं या कार्यकर्ता, सहायिका के घर या फिर मंदिर प्रांगण के टीन शेड में लग रही हैं। शासन द्वारा आंगनबाड़ी भवनों के लिए लाखों रुपए की राशि स्वीकृत की है, लेकिन कई सालों से कुछ केन्द्र में आज भी आंगनबाड़ी भवन नही बन पाए है । इन भवनों के निर्माण की जिम्मेदारी ग्राम पंचायत को सौंपी गई है पर ग्राम पंचायत और महिला बाल विकास की लापरवाही के कारण भवन नहीं बन सके। शाहपुर ब्लॉक के अंतर्गत आने वाली ग्राम पंचायत टांगनामाल के टांगना रैयत ग्राम में आज भी आंगनबाड़ी भवन नहीं होने के कारण आंगनवाड़ी स्कूल के भोजन कक्ष में संचालित हो रही है। अत्यधिक वर्षा होने के कारण जर्जर हो चुका भोजन कक्ष भी पानी टपकने एवं भवन में पानी भर जाने के कारण बच्चों को बैठने तक की व्यवस्था नहीं होने के कारण टांगना रैयत के आंगनबाड़ी भवन को मंदिर के टीन शेड में संचालित करना पड़ रहा है। मंदिर प्रांगण के टीन शेड में संचालित आंगनबाड़ी भवन में बच्चों को वहीं बैठकर पढ़ाई एवं भोजन कराना पड़ रहा है।

ग्राम पंचायत की सरपंच राधा अहाके का कहना है कि पंचायत की ओर से शासन प्रशासन को अवगत किया जा चुका है परंतु ग्राम में आंगनवाड़ी भवन नहीं बन पा रहा है, प्रशासन द्वारा किसी भी प्रकार का सहयोग नहीं किया जा रहा है।

ग्रामीण किशन लाल विश्वकर्मा, किसन यादव का कहना है कि वर्तमान में बजरंग मंदिर के शेड में आंगनबाड़ी संचालित हो रही है। आंगनवाड़ी का सामान किचन शेड में रखने से सामग्री खराब हो रही है। वहीं इसी पूरे मामले को लेकर महिला बाल विकास अधिकारी दीपमाला अहाके का कहना है कि बारिश की वजह से अतिरिक्त कक्ष में सीलन है इस कारण मंदिर प्रांगण में आंगनबाड़ी संचालित की जा रही है। अगर केंद्र की स्थिति खराब है तो ग्राम के चौपाल को खाली कराकर वहां आंगनबाड़ी भवन लगाया जाएगा। अभी भवन स्वीकृत की प्रक्रिया चल रही है वर्तमान में विधायक द्वारा कुछ आंगनबाड़ी भवन को स्वीकृत किए गए हैं उसमें से एक नाम का बदलाव कर इस भवन को सम्मिलित करने का प्रयास किया जाएगा।

छटवीं के छात्र का अपहरण का प्रयास विफल

बैतूल। आमला नगर में एक छटवीं क्लास के छात्र के अपहरण का प्रयास खुद छात्र की समझदारी से होते होते बच गया। छात्र समय रहते अपहरणकर्ता की मंशा समझ गया और मौका मिलते ही वह वेन की खिड़की से कूदकर भाग निकला। अपने परिजनों को वारदात की जानकारी दी। नगर में दिनदहाड़े स्कूली छात्र के अपहरण के इस मामले के सामने आने के बाद पुलिस भी सक्रिय हो चुकी है। सीसीटीवी फुटेज के साथ साथ टोल नाकों पर भी पूछताछ की जा रही है। पुलिस का दावा है कि जल्द ही नकाबपोश अपहरणकर्ताओं को हिरासत में ले लिया जाएगा।

पिता को पैसे देने का दिया गया था झांसा

मिली जानकारी के मुताबिक नगर के सुभाष वार्ड निवासी किसान फूलचंद का बेटा कक्षा छटवीं का छात्र है। शुक्रवार सुबह करीब 8.30 बजे जब वह साइकिल से अपने स्कूल जा रहा था। तभी उसे रास्ते में मुंह पर कपड़ा बांधे मिले दो अज्ञात लोगों ने उसे अपने बुलाया था। फूलचंद ने पुलिस को बताया की नकाबपोशों ने उसके बेटे से कहा कि वो मेरे दोस्त है और उन्हें

मुझे कुछ पैसे देने है तो वो उनके साथ चले ताकि वो उसे पैसे दे सकें। दोनों के चेहरों पर रुमाल बांधा हुआ था। नकाबपोश बेटे को बिजली कंपनी के ऑफिस के पास ले आये थे। जहां पहले से ही एक सफेद कलर की वेन खड़ी हुई थी। जिसमें ड्राइवर बैठा हुआ था। दोनों ने जबरदस्ती छात्र को वेन में बैठाया, पर छात्र ने वेन के दूसरे गेट से निकल कर सरपट दौड़ लगा दी और घर आकर सारी बात बताई। घटना के बाद वेन और नकाबपोश सहित तीनों लोगों की नगर में सभी जगह तलाश की लेकिन वे तब तक फरार हो चुके थे।

ततपश्चात शिकायत के आधार पर आमला पुलिस ने धारा 137(2) और 62 बीएनएस के तहत एफआईआर दर्ज कर ली है। फिलहाल पुलिस नगर में जगह जगह लगे हुए सीसीटीवी कैमरे खंगाल रही है । साथ ही अन्य सीमावर्ती थाने और चौकियों के स्टाफ की भी मदद ली जा रही है, ताकी जल्द से जल्द आरोपियों की गिरफ्तारी की जा सके।

इनका कहना

छात्र के अपहरण के प्रयास के मामले में एफआईआर दर्ज की गई है। आरोपियों की जल्द गिरफ्तारी के निर्देश दिए गए हैं।

-निश्चल एन झारिया, एसपी बैतूल

आरोपियों को पकड़ने के लिए अलग अलग टीम गठित की गई हैं सीसीटीव्ही कैमरों के अलावा टोलनाकों पर लगे कैमरों की जांच की जा रही है। जल्द ही आरोपी हिरासत में लिए जाएंगे।

- सत्यप्रकाश सक्सेना, टीआई आमला

पुलिस ने तत्परता से ढूंढ निकाला गुम बालक के परिजन को

बैतूल। कल शनिवार को मुलताई थाने के अंतर्गत बड़गांव निवासी आशुतोष झाड़े द्वारा एक बारह वर्षीय बालक को थाना लाया और बताया कि यह बालक कल उसे गांव के मंदिर के पास मिला था। जिसे रात भर उसने अपने घर में रखा और बालक कुछ बताने की स्थिति में नहीं था, इसलिए थाना लाकर पुलिस को सौंप दिया है। पुलिस द्वारा बालक से पूछताछ की गई, तो बालक कुछ भी बताने की स्थिति में नहीं होने के कारण पुलिस द्वारा तत्काल बालक की सूचना आसपास के सभी थानों में दी गई। वही महाराष्ट्र के वरूड थाने में उक्त बालक की जानकारी देने पर वहां बालक की जानकारी मिली, कि बालक के पिता कुशलाल वाडिवे निवासी शेघाट का होना पता चला, जिनको सूचना दी गई कि उनका बालक थाना मुलताई में हैँ। जानकारी मिलने के बाद परिजन तुरंत मुलताई थाने पहुंचे, जहां पुलिस द्वारा जरूरी कार्यवाही कर बालक को उसके पिता को सौंप दिया गया। इस संबंध में एसआई मोनिका पटले ने बताया कि स्कूल में गुम बालक से उसके दोस्त की साइकल टूट गई थी, जिसके भय से बालक किसी को कुछ बताएं बिना वहां से निकल लिया। मुलताई थाना प्रभारी राजेश सातनकर और पुलिस स्टॉफ् की तत्परता और सूचना संकलन के चलते गुम हुए बालक को उसके परिजनों से मिलाया गया।

नवाचार बच्चों का पलायन और शोषण रोकने के प्रयास ‘एक कोशिश’ की शुरुआत भीमपुर से

बैतूल। जिले में बढ़ते नाबालिक बच्चो के पलायन एवं शोषण के मामलो को रोकने के उद्देश्य से कुछ दिन पूर्व पुलिस कंट्रोल रूम बैतूल में पुलिस अधीक्षक बैतूल निश्चल एन झारिया के मार्गदर्शन एवं अध्यक्षता में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया था। इस कार्यशाला में प्रशासन के अन्य विभाग जिनमे शिक्षा विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग, वन स्टॉप सेंटर के साथ समाजसेवी संगठन शामिल हुए थे। कार्ययोजना को जमीनी स्तर पर लाने हेतु शनिवार को इस प्रयास ‘एक कोशिश ’ के पहले कार्यक्रम का शुभारम्भ एसपी निश्चल एन झरिया , एएसपी कमला जोशी सहित अन्य अधिकारियों की उपस्थिति में भीमपुर से किया गया।

600 बालिकाएं रहीं उपस्थित

मंगल भवन में आयोजित इस कार्यक्रम में करीब 600 बालिकाए उपस्थित रही। जिनको इस मुहिम के बारे में बताने के साथ ही आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओ को शामिल कर उन्हें उनसे सम्बंधित गांव कि बच्चियों कि मेंटर के रूप में काम करने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

सम्बंधित आंगनवाड़ी कार्यकर्ता उन गावों कि बच्चियों कि सम्पूर्ण जानकारी रखकर उनकी समस्या को प्रशासन स्तर में पहुंचाकर उन बच्चियों कि प्रेरणा दीदी का काम करेगी। भीमपुर में हुए प्रथम आयोजन में प्रदीपन संस्था कि मुख्य भूमिका रही साथ ही पुलिस विभाग,महिला एवं बाल विकास विभाग, आदिम जाति कल्याद विभाग,आवाज संस्था, जनसाहस संस्था, ग्राम भारती मण्डल,आशा कार्यकर्ता, आंगनबाडी कार्यकर्ता समाजसेवी संगठन, एनजीओ एवं समाजसेवी लोगो के अलावा बड़ी संख्या में ग्रामीण मौजूद थे ।

देखा-पढ़ा

ब्रजेश कानूनगो

वरिष्ठ पत्रकार

देवदूत जैसे उदार घुम्मकड़

अजरबैजान मूल के घुम्मकड़ और ब्लॉगर दावुद अकुंजादा को पहली बार उनके अमृतसर यात्रा के वीडियो में देखा था। कद काठी में पूरे पठान लगते हैं, भारतीय वस्त्रों की दुकानों पर बड़ी मुश्किल उनके नाप का कुर्ता, शूज या जूता मिल पाता है। जहां जाते हैं दुकान में सबसे बड़े नाप का परिधान मांगते हैं।

बहरहाल, जब वे अमृतसर के स्वर्ण मंदिर में गए तो अपने सिर पर पगड़ी बंधवाई। गुरु गोविंदसिंह द्वारा स्थापित सिद्धांतों के अनुसार खालसा सिक्खों द्वारा धारण किए जाने वाले पांचों ककार चीजों याने केश, कड़ा, कृपाण, कंघा और कच्छा के बारे में जानकारी ली, उन्हे रुचिपूर्वक देखा समझा भी।

कई ब्लॉगरों को हमने पवित्र स्वर्ण मंदिर दर्शन के लिए जाने के पूर्व सिक्ख पुरुषों द्वारा बांधी जाने वाली पगड़ियां बंधवाने की प्रक्रिया को देखा है। इसका वीडियो देखना भी बहुत दिलचस्प होता है। परिसर से पहले कारिडोर में अनेक ऐसी दुकानें हैं जहां से पगड़ी हेतु मनपसंद रंगीन कपड़े खरीद कर वहीं अपनी सेवाएं देते कर्मियों से अपने सिर पर उसे बंधवा सकते हैं। प्रक्रिया का वीडियो बना सकते हैं। दावुद का व्यक्तित्व बहुत प्रभावी है और जब वे अपने सिर पर पगड़ी धारण करते हैं तो पूरे सरदार लगते हैं। उनकी शानदार दाढ़ी उनके इस अवतार को आकर्षण और पूर्णता प्रदान कर देती है।

अपने विडियोज में उन्होंने स्वर्ण मंदिर की पूरी सैर कराई। लंगर की रसोई का गहनता से दर्शन कराया। लंगर की पंगत में बैठकर भोजन किया। सबसे अंत में दान काउंटर पर जाकर एक बड़ी राशि वहां भेंट की। इन्ही वीडियो को देखते हुए ज्ञात हुआ कि दावुद जहां की सैर करते हैं और वीडियो बनाते हैं उससे होने वाली आय को उसी स्थान के लोगों में या कल्याण कार्यों में दान स्वरूप खर्च कर देते हैं। उनकी यह उदारता उनकी हर यात्रा के विडियोज में देखी जा सकती है।

अजरबैजान में बहुसंख्यक आबादी इस्लाम धर्म को मानने वालों की है लेकिन वह एक धर्म निरपेक्ष देश है तथा वहां समाज का एक बड़ा वर्ग किसी धर्म का अनुयाई नहीं है। एकाध वीडियो में दावुद भी इसी बात को स्वीकारते दिखाई देते हैं। दावुद मनुष्यता को धर्म मानते हैं। सभी धर्मों,समुदायों का सम्मान उनके मन में है। सब

जगह जाते हैं, सम्मान व्यक्त करते हैं और वीडियो में यह सब सहजता से देखा जा सकता है। अपनी उदारता से वे दर्शकों का मन जीत लेते हैं। किसी सांता क्लाज या देवदूत की तरह वे वृद्ध, बच्चों, कमजोर और जरूरतमंद के लिए अकस्मात देवदूत की तरह प्रकट हो जाते हैं।

दावुद ने भी यूट्यूब माध्यम में पूर्णत: ट्रवेलर ब्लॉगर के रूप में प्रवेश अपनी नौकरी छोड़कर किया है। वे सामान्यत: अच्छी होटलों में ठहरते हैं। कई बार उस जगह की सबसे लग्जरी होटल में रुकते हैं। वीडियो टूर देते हैं। नाश्ता, लंच, डिनर, स्विमिंग पूल, टेरेस, जिम आदि सभी पक्षों का आस्वाद अपने दर्शकों को कराते हैं। लेकिन यह केवल एक पक्ष है, बड़ा महत्वपूर्ण दूसरा पक्ष यह है कि वे सामान्य लोगों के बीच अपना अधिकांश समय सामान्य परिदृश्य में गहरे से उतरते जुड़ते हुए बिताते हैं।

ज्यादातर वे खाना बाजार में स्थानीय रेस्टोरेंट में करते हैं और उसमें भी स्ट्रीट फूड और छोटे छोटे स्टाल्स उनकी प्राथमिकता में होते हैं। बाजार में घूमते हुए जब देखते हैं कि कोई बहुत अच्छा स्थानीय शरबत मिल रहा है तो वह अवश्य उसका आनंद उठाएंगे। ऐसे में उनके आसपास लोगों की भीड़ जुट जाती है तो दुकानदार से बोलते हैं कि इन सबको भी यह दे दीजिए, उसका पूरा पेमेंट वही कर देते हैं।

किसी दुकानदार की कमजोर स्थिति देखकर वे भावुक भी हो जाते हैं,पूछते हैं, भाई आप दिन भर में कितना कमा लेते हैं? मान लीजिए वह व्यक्ति बता देता है कि मैं दिन भर में 500 रुपए कमा लेता हूं तो दाऊद उससे उसके स्टाल का पूरा सामान फ्री लोगों में वितरित करने का कह देते हैं, सब लोगों को आप मेरी तरफ से फ्री बांट दीजिए, और आप आज के लिए कुछ नहीं करें, आप घर जाकर आराम करें। यह दया भाव एक जरूरतमंद छोटे कारोबारी व्यक्ति के लिए देखकर बहुत अच्छा लगता है।

एक बार शायद कोलकाता या बांग्लादेश में कहीं घूम रहे थे। सब्जी मंडी में एक बूढ़ी महिला अपनी छोटी सी बास्केट में लहसुन रखकर सड़क किनारे बैठी थी। वे उससे स्नेहपूर्वक बातें करते हैं, खैरियत पूछते हैं, उसकी सारी लहसुन खरीद लेते हैं। वह लहसुन आगे जाकर उन्होंने और किसी गरीब जरूरतमंद परिवार को भेंट कर दी। लहसुन के पूरे दाम चुका के कुछ और राशि अतिरिक्त देकर उन्होंने कहा कि आज आप आगे काम नहीं करेंगे, आप घर जाइए आराम करिए।

दावुद अकुंजादा की उदारतापूर्ण मार्मिक अनुभूतियों से गुजरना चाहते हैं तो उनकी श्रीलंका सीरीज के विडियोज को अवश्य देखा जाना चाहिए। स्कूटर से उनको ग्रामीण क्षेत्रों में घूमते, ग्रामीणों, खेत में काम करते मजदूरों से वार्तालाप करना, छोटे छोटे ग्रामीण स्टालों, टापरियों पर जाकर खाना पीना, आत्मीयता से सुख दुख की बातें करना फिर उन सबकी मदद करना। निर्धन परिवारों और बच्चों की संस्थाओं में जाकर उनसे मेल मुलाकात, सहयोग का हाथ बढ़ाना और आर्थिक सहयोग करना, बहुत अद्भुत और मानवीय संवेदनाओं का प्रेरक गुलदस्ता सा बन जाते हैं ट्रेवल ब्लॉगर दावुद अकुंजादा।ट्रेवल वीडियो देखते हुए यदि ब्लॉगर की अनुभूतियां हमारी अनुभूति में रूपांतरित होकर संवेदनाओं और नैतिक मूल्यों का थोड़ा भी प्रस्फुटन करती हैं तो क्यों न हमें इनका भरपूर स्वागत और आभार व्यक्त करना चाहिए ! साधुवाद दावुद!

रक्षा बंधन

माफी का धागा

नृपेन्द्र अभिषेक नृप

राखी का त्योहार आया था और मेरी बहन रिया ने मुझसे कहा, भैया, इस साल मैं आपको राखी नहीं बांधूंगी। मैंने पूछा, क्यों? क्या हुआ? तो उसने कहा, आप मुझे कभी मेरी बात नहीं सुनते, मुझे कभी खिलौने नहीं दिलाते, और मुझे कभी पार्क में नहीं ले जाते। मैंने सोचा कि यह तो बचपन की बातें हैं, लेकिन रिया को गुस्सा आ गया था। मैंने उसे समझाने की कोशिश की, लेकिन वह नहीं मानी। सालों बीत गए, हम दोनों बड़े हो गए। मैं कॉलेज में पढ़ने लगा और रिया स्कूल में। हम दोनों अपनी-अपनी दुनिया में खो गए थे। एक दिन, मैं घर आया और देखा कि रिया राखी की तैयारी कर रही थी। मैंने पूछा, रिया, तुम मुझे राखी बांधोगी? तो उसने मुस्कराते हुए कहा, 'हां, भैया, इस साल मैं आपको राखी जरूर बांधूंगी।' मैंने पूछा, क्यों? क्या हुआ? तो उसने कहा, भैया, मैं समझ गई हूं कि आप मुझे हमेशा प्यार करते थे, लेकिन आप अपने तरीके से करते थे। मैं आपको माफ करती हूं और आपको मैं इस बार माफ़ी का धागा बांधूंगी। मैंने उसे गले लगाया और कहा, रिया, मैं तुम्हें हमेशा प्यार करता हूं और तुम्हारी राखी का इंतजार करूंगा।

डॉ. मोनिका राज

रक्षा का सूत्र

आज रक्षा-बंधन था। रिचा फ़ोन पर अपने भाई से बात करते हुए कह रही थी, 'पहली बार है जो तुम्हे राखी नही बांध पा रही। बहुत याद आ रही है तुम्हारी', कहते-कहते वह थोड़ा ठिठकी। आज फिर से अपने बिल्डिंग के गार्ड को उसने खुद को घूरते हुए पाया। उसके गुस्से की सीमा नही थी। वह बड़बड़ाते हुए अपने फ्लैट की तरफ बढ़ी। 'पता नही कैसे-कैसे लोगों को सिक्युरिटी गार्ड रख लेते हैं। एक तो इसकी शक्ल इतनी डरावनी है उसपर इसकी हरकतें। इस बार सोसाइटी की मीटिंग हुई तो इस गार्ड की अच्छी खबर लेती हूँ।', उसने सोचा।

जैसे ही लिफ्ट के सामने जाकर खड़ी हुई की बत्ती गुल हो गई। उसने मोबाइल का टोर्च ऑन किया और सीढ़ियों से अपने फ्लैट की ओर बढ़ना शुरू किया। तभी उसे अपने पीछे किसी की आहट महसूस हुई। घबराहट में वह तेज़ कदमों से सीढियां चढ़ने लगी। तभी लगा कि दो लोग आपस में गुत्थमगुत्थी कर रहे हैं। आवाज़ सुनकर कुछ और लोग भी बाहर निकल आए। तब तक बत्ती भी आ चुकी थी। सबने देखा कि उनके बिल्डिंग का गार्ड एक लड़के से उलझा हुआ है और दोनों में हाथापाई हो रही है। जब लोगों ने दोनों को छुड़ाया तब गार्ड ने बताया,'यह लड़का पिछले कुछ दिनों से रिचा दीदी का पीछा कर रहा था। अलग-अलग दिन अलग-अलग कंपनी का डिलीवरी बॉय बनकर आता और उसके पीछे से रिचा के फ्लैट के आस-पास मंडराता रहता। जाने क्या मंशा थी! जब मुझे इस बात का अंदाज़ा हुआ तो मैं रिचा दीदी के वापस आने पर उनको उनके फ्लैट तक छोड़ने चला जाता था ताकि कोई अनहोनी न हो जाए। यह जानकर रिचा सन्न रह गई।

अब तक उसने जिस व्यक्ति को भक्षक समझा था असल मे वह उसका रक्षक निकला। लोगों ने तबतक पुलिस को फ़ोन कर दिया था। गार्ड को चोट आई थी सो लोग उसे मरहम-पट्टी करने लगे। रिचा स्तब्ध खड़ी थी। अचानक वह गार्ड के पास आई और हाथ जोड़कर सुबकते हुए कहा, भैया, माफ करना! मैंने तुम्हें कितना गलत समझा था जबकि तुम तो मेरी मदद कर रहे थे। गार्ड ने हड़बड़ाते हुए उठ बैठा। कोई बात नही है दीदी। मैंने तो बस अपना फ़र्ज़ निभाया। एक बार ऐसी ही एक घटना की वज़ह से मैंने अपनी एकलौती बहन को हमेशा के लिए खो दिया था। तभी सोचा था कि अपने रहते किसी के साथ ऐसा कोई हादसा नही होने दूंगा', कहते-कहते उसकी आवाज़ भर्रा गयी।

तबतक रिचा ने खुद को संयत कर लिया था। अपने फ्लैट में जाकर राखी और मिठाई लेकर वह गार्ड के पास पहुँची और उसकी कलाई में राखी बांधकर मिठाई खिलाते हुए बोली,आज समझो कि तुम्हारी बहन तुम्हे वापस मिल गई। संशय के बादल अब पूरी तरह छंट चुके थे और यह रक्षाबंधन अपने साथ नए रिश्तों और अपनत्व की सौगात लेकर आया था।

विवेक सागर का अभिनंदन करने उमड़ पड़ा शहर

नर्मदापुरम। पेरिस ओलंपिक 2024 में कांस्य पदक विजेता विवेक प्रसाद सागर का नर्मदापुरम में स्वागत कार्यक्रम में नगर के सभी खेल प्रेमी उमड़ पड़े। जिला के सभी खेल संघ उसमें उपस्थित थे विवेक को ढोल एवं डीजे के साथ एस पी एम गेट नंबर 4 से नगर के विभिन्न रास्तों से नगर भ्रमण कराया गया, सतरास्ता पर सांसद दर्शन सिंह चौधरी पीयूष शर्मा ने स्वागत किया, हलवाई चौक पर अजय सैनी दीपक सैनी इरफान अली ने, इतवारा बाजार में सांसद प्रतिनिधि नंद किशोर यादव मनीष परदेशी , शासकीय गृह विज्ञान महाविद्यालय एवं गर्ल्स स्कूल की छात्राओं ने विवेक प्रसाद सागर का फूल माला एवं भारत माता के नारे लगाकर स्वागत किया इसी एसएनजी स्कूल के प्राचार्य शुक्ला सर एवं जय वर्मा स्कूल का स्टाफ ने फूलमाला पहनाकर स्वागत, महाराणा प्रताप की मूर्ति के सामने करणी सेना के सदस्यों ने विवेक का स्वागत, प्रधानमंत्री नर्मदा महाविद्यालय के प्राचार्य ओ एन चौबे ने स्टाफ एवं छात्रों के साथ, गुरुकुल के आचार्य ,

मंच पर राज्यसभा सदस्य माया नारोलिया, सोहागपुर विधायक विजयपाल सिंह ठाकुर, नीतू महेंद्र यादव नगर पालिका अध्यक्ष, पूर्व विधायक गिरजाशंकर शर्मा पंडित भवानी शंकर शर्मा, रोहित फौजदार, जिला खेल धिकारी उमा पटेल , अनुराग मिश्रा, डॉ ओ एन चौबे ,गुरुकुल के आचार्य, एवं बड़ी संख्या में खिलाड़ी उपस्थित रहे, विवेक प्रसाद सागर को सभी अतिथियों ने स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया। डॉ अतुल सेठ द्वारा विवेक को स्मृति चिन्ह भेंट किया।

उपलब्धि

मुझे फाइनेंस फील्ड में अपने नाम से जाना जाए

भोपाल। यह शुभांगी पाठक हैं। उन्हें अपने परिचय के लिए पिता के नाम की आवश्यकता नहीं हैं। वे उन युवाओं में शामिल हैं जो अपनी पहचान खुद बन रहे हैं। शुभांगी उन युवाओं में शामिल हैं जिन्होंने कोविड के निराशात्मक दौर को धत्ता बता कर सफलता की ऐसी इबारत लिखी है जो हर व्यक्ति के लिए प्रेरक हैं। सफलता की उनकी कहानी दिलचस्प है।

वे बताती हैं कि 2019 को 12वीं में काफी अच्छे मार्क्स आने के बाद मुझे मुंबई के सुप्रसिद्ध मीठीबाई कॉलेज में एडमिशन मिल गया। अगले ही साल मार्च 2020 में कोविड के कारण कॉलेज बंद हो गया और मैं घर वापस आ गई। अब ऑनलाइन क्लासेस व ऑनलाइन एग्ज़ाम का वक्त आ चुका था। इसी समय मैंने स्टॉक मार्केट में रुचि लेना शुरू किया। मैंने जीरोधा में अकाउंट बनाया और शेयर ट्रेडिंग आरंभ की लेकिन मुझे काफी नुकसान हुआ क्योंकि मुझे इस फील्ड का जरा भी नॉलेज नहीं था।

तब मैंने रिसर्च की और ऑनलाइन कुछ बेसिक व एडवांस कोर्स किए और दोबारा शेयर ट्रेडिंग की। एक महीने के अंदर मैंने न केवल अपना सारा लॉस कवर किया बल्कि प्रॉफिट भी बुक किया। अब मुझमें आत्मविश्वास आ गया। मैंने देखा कि बहुत सारे लोग शेयर ट्रेडिंग करना चाहते हैं लेकिन उन्हें इसके बारे में जानकारी नहीं है। तब मैंने 2021 अपनी फर्म 'रश-एडवाइज़री' नाम से रजिस्टर्ड की और टेलीग्राम पर अपना एक चैनल शुरू किया जहां लोगों को एडवाइज़ देना शुरू किया। माऊथ पब्लिसिटी एवं सोशल मीडिया के प्रमोशन से लोग मेरे चैनल में जुड़ने लगे। 2022 में मैंने NMIMS (नार्सी मूंजी) मुंबई से एमबीए फाइनेंस में एडमिशन लिया। मेरा बिजनेस काफी अच्छा चल रहा था। मेरा टेलीग्राम चैनल भी सफल था। आज उसमें पचपन हज़ार लोग जुड़ चुके हैं।

मैं इंस्टाग्राम पर शेयर मार्केट से जुड़ी महत्वपूर्ण बातें वीडियो के जरिए शेयर करती रहती हूं। मेरे बहुत से फॉलोवर्स अक्सर कहते कि आप एक कम्प्लीट कोर्स डिजाइन कीजिए जिसमें शेयर मार्केट से जुड़ी हर ख़ास और आम जानकारी हो। लोगों में शेयर मार्केट के प्रति अब काफ़ी रुचि और जिज्ञासा थी। यह देखते हुए मैंने शेयर मार्केट का एक पूरा कोर्स तैयार किया। हर प्वॉइंट को कवर करते हुये लेक्चर रिकॉर्ड किए और आज मेरा कोर्स ऑनलाइन उपलब्ध है जिसमें शेयर मार्केट से जुड़े हर सवाल का जवाब है। कोरोना काल में जहां इतनी नकारात्मकता थी वहीं से मिले अपने ख़ाली वक्त का सदुपयोग कर मैंने 24 वर्ष की उम्र में आज ये मुकाम हासिल किया है। मेरी सोशल मीडिया व टेलीग्राम चैनल टीम एवं कोर्स मैनेजमेंट की टीम के साथ मिल कर मेरा बिज़नेस आगे बढ़ रहा है। कंपनी का सालाना टर्न ओवर लगभग साठ लाख है। अभी तो यह शुरुआत है। मैं अपना बिजनेस उस ऊंचाई पर ले जाना चाहती हूं जहां एक लड़की को फाइनेंस फील्ड में उसके नाम से जाना जाए क्योंकि अब तक यहां ज़्यादातर पुरुषों का ही वर्चस्व है।

दुर्योधन और माता यशोदा को भगवान का विश्व रुप देखकर कोई फर्क महसूस नहीं हुआ था क्यों..?

नर्मदापुरम। मंदिर में आज रविवारीय उत्सव के अंतर्गत यथारुप श्रीमद्भागवत गीता के ग्यारहवें अध्याय के पांचवें श्लोक को व्यास गादी से विस्तार देते हुए वृन्दावन चंद दास प्रभु ने बताया कि इस श्लोक में अर्जुन भगवान से उनके विश्व रुप को देखने की इच्छा प्रकट करते हैं। और भगवान अर्जुन की इस इच्छा की पूर्ति के लिए अर्जुन को यहां उस विश्व रुप को दिखाने वाले हैं जो इससे पहले भगवान ने धृतराष्ट्र की सभा में दिखाया था।

प्रभु जी यहां बताते हैं कि भगवान का विश्व रुप देखकर यहां दुर्योधन को कोई फर्क नहीं पड़ा और ऐसा ही मां यशोदा को भगवान द्वारा मिट्टी खाकर भगवान ने मुंह में विश्व रुप दिखाया था पर मुंह में दिखाई दिए विश्व रुप देखकर मां यशोदा को कोई फर्क नहीं पड़ा..? प्रभु जी ने यहां बताया दुर्योधन को भगवान का विश्व रुप देखकर कोई फर्क इसलिए नहीं पड़ा क्योंकि वह भगवान से द्वेष रखता था और माता यशोदा को भगवान का विश्व रुप देखकर इसलिए कोई फर्क नहीं पड़ा क्योंकि मां यशोदा भगवान से प्रेम करती थी, उन्हें अपने पुत्र वत रूप में देखती थी। प्रभु जी बताते हैं कि हम अपनी सूक्ष्म आंखों से भगवान के विराट रुप को नहीं देख सकते हैं। जिसे हम केवल भक्ति के द्वारा भगवान की कृपा से ही उन्हें देख सकते हैं। प्रभु जी आगे बताते हैं कि प्रभु पाद जी ने कहा कि भक्त कभी भी भगवान के विश्व रुप को देखने के लिए लालायीत नहीं होता क्योंकि भगवान की सेवा करते हुए भक्त पूरी तरह खुद को संतुष्ट पाता है। आख्यान को विस्तार देते हुए प्रभु जी बताते है भगवान इतने उदार और भक्तवत्सल है कि वे भक्त के लिए अपना परम

ऐश्वर्य छोड़कर भू-लोक पर मिलने कभी बालक रूप में, तो सखा रुप में, तो कभी सारथी के रूप में अवितरित होते हैं।

प्रभु जी बताते हैं भौतिक जगत में वास्तव में मनुष्य भगवान की योग- माया और मोह-माया के पाश में फंसा हुआ जन्म-जन्मांतर से भौतिक सुख के चक्कर में 84 लाख योनियों में भ्रमण करते करते केवल दु:ख भोगते आ रहा। प्रभु जी ने बताया कि एक मनुष्य जन्म ही ऐसा जन्म है जिसमें वह अपने वास्तविक घर गोलोक जाने का मार्ग प्रशस्त कर सकते है। यहां वाणी को विश्राम देते हुए कृष्ण भक्त वृन्दावन चंद्र दास प्रभु ने फिर इस्कॉन मंदिर परिवार में जिज्ञासु कृष्ण भक्तों को आख्यान संबंधित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देकर भक्ति संबंधित जिज्ञासा शांत की, श्रीमद्भागवत गीता यथारुप से संबंधित हर जिज्ञासा को एलआईसी दफ्तर के उपर द्वितीय तल स्थित इस्कॉन मंदिर परिवार में होने वाले हर रविवार को गीता संबंधित आख्यान सुनकर अपने सवालों के जवाब पाकर जिज्ञासा शांत कर भक्त शुद्ध चित्त से भक्ति साधना कर रहे हैं।

इसे कहते हैं प्रभाव और काम करने का तरीका..

नर्मदापुरम। गत छह आठ महीने से मुख्यालय पर ढाई सो करोड़ की चल रही महत्वपूर्ण सीवरेज ट्रीटमेंट योजना कार्य की सुविधा - असुविधा को लेकर एक तरह से नगर में किसी भद्र और अखबार सहित जनप्रतिनिधि ने सवाल जवाब नहीं किए। जबकि पूरे नगर की कच्ची पक्की, अच्छी बुरी सारी सड़कों को बीच से खोदकर अपना काम निकाल रही कंपनी के महत्वपूर्ण इस काम से हजारों की तादाद में नागरिक गिरते पड़ते चोटिल होकर तकलीफ उठाते रहे। कंपनी ने भी एक बड़ी राशि का काम लेकर उसे पेटी कांटेक्ट पर देकर जिस तरह घटिया काम करते हुए अबतक सफ़र तय किया, किसी की चपेट में नहीं आया।

जबकि योजना क्रियान्वयन में एक मजदूर की मौत तक मालाखेड़ी क्षेत्र में हो चुकी.. प्रशासन की चुप्पी और प्रतिनिधियों का खामोश बने रहना इस योजना की पूर्णता के लिए कितना है महत्वपूर्ण है इससे आंका जा सकता है। भरी बरसात में कलेक्टर बंगले सड़क पर हुए इस काम काज का प्रारुप प्रधान न्यायाधीश के बंगले के सामने ठेकेदार ने किस तरह उपयोग किया, सरकारी अधिकारियों के सड़क मार्ग पर कैसा..? आम आदमी को इससे जोड़कर देखना केवल बेमानी होगी.. जबकि एक बड़ी राशि और एक महत्वपूर्ण योजना का क्रियान्वयन कितनी जिम्मेदारी और गंभीरता से किया जाना था यह केवल प्रधान न्यायाधीश के बंगले के सामने हुए कार्य से दिखाई देता है। इसे इस लोकतंत्र में न्यायालय पालिका का डर और अफसरशाही सहित जनप्रतिनिधियों का किसी बड़े राजनीतिक या बड़े आसामी के सामने मूक बनें रहने का उदाहरण कहा जा सकता है।

महावीर इंटरनेशनल ने सिंगल यूज प्लास्टिक के खिलाफ चलाया जन जागृति अभियान

बैतूल। महावीर इंटरनेशनल के तत्वाधान में पर्यावरण सुरक्षा और सिंगल यूज प्लास्टिक के उपयोग को रोकने के लिए एक व्यापक जन जागृति अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान के तहत सुभाष स्कूल और इंडियन पब्लिक स्कूल

में विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम पर संस्था की मीडिया पर्सन वीरा वंदना हेमंत पगारिया ने बताया कि कार्यक्रम के पश्चात इंडियन पब्लिक स्कूल में जागरूकता रैली का भी आयोजन किया गया, जिसमें छात्रों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।पर्यावरण डिप्टी डायरेक्टर वीरा अंशू पगारिया ने छात्रों को सिंगल यूज प्लास्टिक के उपयोग को खत्म करने और कपड़े की थैली के उपयोग के महत्व पर जोर दिया।

भैंसदेही में 20-25 बदमाशों ने आदिवासी युवक को पीटा, जयस ने दी आंदोलन की चेतावनी

बैतूल। भैंसदेही में विगत 13 अगस्त की रात को आदिवासी युवक संजू कास्देकर पर हुए जानलेवा हमले ने पूरे इलाके को हिला कर रख दिया है। संजू पर 20-25 बदमाशों ने हमला कर उसे गंभीर रूप से घायल कर दिया। जयस संगठन ने इस घटना को लेकर सख्त कार्रवाई की मांग की है और न्याय न मिलने पर बड़े आंदोलन की चेतावनी दी है। घटना से आक्रोशित संगठन ने भैंसदेही में थाना प्रभारी को ज्ञापन सौंपा और आरोपियों को जल्द गिरफ्तार करने की मांग की।

कौड़िया निवासी संजू कास्देकर, जिओ कंपनी में काम करता है, 13 जनवरी की रात करीब 12 बजे संजू पर हमला हुआ। आरोप है कि कुछ अज्ञात लोग संजू को उसके कमरे से बाहर खींचकर ले गए और फिर भैंसदेही के बाहर ले जाकर महेन्द्र बेले के साथियों ने उस पर और उसके दोस्त केशव राव वर्टी पर जानलेवा हमला किया। करीब 20-25 लोगों ने संजू कास्देकर को घेरकर लात-घूंसे और हथियार से वार किया। मारपीट के दौरान संजू को जमीन पर गिराकर बेरहमी से पीटा गया, जिससे उसके सिर से खून बहने लगा। राहगीरों की मदद से संजू को बेहोशी की हालत में भैंसदेही के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया गया, जहां डॉक्टरों ने उसकी गंभीर स्थिति देखते हुए उसके सिर पर 4 से अधिक टांके लगाए। इस घटना के बाद, बदमाशों ने धमकी दी कि यदि पुलिस में शिकायत की तो उसे जान से मार दिया जाएगा। इस पूरे मामले को लेकर जयस संगठन ने आक्रोश जताया है।

जिला स्तर पर भैंसदेही में बड़ा आंदोलन की चेतावनी

जयस के ब्लॉक अध्यक्ष सुनील मर्सकोले ने कहा कि आदिवासी युवकों पर लगातार हो रहे हमलों के खिलाफ प्रशासन को सख्त कदम उठाने चाहिए। उन्होंने मांग की कि हमलावरों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई होनी चाहिए, अन्यथा जयस संगठन जिला स्तर पर भैंसदेही में बड़ा आंदोलन करेगा। संगठन के उपाध्यक्ष धीरज उइके ने कहा कि ऐसी घटनाएं क्षेत्र का माहौल बिगाड़ रही हैं। दोषियों को तुरंत जेल भेजा जाना चाहिए ताकि भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो। पीड़ित संजू कास्देकर ने बताया कि महेन्द्र बेले और उसके साथियों ने उसे धोखे से बुलाकर जानलेवा हमला किया। उन्होंने बताया कि उन्हें जमीन पर गिराकर बेरहमी से पीटा गया और जानलेवा हथियार से सिर पर वार किया गया, जिससे वह बेहोश हो गए। इस पूरे मामले में जयस संगठन ने कार्रवाई की मांग करते हुए थाना प्रभारी भैंसदेही में ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन सौंपने के दौरान मोहनलाल वर्टी, राजू अखंडे, केशवराव वर्टी, सुनील मर्सकोले, आनंद कवडे, श्यामराव इरपाचे, गोलू इरपाचे, ईश्वर चिल्हाटे, किशोर दहिकर समेत अन्य कार्यकर्ता भी उपस्थित थे।

मोहदा और खेड़ी पुलिस ने मुक्त कराए 27 गोवंश

बैतूल जिले में पुलिस गोवंश तस्करी को रोकने खासी मशक्कत कर रही है। इसके बावजूद गोवंश तस्करी पर पूरी तरह अंकुश नहीं लग पा रहा है। ऐसे ही 2 प्रयासों को विफल करते हुए पुलिस ने 27 गोवंश की जान बचाने में सफलता हासिल की है। मुक्त कराए गोवंश को गोशाला भेजा गया है। पुलिस ने बताया कि 16 अगस्त को मोहदा थाने की पुलिस को बजरंग दल के कार्यकर्ताओं से सूचना प्राप्त हुई कि ग्राम टिगरिया के पास जंगल में कुछ लोग 18-20 गोवंश को बांधकर मारते-पीटते महाराष्ट्र कत्लखाने ले जा रहे हैं। सूचना मिलने पर तत्काल वरिष्ठ अधिकारियों को जानकारी दी गई। एसडीओपी भैसदेही भूपेंद्र सिंह मौर्य के मार्गदर्शन में टीम गठित कर मौके पर रवाना की गई। जहां बजरंग दल के कार्यकर्ता कमल आर्य, निलेश, हितेश, सुनील, शैलेश एवं मंतुलाल को सहयोग में लेकर पुलिस टीम द्वारा घटनास्थल पर दबिश दी गई। पुलिस का अंदेशा लगते ही गोवंश को हकेलने वाले लोग जंगल में अंदर भाग गए।

राइट क्लिक

सेक्युलर सिविल कोड : सेक्युलरवाद के पिच पर मोदी का इन स्विंगर दांव...

अजय बोकिल

लेखक सुबह सवेरे के वरिष्ठ संपादक हैं।
संपर्क-
9893699939
ajaybokil@gmail.com

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले की प्राचीर से अपने 11वें भाषण में इस बार सेक्युलर सिविल कोड (धर्मनिरपेक्ष नागरिक संहिता संक्षेप में कहें तो धनासं) का नया शिगूफा छेड़कर देश में समान नागरिक संहिता लागू करने के भाजपा के एजेंडे को नई धार दे दी है। उन्होंने भाषण में कहा कि आज देश को कम्युनल (साम्प्रदायिक) की जगह सेक्युलर सिविल कोड की जरूरत है। खास बात यह है कि अमूमन सेक्युलर शब्द से ही भड़कने वाली भाजपा के ही शीर्ष नेता ने अपने मुंह से अब समान नागरिक संहिता को सेक्युलर सिविल कोड का नया नाम देकर गेंद सेक्युलर पार्टियों के पाले में सरका दी है। हॉकी की शब्दावली में कहें तो यह मोदी की विपक्षी पाले में सर्कल एंट्री है। हालांकि कुछ लोग इसे मोदी का नया गेम चेंजर दांव भी बता रहे हैं। इसकी सत्यता अभी प्रमाणित होनी है, लेकिन इतना तय है कि इस दांव ने सेक्युलर पार्टियों में खलबली तो मचा दी है। वो अब इसका विरोध यह कहकर कर रही हैं कि मोदी द्वारा संविधान में उल्लेखित 'कॉमन सिविल कोड' को 'कम्युनल' बताना संविधान निर्माता बाबा साहब अंबेडकर के कॉमन सिविल कोड का अपमान है। हालांकि यह तथ्य नहीं है। बाबा साहब ने जिस संविधान के प्रारूप को तैयार किया था, उसके भाग 4 में राज्यों के नीति निदेशक तत्वों के तहत अनुच्छेद 44 में समान नागरिक संहिता का मात्र एक वाक्य में उल्लेख है- 'राज्य, भारत के समस्त राज्य क्षेत्र में नागरिकों के लिए एक समान सिविल संहिता प्राप्त कराने का प्रयास करेगा।' इससे अधिक संविधान में कुछ भी नहीं है। यानी कि समान नागरिक संहिता (यूसीसी) कैसी होगी, किन पर लागू होगी, कब तक लागू होगी आदि पर मौन है। वैसे भी नीति निदेशक तत्व सुझावात्मक हैं, आदेशात्मक नहीं। संविधान ने राज्य से यूसीसी बनाकर उसे पूरे देश में लागू करने की अपेक्षा की है। इसे अनिवार्य नहीं किया है। संविधान सभा में भी इस मुद्दे पर काफी बहस हुई थी। इसमें मुख्यतः विरोध उन मुस्लिम सदस्यों की तरफ से हुआ, जो मानते थे कि यूसीसी मुस्लिम पर्सनल लॉ के खिलाफ है। लिहाजा यह मामला 74 साल से टलता आ रहा है। भाजपा को छोड़ ज्यादातर पार्टियों की राय रही है कि जब तक देश में यूसीसी पर आम सहमति नहीं हो जाती, इसे लागू करना टाला जाए। क्योंकि सेक्युलर कहलाने वाली कोई भी पार्टी अल्पसंख्यकों और खासकर मुसलमानों की नाराजी गवारा नहीं कर सकती। इसका दूसरा अर्थ यह हो गया कि जिन पार्टियों को अल्पसंख्यहक मुसलमानों के वोट ज्यादा मिलते हैं, वो 'सेक्युलर' हैं और बहुसंख्यक वोट पाने वाली पार्टी 'कम्युनल' है। यहां अल्पसंख्यक की परिभाषा भी उन्हीं राज्यों तक सीमित मानी जाती है, जिनमें हिंदू बहुसंख्यक हैं।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एनडीए सरकार का मुखिया होते हुए भी यह साफ संकेत दे दिया है कि उनकी पार्टी भाजपा के पास केन्द्र में अपने दम पर बहुमत न होने के बाद भी वो अपने मूल एजेंडे से डिगेंगे नहीं। इसीलिए सेक्युलर सिविल कोड का नया पत्ता फेंका गया है। अपने भाषण में मोदी ने यह भी कहा कि संविधान निर्माताओं का सपना पूरा करना हमारा दायित्व है। धर्म के आधार पर समाज को बांटने वाले कानून आधुनिक समाज स्थापित नहीं कर सकते। भाजपा का मानना है कि नाम बदलने से सेक्युलर पार्टियों को यूसीसी विरोध की अपनी पुरानी रणनीति बदलनी पड़ेगी। जो खुद को रात दिन सेक्युलर कहाती नहीं थकती, वो एक सेक्युलर कोड की पैरवी की मुखाफित कैसे करेंगी? यह बात भी सही है कि यूसीसी का बड़ी विरोधी पार्टियों ने बहुत तीखा विरोध नहीं किया है। इसका कारण शायद यह भी है कि वो यूसीसी विरोध में निहित वोटों की लामबंदी का सही अंदाजा नही लगा पाई हैं। मुस्लिम संगठन इसका पहले भी यह कहकर विरोध यह कहकर कर रहे थे कि शरीया कानून को बदला नहीं जा सकता। मुसलमान इसकी जगह कोई दूसरा कानून कतई स्वीकार नहीं करेंगे। इससे उनकी धार्मिक स्वतंत्रता और अस्मिता का हनन होगा। यूसीसी विरोधियों का तर्क है कि चूंकि संविधान अनुच्छेद 25 के तहत सभी नागरिकों को लोगों को अपने-अपने धर्म के मुताबिक जीने की आजादी देता है। ऐसे में यूसीसी लागू करने का अर्थ इस आजादी को नकारने जैसा है। जबकि यूसीसी से तात्पर्य देश में रहने वाले हर धर्म, जाति, संप्रदाय और वर्ग के लिए हर मुद्दे पर एक समान नियम-कानून लागू करना है। जिसमें सभी धर्म वालों के लिए विरासत, शादी, तलाक और गोद लेने के नियम एक ही होंगे।

वैसे यूसीसी अगर देश भर में लागू किया जाएगा तो उसका स्वरूप कैसा होगा, यह अभी स्पष्ट नहीं है। लेकिन राष्ट्रीय विधि आयोग ने इसे लागू करने की सिफारिश की है। इसका एक प्रारूप उत्तराखंड में सामने आया है। साथ ही गोवा में यह कानून बरसों से लागू है, जहां करीब सवा लाख मुसलमान रहते हैं। इसी तरह उत्तराखंड अकेला राज्य है, जिसने इस साल मार्च में यूसीसी लागू कर दिया है। इस राज्य में करीब 14 लाख मुसलमान रहते हैं। उनकी ओर से बीते चार माह में कोई बड़ा विरोध दर्ज कराया गया हो अथवा इससे उनके शरीयत में कोई दखल हुआ हो, यह अभी सामने नहीं आया है। गौरतलब है कि आज देश में अलग-अलग धर्मों खासकर हिन्दुओं और मुसलमानों के लिए सामाजिक मुद्दों पर अलग-अलग कानून हैं। अतीत में देखें तो साल 1941 में हिन्दू कानून संहिता बनाने के लिए बीएन राव समिति बनी थी। इस समिति की सिफारिश पर 1956 में हिन्दुओं, बौद्धों, जैनियों और सिखों के उत्तराधिकार से जुड़े मामलों को सुलझाने के लिए हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम लागू हुआ। मुस्लिम, ईसाई और पारसियों के लिए अलग कानून रखे गए थे। 1955 में हिन्दू विवाह अधिनियम बना। यानी कि जो किसी भी रूप या विकास में हिन्दू है, जिनमें वीरशैव, लिंगायत, ब्रह्म, प्रार्थना या आर्य समाज के अनुयायी हैं, उन पर हिन्दू विवाह अधिनियम लागू है। इस कानून की धारा-2 (बी) के अनुसार यह धर्म से बौद्ध, जैन और सिख है लोगों पर भी लागू है। मुस्लिम, क्रिश्चियन, पारसी और यहूदियों के अपने-अपने कानून हैं। वहीं, भारतीय मुसलमान मुस्लिम पर्सनल लॉ (शरीयत) अप्लीकेशन एक्ट 1937 को शरीयत कानून मानते हैं। यह मुसलमानों के बीच विवाह, गोद लेने, विरासत, तलाक और उत्तराधिकार जैसे व्यक्तिगत मामलों को नियंत्रित करने के लिए इस्लामी कानून को मान्यता देता है।

प्रधानमंत्री शायद यह मान रहे हैं कि यूसीसी को लेकर अब तक का विरोध मुख्यतः इसे जाने बगैर आशंका आधारित ज्यादा है। दूसरे, यूसीसी में समान (कॉमन) शब्द का अर्थ यह लिया जा रहा है कि सब धान बाइस पसेरी होगा तो यह गलत है। किसी भी धर्म समुदाय अथवा वर्ग की अस्मिता केवल उनकी परंपरा अथवा पहनावे से तय नहीं होती। बल्कि समाज में उसकी भूमिका, प्रभाव और वर्चस्व से ज्यादा तय होती है। यह समझना मुश्किल है कि जब देश के दो राज्यों के दस लाख मुसलमानों के शरीयत पर कोई विपरीत असर नहीं हुआ तो बाकी प्रदेशों के लगभग बीस करोड़ मुसलमानों का पर्सनल लॉ इससे कैसे प्रभावित होगा? या फिर यूसीसी का विरोध सिर्फ इसलिए किया जा रहा है कि यह भाजपा और प्रकारांतर से आरएसएस के कोर एजेंडे में है?

लगता है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कॉमन सिविल कोड को सेक्युलर बताकर विपक्षी विकेट पर इस बार इन स्विंगर गेंद फेंकी है। अगर उन्हें शब्द पर ही आपत्ति है तो भई 'सेक्युलर' का विरोध करके दिखाएं। विपक्षी दल इस नए दांव की काट खोजने में लगे हैं। वो भाजपा और मोदी के खिलाफ उसी दांव को नई छौंक के साथ चलने की कोशिश कर रहे हैं, जिसके जरिए भाजपा कांग्रेस पर यह पलटवार करती रही है कि उसने बाबा साहब के संविधान में बदलाव किया और अब खुद संविधान को बचाने की दुहाई दे रही है। अलबत्ता विपक्षी इस बात से हैरान जरूर हैं कि पिछले चुनाव में खुलकर 'कम्युनल' संदेश देने वाले पीएम अचानक यूसीसी के मामले में धर्मनिरपेक्षता के पैरोकार कैसे हो गए? यह सचमुच कोई नीतिगत बदलाव है या फिर चुनाव जीतने का फिर एक नया शोशा भर है? वैसे भाजपा संविधान के मुद्दे पर लोकसभा चुनाव के बाद ज्यादा सतर्क है। महाराष्ट्र में आगामी विस चुनाव के मद्देनजर राज्य में गांव गांव में भाजपा कार्यकर्ता संविधान की प्रतियां बांटकर यह जताने की कोशिश कर रहे हैं कि भाजपा बाबा साहब के संविधान के प्रति पूरी तरह से प्रतिबद्ध है। इसे बदलने का उसका कोई इरादा नहीं है। भाजपा को डर है कि विपक्षी दल लोकसभा चुनाव की तरह फिर इस मुद्दे पर नया नरेटिव खड़ा करके उसे बोल्ड न कर दें। हालांकि इस बात की राजनीतिक टेस्टिंग अभी होनी है कि समान नागरिक संहिता अथवा सेक्युलर नागरिक संहिता में वोटों की गोलबंदी की ताकत कितनी है। पक्ष और पक्ष दोनों को ही इससे बहुत ज्यादा फायदा अगर नहीं दिखा तो हो सकता है कि यह मुद्दा फिर ठंडे बस्ते में चला जाए या फिर रस्मी विरोध के बाद यह कानून संसद में पारित भी हो जाए। लेकिन यह इतना आसान भी नहीं है। क्योंकि केन्द्र में सत्तारूढ़ एनडीए में इसको लेकर कितनी सहमति है, यह भी अभी साफ होना है।

यूनिसेफ ने सराहा मुख्यमंत्री डॉ. यादव की पहल को

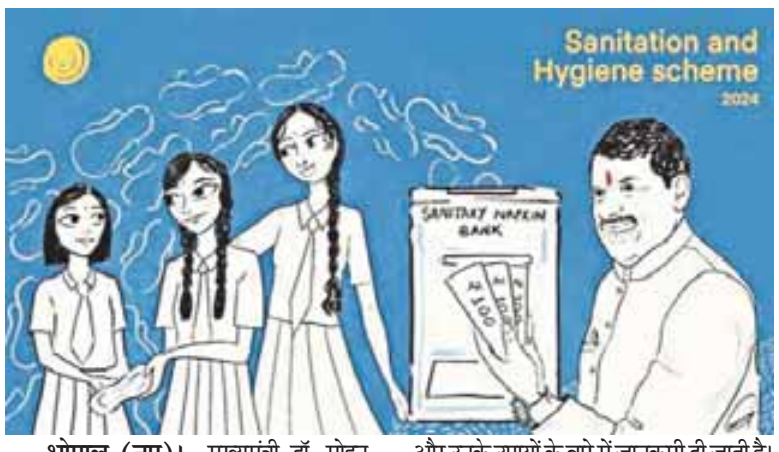

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा मध्यप्रदेश में किशोरियों के बेहतर स्वास्थ्य के लिये किये जा रहे प्रयासों को यूनिसेफ ने सराहा है। यूनिसेफ ने अपने एक्स पर किये गये पोस्ट में मुख्यमंत्री द्वारा किशोरियों के बेहतर स्वास्थ्य के लिये सेनिटेशन एवं हाईजीन योजना को अनूठी पहल बताकर प्रशंसा की है।

उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने 11 अगस्त को भोपाल में आयोजित छात्राओं के संवाद एवं सम्मान कार्यक्रम में समग्र शिक्षा के अंतर्गत सेनिटेशन एवं हाईजीन योजना में 19 लाख छात्राओं के खाते में 57 करोड़ 18 लाख रुपये की राशि अंतरित की थी।

सेनिटेशन एवं हाईजीन योजना में कक्षा 7 से 12 तक की छात्राओं को सेनेटरी नेपकिन के लिए राशि अंतरित की गई है। योजना में विद्यालयों और महाविद्यालय की छात्राओं को स्वच्छता के महत्व और उनके उपायों के बारे में जानकारी दी जाती है। यह योजना स्कूल शिक्षा विभाग के समग्र शिक्षा अभियान के तहत संचालित हो रही है।

वंदे भारत एक्सप्रेस के खाने में निकला कीड़ा

यात्री बोला-शिकायत के बावजूद रेलवे ने ध्यान नहीं दिया ; अफसर ने कहा-पैकेट बदलकर दिया

भोपाल (नप्र)। वंदे भारत एक्सप्रेस में यात्री के खाने में कीड़ा निकला है। इस पर यात्री ने हंगामा कर दिया। आरोप है कि उसे दूसरा खाना भी नहीं दिया गया। ट्रेन में सफर कर रहे यात्रियों का कहना है कि वंदे भारत में लगातार ऐसी घटनाएं बढ़ रही हैं। रेलवे को इसकी जिम्मेदारी लेनी होगी। वंदे भारत एक्सप्रेस भोपाल के रानी कमलापति स्टेशन से हजरत निजामुद्दीन जा रही थी। झांसी में सुबह करीब 8 बजे यात्रियों को ब्रेकफास्ट सर्व किया गया। यात्री अभय सिंह सेंगर के फूड पैकेट में उपमा के ऊपर कीड़ा था। यात्री ने इसका वीडियो बना लिया। उन्होंने बताया, मैं वंदे भारत में ट्रैवल कर रहा था। कीड़ा निकलने पर स्टाफ को बताया। उन्होंने खाना वापस ले लिया। मैं 9:40 बजे ग्वालियर उतर गया, उन्होंने तब तक मुझे दूसरा फूड प्रोवाइड नहीं कराया था। वहीं, आईआरसीटीसी के रीजनल मैनेजर आर भट्टाचार्य का कहना है कि यात्री को दूसरा फूड पैकेट दिया गया है। इस मामले में जांच करके निश्चित ही वेंडर पर सख्त कार्रवाई की जाएगी। ताकि इस तरह की घटनाएं दोबारा न हों।

यात्री बोला- रेलवे का रवैया खराब

यात्री अभय सिंह ने कहा, रेलवे का रवैया भी इस मामले में बहुत खराब था। अधिकारियों ने किसी प्रकार की कोई शिकायत मुझसे नहीं ली। मैंने ही जोर देकर उनके शिकायत रजिस्टर में लिखा कि ऐसी लापरवाही लगातार सामने आ रही हैं, रेलवे वेंडर चेंज क्यों नहीं करता। अन्य यात्रियों ने टीटी से कहा कि रेल मंत्री और अधिकारियों को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव से मिले पद्मभूषण श्री एम.

भोपाल(नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से आज शाम मुख्यमंत्री निवास में पद्मभूषण श्री एम. (मुमताज अली खान) ने सौजन्य भेंट की। श्री एम. ने मध्यप्रदेश में सांस्कृतिक और अन्य क्षेत्रों में संचालित गतिविधियों की सराहना की। द सत्संग फाउंडेशन के संस्थापक श्री एम. भारत भवन भोपाल में आज प्रारंभ हुए दो दिवसीय एकात्म पर्व में भागीदारी के लिए पधारे हैं। पद्मभूषण श्री एम. का आज शक्ति एवं अद्वैत वेदांत पर सारस्वत प्रबोधन भी हुआ। मुख्यमंत्री डॉ. यादव से भेंट के दौरान श्री एम. ने फाउंडेशन के विभिन्न प्रकल्पों की जानकारी भी दी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने श्री एम. के आगमन पर उन्हें पुष्प-गुच्छ भेंट कर अंगवस्त्रम से सम्मानित किया।

पद्मभूषण से सम्मानित श्री एम. प्राचीन नाथ परम्परा के आध्यात्मिक आचार्य, समाज सुधारक, शिक्षाविद, लेखक एवं वैश्विक वक्ता हैं। अपने गुरु महेश्वरनाथ के साथ हिमाचल में दीर्घ काल तक भ्रमण के उपरांत गुरू की आज्ञा के अनुसार विभिन्न ग्रंथों की शिक्षा ग्रहण की। वर्ष 2015-16 में ''वॉक ऑफ होप'' का नेतृत्व किया। कन्या कुमारी से कश्मीर तक यात्रा कर आध्यात्मिक साधकों के सानिध्य में रहे। उन्हें वर्ष 2020 में भारत सरकार द्वारा पद्मभूषण से सम्मानित किया गया।

कही-सुनी

रवि भोई

(लेखक पत्रिका समवेत सृजन के प्रबंध संपादक और स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

लोक निर्माण विभाग में एसई से सीई के प्रमोशन में खेला

वैसे तो लोक निर्माण विभाग सड़कों के निर्माण और उसकी गुणवत्ता को लेकर चर्चा में रहता है, पर अबकी बार विभाग वरिष्ठ अफसरों के प्रमोशन को लेकर सुर्खियों में है,वहीं सीबीआई के राडार वाले राज्य लोक सेवा आयोग पर भी उंगुलियां उठने लगी हैं,क्योंकि पीडब्ल्यूडी के सीनियर अफसरों को पदोन्नति पीएससी मेंबर की अध्यक्षता वाली समिति ने दी है। कहते हैं 16 अगस्त 24 को पीएससी मेंबर संतकुमार नेताम की अध्यक्षता वाली समिति ने लोक निर्माण विभाग के आठ अधीक्षण अभियंताओं (सिविल) को मुख्य अभियंता के पद पर प्रमोशन को हरी झंडी दी। कायदे से 2020 में अधीक्षण अभियंता बने अफसरों को प्रमोशन 2025 में मिलना था, लेकिन विभाग में मुख्य अभियंताओं की कमी के चलते एक साल पहले ही उन्हें प्रमोशन मिल गया। इन अफसरों के प्रमोशन के लिए विभाग ने कैबिनेट से विशेष अनुमति ली थी। याने एक साल की छूट ली थी। लोक निर्माण विभाग में मुख्य अभियंता के 11 पद हैं, जिनमें से तीन ही भरे हैं। आठ पद रिक्त होने के कारण विभाग को कामकाज प्रभावित होने का आधार मिल गया। प्रमोशन मेरिट कम सीनियरिटी के आधार पर किया जाना था और इसके लिए पदोन्नत होने वाले अफसरों के पांच साल की गोपनीय चरित्रावली और अचल संपत्ति देखी जानी थी। राज्य लोक सेवा आयोग ने विभाग को प्रमोशन के नियम -शर्तों की चिट्ठी भी जारी की। पदोन्नति नियम 2003 में साफ़-साफ़ लिखा गया है कि किसी अफसर के प्रमोशन के लिए उसके पांच साल का सीआर देखा जाना चाहिए। कहते हैं विभाग ने कुछ अफसरों को लाभ देने के लिए पांच साल की जगह चार साल की गोपनीय चरित्रावली देखने का फार्मूला अपना लिया। इस फार्मूले के कारण कुछ अफसर प्रमोशन की सूची में आगे आ गए, तो कुछ प्रमोशन की कतार में रहने के बाद भी झटका खा गए। याने 2019 से 2023 की जगह 2020 से 2023 तक का ही अधीक्षण अभियंता के रूप में उनकी गोपनीय चरित्रावली को देखी गई। इस फार्मूले के कारण जिस अफसर का सीआर 2019 में 'क प्लस' था, उसे नुकसान हो गया और जिसका सीआर 'क' था उसे फायदा हो गया। बताते हैं विभाग में सचिव रहे एक अफसर ने एक ही तारीख में विभाग के अलग-अलग ईएनसी का अफसरों के बारे में मूल्यांकन का आंकलन कर अलग-अलग श्रेणी दिया। विभाग के पुराने सचिव द्वारा सीआर लिखे जाने के आठ दिन के भीतर ही विभागीय पदोन्नति समिति की बैठक पर भी सवाल उठ रहे हैं। कहते हैं अधीक्षण अभियंता से मुख्य अभियंता के प्रमोशन के मुद्दे पर एक अफसर छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट गए हुए हैं। 9 सितंबर को कोर्ट में सुनवाई होनी है,पर उसके पहले विभाग ने डीपीसी करवा दी। कहा जा रहा है कि विभाग ने भले हाईकोर्ट के डायरेक्शन का इंतजार नहीं किया, पर दो वरिष्ठ अधीक्षण अभियंता के रिटायरमेंट का इंतजार किया। एक अफसर 30 जून को रिटायर हो गए तो एक अफसर 31 जुलाई को। खबर है कि एक अफसर अधीक्षण अभियंता बनने के साथ ही मुख्य अभियंता की कुर्सी संभाले हुए हैं। लोक निर्माण विभाग में अफसरों के प्रमोशन के लिए सरकार से छूट का यह पहला मामला नहीं है। विभाग ने पहले भी 2007 में कार्यपालन अभियंता से अधीक्षण अभियंता के प्रमोशन में एक साल की और 2010 में अधीक्षण अभियंता से मुख्य अभियंता के प्रमोशन में दो साल की छूट ली थी। कहते हैं इस छूट का लाभ लेकर ऊँची कुर्सी पाने वालों में वर्तमान प्रमुख अभियंता कमलेश कुमार पीपरी भी शामिल हैं। इस बार छूट के साथ फार्मूला बदलने और कुछ अफसरों के सिर में सेहरा बांधने की कोशिश ने विभाग को कटघरे में खड़ा कर दिया है। कहते हैं वंचित लोग जल्द ही हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाने वाले हैं।

भाजपा नेता बनेंगे मुख्यमंत्री के सलाहकार

खबर है कि भाजपा के दो नेता जल्द ही छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के सलाहकार बनाए जाएंगे। बताते हैं ये मुख्यमंत्री के राजनीतिक सलाहकार होंगे। अभी मुख्यमंत्री के मीडिया सलाहकार तो हैं, पर कोई राजनीतिक सलाहकार नहीं हैं। चर्चा है कि राजनीतिक सलाहकार की कतार में खड़े एक राजनेता पूर्व विधायक हैं तो एक नेता अभी प्रदेश संगठन में पदाधिकारी हैं। मुख्यमंत्री के राजनीतिक सलाहकार बनने जा रहे पूर्व विधायक विधानसभा चुनाव में रणनीतिकार थे। पार्टी ने उन्हें 2023 का विधानसभा चुनाव लड़ाया, पर वे हार गए। अब उनके अनुभव का लाभ लेने के लिए राजनीतिक सलाहकार की भूमिका में रखने की बात चल रही है। मुख्यमंत्री के राजनीतिक सलाहकार बनने वाले दूसरे नेता काफी सालों से संगठन से जुड़े हैं। डॉ रमन सिंह के मुख्यमंत्रीत्वकाल में ये नेता एक निगम-मंडल के अध्यक्ष थे। 2023 के विधानसभा चुनाव में उन्होंने टिकट की मांग की थी, लेकिन मिलीझ नहीं। ख़बरों के मुताबिक़ अब उनके अनुभव का लाभ सरकार में सलाहकार के रूप में लिया जाएगा। दोनों नेताओं को संगठन का करीबी माना जाता है।

भूपेश बघेल के केंद्रीय संगठन में जाने की चर्चा

छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी में जाने की चर्चा है। कहा जा रहा है कि भूपेश बघेल को केंद्रीय संगठन में महासचिव बनाकर किसी राज्य का प्रभारी बनाया जा सकता है। भूपेश बघेल को सरकार और संगठन दोनों का अनुभव होने के कारण हाईकमान उन्हें दिल्ली की राजनीति में ले जाने के मूड में है। भूपेश बघेल को प्रदेश की राजनीति से दूर करने के साथ कांग्रेस की छत्तीसगढ़ इकाई में बदलाव की खबर है। माना जा रहा है कि प्रदेश संगठन का चेहरा बदलने के साथ कई महासचिव और सचिव भी बदलेंगे। वैसे कांग्रेस संगठन को फिलहाल मोइली कमेटी की रिपोर्ट आने का इंतजार है, पर रिपोर्ट के आधार पर किसी के खिलाफ कार्रवाई की गुंजाइश कम ही आंका जा रहा है, क्योंकि मोइली कमेटी के सामने छोटे नेताओं और कार्यकर्ताओं ने कुछ बड़े नेताओं की नामजद शिकायत की है।

त्रिमूर्ति के बीच घिरे मंत्री जी

आजकल राज्य के एक मंत्री जी के त्रिमूर्ति के बीच घिरे होने की बड़ी चर्चा है। पहली बार मंत्री की कुर्सी पर विराजे माननीय के पास तीन विभाग हैं तो त्रिमूर्ति का होना लाजिमी है। कहते हैं त्रिमूर्ति लोगों का मंत्री जी से पुराना नाता है, भले ही मंत्री जी के बुरे दिन में वे साथ नजर नहीं आते थे,पर मंत्री बनने के बाद उनके इर्द-गिर्द ही दिखते हैं। कहते हैं एक मूर्ति तो मंत्री जी के साथ पढ़े-लिखे हैं। चर्चा है त्रिमूर्तियों के कारण मंत्री जी के दुःख के साथी दूर भागने लगे हैं, वहीं त्रिमूर्तियों से विभाग के अफसर भी दुखी बताए जाते हैं क्योंकि त्रिमूर्तियों को पहले से सरकारी कामकाज का अनुभव नहीं है। वे अपनी मर्जी से कुछ भी कराना चाहते हैं,वह विभाग के अफसरों को नहीं भा रहा है।

दक्षिण सीट पर चलेगी बृजमोहन की ही

उम्मीद की जा रही थी कि रायपुर दक्षिण सीट में उपचुनाव अक्टूबर में हो जाएगा, लेकिन जम्मू - कश्मीर और हरियाणा विधानसभा चुनाव के साथ यहां भी सितंबर-अक्टूबर में चुनाव की घोषणा नहीं की गई। अब आंकलन है कि महाराष्ट्र और झारखंड विधानसभा चुनाव के साथ इस सीट पर चुनाव हो जाएगा। चुनाव कभी भी हो, एक बात तो साफ़ है कि प्रत्याशी बृजमोहन अग्रवाल की पसंद का होगा। सांसद बृजमोहन अग्रवाल यहां से 1990 से लगातार करीब 35 साल तक विधायक रहे हैं और कार्यकर्ताओं के बीच उनकी अपनी अलग पहचान है, ऐसे में उपचुनाव में भाजपा प्रत्याशी की जीत में बड़ा योगदान रहने वाला है। माना जा रहा है कि हाईकमान उनको नजरअंदाज कर यहां का टिकट फ़ाइनल नहीं करेगी। इस कारण दावेदारों में अभी उनके करीबी लोगों का नाम आगे है। दावेदारों में फिलहाल पूर्व सांसद सुनील सोनी का नाम सबसे ऊपर है। इसके अलावा उनके निज सहायक मनोज शुक्ला और पारिवारिक सदस्यों का नाम भी चर्चा में है। भाजपा ने सांसद रहते रेणुका सिंह, गोमती साय और विजय बघेल को 2023 का विधानसभा चुनाव लड़ाया था। पार्टी ने 2024 के लोकसभा चुनाव में सुनील सोनी का टिकट काटकर बृजमोहन अग्रवाल को उम्मीदवार बनाया। इस कारण सुनील सोनी की दावेदारी को मजबूत माना जा रहा है।